नवग्रह एवं नक्षत्र शांति

गण्डमूल शांति एवं गोमुखप्रसव विधान सहितम्

लेखक एवं प्रकाशक :
पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

मयूरेश प्रकाशन मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति

(गण्डमूलशान्ति एवं गोमुखप्रसव विधान सहितम्)

- इस पुस्तक में बालक के गर्भाधानसंस्कार से चौलसंस्कार तक के सभी कर्म प्रयोग आर्षविधान युक्त दिये गये है।
- गण्डमूल नक्षत्रचक्र एवं उनका फल दिया गया है।
- नक्षत्रगण्डान्त, तिथिलग्नगण्डान्त, कृष्णचतुर्दशी तथा सिनीवालीकूहूजनन, व्यतिपातादि योग शान्ति विधान सभी सविधि उपलब्ध है।
- एकनक्षत्रजनन, त्रिखल एवं यमलजनन, अशुभदन्तोत्पत्ति दोष निवारण प्रयोग सविधि दिये गये है।
- गोमुखप्रसव शान्ति प्रयोग विस्तृत सरल एवं सविधि है।
- मूलादि सभी गण्डनक्षत्रों के भद्रपीठ एवं आवाहन पूजा विधान विस्तृत है।
- शान्तिविधान के आवश्यक सूक्त पुस्तक के उत्तरार्ध भाग में दिये गये है।
- नवग्रहों के वैदिक एवं तांत्रिक मंत्रो के न्यास, ध्यानादि दिये गये है
- प्रत्येक ग्रह की यंत्रपूजा एवं शान्ति प्रयोग दिये गये है।
- प्रत्येक ग्रह के कवच, पञ्चविंशतिनामावलि स्तोत्र एवं १०८ नामावलि मंत्र दिये गये है।
- कालमृत्युज्ञानादि प्रयोग एवं प्रत्येक ग्रह के विविध कामना स्तोत्र दिये गये हैं।

पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

मयूरेश प्रकाशन

मदनगंज—किशनगढ़, जिला—अजमेर (राज.)

फोन — 01463—244198, 9829144050

प्रकाशक :-
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला - अजमेर
पिन : 305801 (राज.)
✆ : 01463-244198,
09829144050
09214512223

प्रथम संस्करण : -
१३ फरवरी २००२
द्वितीय संस्करण : -
अप्रैल २००७
तृतीय संस्करण : -
२० सितम्बर २००९

मूल्य :- १००/-
(सौ रुपये मात्र)

लेजर टाईप सेटिंग :
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
✆ : 09214511897

✤ मुख्य प्राप्ति स्थल ✤

१. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
२. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
३. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
४. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
५. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर ✆ 2549712
६. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
७. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
८. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
९. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली ✆ 23253604
१०. सरदार करमसिह, हरिद्वार ✆ 225619
११. सरदार सोहनसिंह, इन्दौर ✆ 2532344
१२. कुल्लुका ज्योतिष केन्द्र, उज्जैन ✆ 4013150
१३. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
१५. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
१५. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
१६. केशव पुस्तकालय, मथुरा ✆ 2401130
१७. गोवर्धन प्रकाशन मथुरा ✆ 2415311
१८. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया

कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, चित्तोड, सीकर, हैदराबाद अहमदाबाद, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, रायपुर, ओंकारेश्वर, बड़ौदा, लखनऊ, वाराणसी, झाँसी, विलासपुर, वैद्यनाथ, कलकत्ता, अहमदाबाद, गोरखपुर, गया, रायपुर, C.P. Tank बम्बई।

विषय सूची

॥ जातकस्य विविध संस्काराः ॥

॥ गण्डान्त विषय प्रकरणम् ॥

॥ गण्डनक्षत्रादि शान्ति प्रयोगः ॥

॥ सूर्य तन्त्रम् ॥

॥ चन्द्रतन्त्रम् ॥

॥ भौमतन्त्रम् ॥

॥ राहु तंत्रम् ॥

॥ केतु तंत्रम् ॥

॥ नवग्रहाः ॥

॥ विभिन्न शांति पाठ एवं सूक्ताध्यायः ॥

॥ निवेदन ॥

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगंधलुब्ध - मधुपव्यालोल - गण्डस्थलम् ।
दन्ताघात-विदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥
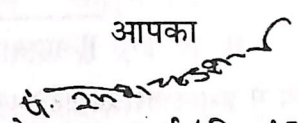
गर्भकाल से नवग्रहों का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ने लगता है जो जीवन पर्यन्त बना रहता है। ग्रह जन्मकुण्डली के माध्यम से पूर्व संचित संस्कारों का एवं मृत्यु उपरान्त मोक्षादि अवस्था तक का भान कराते है। हर व्यक्ति के चारों ओर एक आभामण्डल होता है जिसमें ग्रहरश्मियों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है। उनका शक्ति केन्द्र हमारे संस्कारों को प्रभावित करता है एवं हमारे सुख दुःख का कारणभूत होता है।

ग्रहमहादशा–गोचर स्थिति एवं फलित ज्योतिष से प्रारब्ध के अवरोधों का ज्ञान हो सकता है। अतः जहां कठिन समय में व्यक्ति हीनभावना से ग्रसित होकर अपने आपको भाग्यहीन समझता है, वहीं नवग्रह साधना, यंत्रपूजन, व यंत्रधारण, दानशान्ति प्रयोग द्वारा एवं रत्नधारण व तांत्रिक प्रयोगों से अपने भविष्य को उज्ज्वल कर सकता है।

अतः अथक प्रयत्न करके सभी ग्रहों के वैदिक व तांत्रिक मंत्रविधान, ऋष्यादिन्यास सहित यंत्रपूजा, कवच, स्तोत्र, १०८ नमावलि, शान्तिविधान एवं बहुत से स्तोत्र दिये गये है, नवग्रह तंत्र के रूप में यह एक विशेष कृति है। इतना संग्रह एक साथ मिलना अति कठिन है।

गर्भाधान से लेकर सीमान्त, षष्ठी पूजन, नामकरण, चौलसंस्कार, के आर्ष सिद्धान्तों को आज हम भूल रहे है। मूलादि गण्डान्त शांति पक्ष में गोमुखप्रसव शान्ति तथा मूलादि शान्ति में नक्षत्र्यधिपति व अन्य देवों के भद्रपीठ विषय में आवाहन तथा शान्ति अभिषेकादि के सूक्तों से भी बहुजन अनभिज्ञ व भ्रमित है। अतः इस पुस्तक में इस विषय हेतु आवश्यक पूजा विधान, आर्षविधि सहित एवं आवश्यक शान्तिसूक्त दिये गये है। बालक के सभी संस्कारों का विधान एवं नवग्रहों सम्बंधी उपयुक्त विशेष साहित्य सामग्री सहित यह पुस्तक सभी विद्वानों को समर्पित है।

आपका

[पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र']

प्रकाशक एवं लेखक

॥ मूलादि शान्तिप्रयोगः ॥
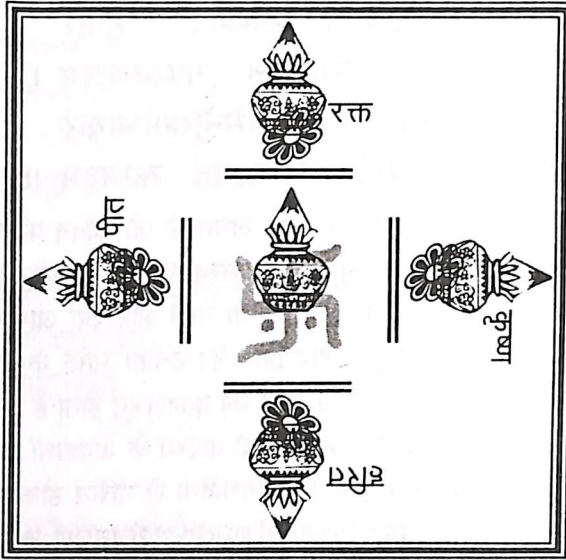
॥ प्रधानदेवता मण्डलम् ॥

मध्य में प्रधानदेवका एवं चार अन्य देवोंका पूर्वादि कलशों में आवाहन करें।
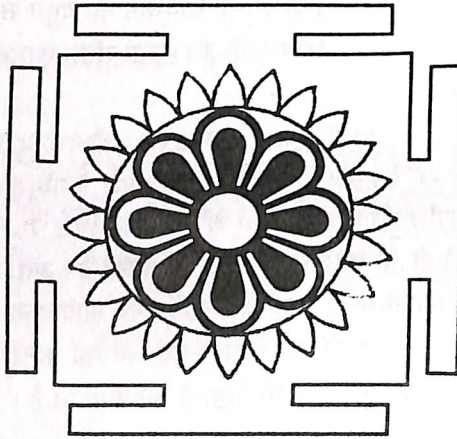
॥ नक्षत्राधिपति मण्डलम् ॥

मध्य में प्रधान नक्षत्राधिपति एवं उसके आगे–पीछे के नक्षत्राधिपति का तथा २४ दल में शेष २४ नक्षत्राधिपतियों का आवाहन करें।

यदि २ अलग–अलग पीठ नहीं बनाते हैं तो इसी पीठ पर प्रधान की पूजा एवं पूर्वादि दिशाओं के चारों कलश रख कर आवाहन करें।

॥ जातकस्य विविध संस्काराः ॥

॥ नान्दीश्राद्ध की आवश्यकता ॥

कन्या पुत्र विवाहेषु प्रवेशं नववेश्मनः ।
नामकर्मणि बालानां चूड़ाकर्मादिके तथा ॥
सीमन्तोन्नयने चैव पुत्रादिमुख दर्शने ।
नान्दीगणान् पितृगणान् पूजयेत्प्रयतो ग्रहैः ॥

गर्भधान, पुंसवन, विवाह, पुत्रजन्म इत्यादि संस्कारों में नान्दीश्राद्ध का विधान है। परन्तु आजकल इन संस्कारों का लोप हो गया है।

पितृणां रूपमास्थाय देवो ह्यन्नं समश्नुते ।
तत्मात्सव्येन दातव्यं वृद्धि श्राद्धेषु दातृभिः ॥

वृद्धि श्राद्धों में देवता पितर रूप में अन्न ग्रहण करते है। इसलिये यह कर्म सव्य होकर करें।

दूर्वावदरैर्मिश्रानपि दधिपिण्डान्मुदायतः ।
नान्दीमुखेभ्यः पितृभ्यः दद्याद्वै श्रद्धयायुतः ॥

दूर्वा, बेर, फल के साथ दही के पिण्डों को प्रसन्नता और श्रद्धा के साथ नान्दीमुख पितरो को देना चाहिये।

सचैलस्नान-

जाते पुत्रे पितास्नानं सचैलं कर्तुमर्हति ।
कुर्यान्नैमित्तिके स्नानं शीताद्भिः काम्य एव च ॥
(वसिष्ठ) श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैल स्नानमाचरेत् ।
उत्तराभिमुखो भूत्वा नद्यां वा देवखातके ॥
जातकर्म च कर्तव्यं तस्मिञ्जाते मुहुर्त्तके ।
दानदेयं च विप्रेभ्यो यदीच्छेदात्मनः शिवम् ॥

दाने विशेषः- व्यासजी ने कहा है कि रात्रि समय का दान निष्फल जाता है। परन्तु नित्य, नैमित्तिक और काम्य ये तीन तरह के दान है। नैमित्तिक दान रात्रि में करने पर दोष नहीं होता है।

यथा-

ग्रहणोद्वाहसंक्रातौ यात्रादौ प्रसवेषु च।
दानं नैमित्तिकं ज्ञेयं रात्रावपि न दुष्यति ॥

॥ गर्भाधान संस्कार ॥

प्रथम गर्भ के समय गर्भाधान पुंसवन व सीमान्त पूजन करना चाहियें।

गर्भाधान सीमन्तोन्नयने तु स्त्री संस्कारत्वात्प्रतिगर्भ-नावर्तेते किन्तु प्रथमगर्भे एष कार्ये ।

गर्भाधान हेतु ऋतुकाल के ६ दिन छोड़कर शुभ दिन में संस्कार करें, कर्त्ता पूजन हेतु संकल्प करें।

सङ्कल्प-**देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्या मम भार्यायाः प्रथम गर्भातिशय द्वारा जनिष्यमाण सर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भववैनो- निबर्हणार्थं गर्भाधान संस्काराख्यं कर्माहं करिष्ये तत् अंगत्वेन गणपति पूजनं स्वस्ति पुण्याह वाचनं मातृका पूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये।**

कर्म के अभाव में सूर्य दर्शन व गायत्री मंत्र का जप करें।

ॐ आदित्यङ्गर्भ-पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्यप्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धिहरसामाभिम ꣳ स्थाः शतायु पङ्कृणुहिचाय मानः। इस मंत्र से सूर्य नमस्कार करें।

रात्रि समय पति पत्नि सुसंस्कारों को धारण करें शयनागार में प्रवेश करें। भर्त्ता स्त्री के नाभि प्रदेश पर हाथ रखकर ब्रह्मा व गायत्री से सृष्टि हेतु गर्भाधान का आशीर्वाद प्राप्त करें।

ॐ पूषाभगः सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतुललामगुम्।
विष्णुर्योनि निङ्कल्पयतु त्वष्टारूपाणिपिः ठ शतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भन्दधातु ते ॥

गर्भंधेहि सिनीवालि गर्भंधेहि पृथुष्टके ।
गर्भन्तेऽअश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥

तेजो वैश्वानरो दद्यात्॥ अथ ब्रह्मानुमंत्रयते । ब्रह्मागर्भंदधातुते ।

अथाभिगमन्- भर्ता पत्नि से अभिगमन करें।

गायत्रेणत्वाच्छंद सामन्थामित्रैष्टुभेन त्वाच्छन्द सामन्थामिजागतेन त्वाच्छन्द सामन्थापि ॥

रेतोमूत्रं विजहातियोनिं प्रविशादीन्द्रियम्। गर्भोजरायुणावृत उल्बञ्जहाति जन्मना। ऋतेन सत्यं इन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्ध स इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्-पयोमृतम्मधु॥

अभिगमनांतर भार्या के दक्षिणस्कंध पर हाथ रखकर पुनः अपने हृदय का आलंभन करें।

ॐ यत्ते सुसीमेहृदयन्दिवि चन्द्रमसिश्रितम् ।
वेदाहन्तन्मान्तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतञ्जीवेम
शरदः शतः शृणुयाम शरदः शतम् ॥

पश्चात् प्रातःकाल शुचि होकर ब्राह्मण भोजन करायें। मातृगणों का विसर्जन करें। कर्मफल को भगवान नारायण को अर्पित करें। यथा **(तेन श्रीकर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम्)।**

आजकल इस संस्कार का लोप हो गया है अतः गर्भ रक्षा हेतु गर्भाधान पश्चात् शुभ दिन १०८ गायत्री मंत्र व महामृत्युञ्जय की आहुतियाँ देनी चाहियें।

॥ प्रतिमास पूजनम् ॥

गर्भ रक्षा हेतु प्रतिमास अलग-अलग देवताओं के पूजन हेतु कहा गया है-

मासे मासे पूजये दशवे मास प्रसूतवे।

गर्भाधान से दशवें मास तक प्रत्येक माह के स्वामि इस प्रकार है।

शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध आधान लग्नेश, चन्द्र तथा सूर्य होते है। अतः इनका पूजन प्रतिमाह करें। आधान लग्न अर्थात् गर्भधारण काल का लग्नेश। इसका अनुमान पूर्ण होने पर गर्भिणी की जन्म कुण्डली के पंचम भाव के स्वामी का पूजन किया जा सकता है।

॥ पुंसवन संस्कार ॥

संस्कार रत्नमाला में लिखा है कि ये संस्कार मलमास तथा गुरुशुक्रास्त में भी करने चाहिये।

कुछ आचार्यो का मत है कि केवल प्रथम संतान के गर्भ के समय दूसरे तीसरे माह में यह संस्कार करें, कुछ का मत है कि सभी गर्भकाल में करना चाहियें।

सङ्कल्प- **मम भार्यायामुत्पत्यस्य-मानस्य गर्भस्य वैजिक-गार्भिक दोष-परिहारार्थ पुं रूपता ज्ञानोदय प्रतिरोध परिहार द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ पुंसवनाख्यं कर्माहं करिष्ये। तदंगत्वेन गणपति पूजनं, स्वस्ति वाचनं, मातृका पूजनं, नान्दिश्राद्धं च करिष्ये।**

गणपत्यादि पूजन करें। वटवृक्ष की नरम कोपलें लेकर उनको आद्रित (गीली) कर कपड़े से निचोड़ कर रस निकाले। भर्ता उनकी १-१ बून्द गर्भिणी के नासा छिद्रों में डाले।

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुते कस्मै देवा हविषा विधेम ॥१॥

ॐ अदभ्यः समभृतम् ....।

कोपल के पत्तों के रस से गर्भिणी के पेट पर छीटें देवे।

ॐ सुपर्णोसि गरुत्क्माँ-स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रीञ्चक्षु-र्बृहद्रथंतरे पक्षौ। स्तोम आत्माच्छन्दा ँ स्याङ्गानियजू ँ षिनाम। सामते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञिम्पुच्छान्धिष्ण्याः शफाः ॥

सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पतः ॥

पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन एवं दक्षिणा देकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

॥ अथ सीमन्तोन्नयन संस्कार ॥

गर्भ के छठें आठवें महिने में अनुकूल चन्द्र तारा बल में संस्कार करें। आजकल के समय केवल गर्भिणी से सामान्य पूजा कराकर उसके द्वारा इच्छित मिष्ठान्न एवं फलादि को दान व वितरण हेतु संकल्पित करा देते है।

विधानम् - पति का हाथ पकड़ कर शाला में प्रवेश कर शुभासन ग्रहण करें।

पूजन करें।

पत्न्या सह मङ्गल स्नानं कृत्वा अहतवासोयुगालंकृतः शुचिर्दर्भपाणिः पत्न्या सह बहि:शालायां शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य।

संङ्कल्प- देशकालसंकीर्तनान्ते- तनुरुधिरप्रियालक्ष्मी भूतराक्षसीगण दूरनिरसन क्षम सकल सौभाग्यनिदान भूतमहालक्ष्मी (ज्येष्ठा लक्ष्मी) समावेशन द्वारा प्रतिगर्भ बीज गर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणं जनकातिशय द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं स्त्री संस्कार-रूपं सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्म करिष्ये।

तत्र निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थ गणपति पूजनं स्वस्ति पुण्याह वाचनं मातृका- **वसोर्धारापूजनं, आयुष्यमन्त्र जपं नान्दीश्राद्धं च** करिष्ये ।

वेदी संस्कार करके अग्नि स्थापन करें । ब्रह्मा को आसन देवें ।

युग्म उदुम्बरफल अन्य पक्वान १३ परिमाण में तीन दर्भ पिञ्जुला, तीन शलली, नीरतर शंकु अश्वत्थ वैल्वः या शारेषीक सीसज के शंकु पूर्ण पात्र - चावल मुद्रान्न इत्यादि पास में रखें ।

सूक्ष्म होम करें। यथा -

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न ममः ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न ममः ॥ ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥

हाथ में चावल लेकर अग्नि का पूजन करें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः ।

पश्चात् चरु होम करके स्थाली पाक में स्विष्टकृत होम करें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

इसके बाद ९ बार घी की आहुति देवे ।

ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। ॐ स्व स्वाहा इदं सूर्याय नमः ।

इसके बाद **ॐ त्वन्नो अग्ने** इत्यादि मंत्रो से ५ **आहुति अग्नि** की देकर **प्रजापतये स्वाहा** की आहुति देवें संस्त्रव प्राशनम करायें होम समाप्य करायें। गर्भवती को भद्रपीठ पर बिठावें इसकें बाद युग्म उदुम्बरफल तीन डाम के पुञ्ज, तीन शलील, वीरतर शंकु पूर्णपात्र सबको लेकर भर्ता स्त्री के मूर्ध्नि के पास

लगावें । स्त्री तीन मंत्रों से नमस्कार कर विनय करें -

ॐ भूर्विनयामि। ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामि (इति त्रिभिर्मन्त्रै स्त्रिर्विनयति)

इसके बाद दर्भा उदुम्बर फल शंकु शलील इत्यादि पांचों वस्तुऐं वेणी में लगावें। **ॐ अयमूर्जावतोवृक्ष ऊर्जीव फलिनी भवः।**

गाथागान मंत्र - भर्ता कहे -

ॐ सोम एवनो राजेमा मानुषीः प्रजाः ।
अविमुक्त चक्र आजीरंस्तीरेतुभ्यमसाविति ॥

गंगा यमुना एवं आसपास की नदी तीर्थों का स्मरण करें । १३ पक्वानों का दान संकल्प गर्भिणी से करा देवें । देव विसर्जन करें।

॥ अथ षष्ठीपूजन प्रयोगः॥

इस पूजन के करने से बालक एवं माता की आयु बढ़ती है।

संङ्कल्प- **अद्येत्यादि अनयोः सूतिका बालकयोः आरोग्याभिवृद्ध्यर्थे सकलारिष्ट शान्ति द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थे विघ्नेशस्य जन्मदायाः षष्ठी देव्या जीवन्तिकायाश्च यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।**

भद्रपीठ पर, अक्षतपुंजो पर या सुपारी पर देवों का आवाहन करें-

ॐ विघ्नेशाय नमः। विघ्नेश मावाहयामि स्था.॥१॥ ॐ जन्मदे इहागच्छ। जन्मदायै आ. वा. स्था. ॥२॥ ॐ षष्ठी देव्यै नमः। षष्ठीदेवि इहागच्छ इहतिष्ठ ॥३॥ जीवन्तिकायै नमः। जीवन्तिके इहागच्छ इहतिष्ठ ॥४॥

सबका षोडशोपचार पूजन करें। कुंकुम, लेखनी, एवं पत्र का पूजन करें। प्रार्थना करें-

षष्ठी देवि नमस्तुभ्यं सूतिकागृह-शालिनी ।
पूजिता परमा भक्त्या दीर्घमायुः प्रयच्छ मे ॥१॥
जननी जन्मसौख्यानां वर्धिनी धन सम्पदाम् ।
साधिनी सर्वभूतानां जन्मदे त्वां नता वयम् ॥२॥

गौरीपुत्रो यथा स्कंद शिशुत्वे रक्षितः पुरा ।
तथा ममाप्यमुं बालं षष्ठिके रक्ष ते नमः ॥३॥
सर्वविघ्नानपाकृत्य सर्व सौख्य प्रदायिनि ।
जीवन्तिके जगन्मातः पाहि नः परमेश्वरि ॥४॥

सूतिका गृह में बलि प्रदान करें।

क्षेत्रस्याधिपते देवि सर्वारिष्ट विनाशिनी ।
बलिं गृहाण मे रक्ष क्षेत्रं सूतिं च बालकम् ॥

छुरिका या खड्ग का अक्षतपुञ्ज पर पूजन करें।

ॐ राकायै नमः राकामावाहयामि। ॐ अनुमत्यै नमः अनुमति मावाहयामि। ॐ सिनीवाल्यै नमः सिनीवालीमावाहयामि। ॐ कुह्वै नमः कुहूमावाहयामि॥ ॐ वातघ्न्यै नमः वातघ्नीमावाहयामि।

पंचोपचार से पूजन करें। द्वार के बाहर दोनों तरफ कज्जल से लिखें। **धिषणा, वृद्धिमाता। गौरी, पूतना॥** इनका पूजन करें।

ॐ धिषणादि च तसृमातृभ्यो नमः। पंचोपचार पूजन करें-

आयुर्दात्र्यो भवन्त्वेता अद्य बालकस्य मे शिवाः।

साधारणतः रात्रि में गणपति, विधात्री जन्मदा, षष्ठीदेवी एवं मार्कण्डेय का स्मरण पूजन कर बालक व सूतिका के सिराहने कुंकुम, कज्जल, शलाका एवं खड्ग रख देते है एवं विधात्री से प्रार्थना करते है कि बालक की दीर्घायु करें एवं उसके भाग्य में शुभाङ्क लिखें।

॥ जातकर्म सस्ंकार॥

यावन्न छिद्यते नालं तावन्नाप्नोति सूतकम् ।
छिन्ने नाले ततः पश्चात् सूतकं तु विधीयते ॥

अर्थात् जब तक जातक का नालच्छेदन नहीं होता तब तक सूतक की प्राप्ति नहीं होती और नालच्छेदन के बाद अशौच की प्राप्ति होती है । जातकर्म संस्कार नाल छेदन के पूर्व किया जाता है। यह संस्कार शीघ्र व स्फूर्ति से किया जाना चाहिये अन्यथा विलंब होने पर जातक को खतरा पैदा हो सकता है। वैसे हॉस्पिटल में पैदा होने वाले जातक के समय में भी यह संभव नहीं है। इसलिये

यह संस्कार षष्ठी पूजन के दिन किया जा सकता है। षष्ठी पूजन संस्कार भी जातकर्म संस्कार के अंतर्गत है ।

यजमान संकल्प करें - **मम अस्य कुमारस्य गर्भाम्बुपान जनित सकलदोष निबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धि बीज गर्भ समुद्भवैनो निबर्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकर्माख्यं कर्म करिष्ये। तदंगत्वेन गणपत्यादि पूजनमहं करिष्ये।**

शुद्ध पात्र में या काँस्यपात्र में मधु एवं घृत को सुवर्णशलाका या अनामिका से एकीकृत करे एवं कुमार को प्राशन करायें या सुंघावे।

ॐ भूस्त्वयि दधामि। ॐ भुवस्त्वयि दधामि। ॐ स्वस्त्वयि दधामि। ॐ भू र्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि।

इस तरह यह कुमार का **मेधाजनन संस्कार** हुआ। कुमार के दक्षिण कर्ण के पास, नाभि समीप आयुष्य मंत्र व गायत्री मंत्र जपे।

॥ आयुष्य मंत्राः ॥

ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥
ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधिभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥
ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद् ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥
ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।
ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वाधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।
ॐ यज्ञ आयुष्मान्स दक्षिणारायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।
ॐ समुद्र आयुष्मान्स स्त्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।

इन मंत्रों की तीन आवृत्ती करें। इसके बाद त्र्यायुंष मंत्रों को ३ बार जपे।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः। कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।

समय हो तो ऋग्वेद की ११ ऋचायें भी कुमार को सुनावें।

ॐ दिवस्परि प्रथमञ्जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीय परिजात वेदाः । तृतीयमप्सुनृमणा अजस्त्रमिन्धान एनञ्जरतेस्वाधीः ॥१॥ विद्माते अग्नेत्रिधा त्रयाणि विद्मातेधाम विभृता पुरुषा ।

विद्माते नाम परमङ्गुहा यद् विद्मात-मुत्संयत आजगन्थ ॥२॥

समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा इधेदिवो अग्न ऊधन् ।

तृतीये त्वा रजसितस्थिवा ँ समपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन् ॥३॥

अक्रन्ददग्निस्तनयन्निवद्यौः क्षामारेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।

सद्योजज्ञानो विहीमिद्धो अख्यदारोदसी भानुन भत्यन्तः ॥४॥

श्रीणामुदारोधरुणो रयीणांमनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।

वसुः सूनुः सहसो अप्सुराजा विभात्यग्र उषसाभिधानः ॥५॥

विश्वस्य केतु-र्भुवनस्य गर्भ आरोदसी अपृणा जायमानः ।

वीडुञ्चिद द्रिमभिनत्परायञ्जनाय दग्निमय-जन्तपञ्च ॥६॥

उशिक्पावको अरतिः सुमेधामर्त्येष्वग्निरमृतो निधायि ।

इयार्तिधूम मरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषाद्यामि नक्षन् ॥७॥

दृशानो रुक्म उर्व्याव्यद्योदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।

अग्निग्ररमृतो अभवद्वयोभि-र्यदेनंद्यौर जनयत्सुरेताः ॥८॥

यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचे पूपन्देव घृतवन्तमग्ने ।

प्रतन्नय प्रतरंवस्यो अच्छाभिसुमन्देव भक्तं यविष्ठ ॥९॥

आतम्भजसौश्व वसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने ।

प्रियः सूर्ये प्रियो अग्नाभवात्युजातेन भिनदुजनित्वै ॥१०॥

त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून्विश्वावसु दधिरेवार्याणि ।

त्वयासहद्रविणमिच्छमाना व्रजङ्गोमन्तमुशिजो विवव्रुः ॥११॥

इसके बाद बालक के चारों तरफ चार दिशाओं एवं एक मध्य या नैऋत्य में खड़ा करें एवं वे कुमार को लक्षित कर कहें।

चारों दिशाओं में प्रेषित करें। यथा-

इममनुप्राण। प्राण इति पूर्वः॥ **इममनुव्यान। व्यानेति** दक्षिणः॥ **इममन्वपान। अपानेति** अपरः॥ **इममनूदान।** उदानेत्युत्तर॥ **इममनुसमान। समानेति पंचमः। उपरिष्टादवेक्षमाणो** ब्रूयात्।

ब्राह्मणों की अनुपस्थिति में यजमान प्राण, व्यान, अपान, उदान, समानादि वायु का उच्चारण कर पूर्वादि क्रम से परिक्रमा करें।

बालक जिस भूमि पर जन्मा हो वहाँ या अन्य भूमि को अभिमंत्रित करें।

ॐ वेदते भूमि हृदयन्दिवि चन्द्रमसिश्रितम्। वेदाहन्तं मान्तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतः ठ शृणुयाम शरदः शतम् ।

शिशु को स्पर्श करें-

ॐ अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्त्रतम्भव ।
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् ॥

नान्दी श्राद्ध हेतु सुवर्णदान करें। माता शिशु को दुग्धपान करावें

॥ इति जातकर्म संस्कार प्रयोगः ॥

॥ अथ नामकरण संस्कार प्रयोगः॥

कुछ सम्प्रदायों में प्रधानतया सिंधी समाज में षष्ठी के दिन ही यह नामकरण संस्कार किया जाता है। अन्य में सूतिका स्नान के साथ सूर्य पूजन के समय ही किया जाता है।

संकल्प- **अद्येत्यादि मम अस्य शिशोः बीजगर्भ समुद्भवैनो निबर्हणायुः अभिवृद्धि द्वारा तथा सूतिका शुद्धि पूर्वकं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकस्य नामकरण संस्कारख्यं कर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन, गणपति, मातृका, सूर्यादि पूजनं चाहं करिष्ये।**

पूजन उपरान्त एक थाली में कुंकुम फैलाये उसमें **स्वर्णशलाका से चार नाम लिखें।**

(१) गणपति सहित इष्ट देवता का नाम लिखें।

(२) जिस मास में जन्म है उस मास देवता के नाम के साथ जातक का नाम चुने मास गणना चैत्र या मार्गशीर्ष से गिने।

चैत्रादि क्रमतो- मार्गशीर्षादिक्रमतो वा मासानाम लेख्यम् ॥

(मास नाम) **कृष्णोऽनन्तो ऽच्युतश्चक्री वैकुण्ठोऽथ जनार्दनः ।**

उपेन्द्रो यज्ञपुरुषो वासुदेवस्तथा हरिः ।
योगीशः पुण्डरीक्षो मासनामान्यनुक्रमात् ॥

(३) ज्योतिष शास्त्रोक्त अ व क ह ड़ चक्रानुसार नक्षत्र नाम लिखें।

(४) यदि अन्य कोई व्यवहारिक व प्रतिष्ठित नाम रखना चाहें वह लिखें।

ॐ भूर्भुवः स्वः नामदेवतायै नमः। से उनका पूजन करें। **पश्चात् माता** की गोद में बैठे शिशु के दक्षिण कर्ण में चारों नाम सुनाये –

१. हे कुमार! त्वं गणपति भक्तोऽसि। सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्भव सौम्य।

हे कुमार! त्वं (अमुक) कुलदेव्या भक्तोऽसि। सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्भव सौम्य।

२. भगवान् के १२ मासों के नामानुसार मास नाम सुनावें।

अमुक्कृष्ण, अमुकानंत, अमुकाच्युत, अमुका चक्री, अमुक जनार्दन, इस तरह मास नाम सुनावें।

हे कुमार! त्वं मासनाम्ना अमुक शर्मासि। सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्भव सौम्य।

३. हे कुमार! त्वं नक्षत्रनाम्ना अमुक शर्मासि। सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्-भव सौम्य।

४. हे कुमार! त्वं व्यवहार नाम्ना (माता-पिता की रुचि अनुसार नाम) **अमुक शर्मासि। सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्-भव सौम्य।**

पश्चात् विप्र आशीष प्रदान करें-

ॐ वेदोसियेनत्वं देववेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेनमह्यं वेदोभूयाः। ॐ मनोजूतिर्ज्जु०.......। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजंते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति। अमुकनाम्ना प्रतिष्ठतं भवतु।

हे कुमार! सर्वान्ब्राह्मणान् अभिवादय। अभिवादयामि। आयुष्मान्-भव सौम्य।

कुमार को अभिस्पृश करके कहें – **ॐ अश्माभव परशुर्भव हिरण्यमस्त्रुतं भव। आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम् ।**

पश्चात् कर्म को परमेश्वर के अर्पण करें। **तेन श्रीकर्माङ्गदेवता प्रीयतां न मम।**

॥ इति नामकरण संस्कार प्रयोग:॥

॥ अथ निष्क्रमण संस्कार प्रयोग:॥

बालक को घर से बाहर निकालने का यह संस्कार १२ वें दिन अथवा चौथे माह में करते है। किसी अन्य शुभ दिन भी कर सकते है।

दिन में सूर्य दर्शन करावें। रात में चन्द्र दर्शन करावें। गणपति का पंचोपचार पूजन करके घर के बाहर ले जाकर सूर्य का दर्शन करावें।

मंत्र- **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतः ठ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतंभूयश्चशरदः शतात्।**

देव दर्शन भी करावें।

॥ इति निष्क्रमण संस्कार प्रयोग: ॥

॥ अथ अन्नप्राशन संस्कार प्रयोग:॥

बालक को छठे, सातवें, आठवें महिने में किसी शुभ दिन यह संस्कार कराते है।

संङ्कल्प करके गणपति पूजन करें। स्थंडिल का पंचभूसंस्कार करके अग्नि स्थापन करें। ब्रह्मा प्रणिता प्रोक्षणी का स्थापन करें। हवन प्रारम्भ करें।

(मनसा) ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते न मम॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

अग्नि का पूजन करें- **''ॐ शुचिनाम्ने वैश्वानराय नमः''** खीर की आहुतियाँ प्रदान करें। यथा -

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सानोमंद्रेष मूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वाहा ॥१॥
इदं वाचे न मम।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सानोमंद्रेष मूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु इदं वाचेन मम स्वाहा ॥२॥

ॐ वाजोनो अद्य प्रसुवातिदानं वाजोदेवाँ२ ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजोहिमासर्व वीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेय ७ स्वाहा ॥३॥

इदं देव्यै वाचे वाजाय न मम॥

पुनः स्थालीपाक (खीर) की चार आहुतियाँ देवें।

ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा। इदं प्राणाय न मम ॥१॥ ॐ अपानेन गंधानशीय स्वाहा। इदमपानाय न मम ॥२॥ ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा। इदं चक्षुषे न मम ॥३॥ ॐ श्रोत्रेण यशोशीय स्वाहा। इदं श्रोत्राय न मम ॥४॥

गायत्री की आहुति देकर स्विष्टकृत होम करें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहाः इदं वायवे न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥३॥ ॐ त्वन्नो अग्ने० स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ॥४॥ ॐ ॐ सत्वग्नो अग्ने० स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम ॥५॥ ॐ अयाश्चाग्ने........ स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम ॥६॥ ॐ ये ते शतं......स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥ ॐ उदुत्तमं वरुण....... स्वाहा। इदं वरुणादित्यायादितये न मम ॥८॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

संस्रवप्राशन कराकर होम समापन करायें। बालक को खीर खिलावे तथा तैल, कटु कषाय, मधुराम्ल सर्वान्न को एक काँस्यपात्र में एकीकृत करें और "**ॐ हंत**" इस मंत्र से प्राशन कराये।

इसके बाद बालक के सामने कपड़े वस्त्र, खिलौने, पुस्तक इत्यादि कई वस्तुऐं रखें जिस पर प्रथम बार हाथ रखें वही बालक की आजीविका समझना चाहिए।

(इति अन्नप्राशन संस्कार प्रयोगः)

॥ अथ चौलसंस्कार प्रयोगः ॥

पिता शुभ दिन जातक का संस्कार अपनी कुलदेवी या कुलदेवता के यहाँ करें।

प्रायश्चित सङ्कल्प- **मम सुतस्य चौलसंस्कारस्य स्वकालातिक्रमदोष-प्रत्यवायपरिहारार्थं अर्धकृच्छ्ररूपं प्रायश्चितं रजतप्रत्याम्नाय द्वारा अहमाचकरिष्ये॥**

अनेन अर्धकृच्छरूपप्रायश्चित्तकृतेन मम अमुक शर्मणः सुतस्य चौल-संस्कार कर्मण्यधिकार सिद्धिरस्तु ॥

पुनः- अद्येत्यादि.......। बोलकर ३ ब्राह्मण भोजन का संकल्प चौलसंस्कार अधिकार सिद्धि हेतु करें।

पश्चात् पूजन हेतु सङ्कल्प करें-

अद्येत्यादि......मम सुतस्य बीजगर्भ समुद्भवैनो निबर्हणेन बलायुर्वर्चोभिवृद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं चौलसंस्काराख्यं कर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं श्रीमहागणपतेः पंचोपचारैः पूजनं करिष्ये।

गणपत्यादि पूजन करें- शीतोदक, उष्णोदक, नवनीत पिण्ड़, घृतपिण्ड़, दधिपिण्ड़, गोमयपिण्ड़, तीन शल्ली, २७ कुशायें। प्रणिता प्रोक्षणी लाल या श्वेत वस्त्र इत्यादि वस्तुऐं संग्रहीत करें। वेदी बनाकर पंचभूसंस्कार कर अग्नि स्थापन कर प्रजापत्यादि की आहुति देकर अग्नि का पूजन करें।

"ॐ सभ्यनाम्ने वैश्वानराय नमः"। कुलदेवता की ८ या २८ आहुतियाँ देकर स्विष्टकृत होम करें। **भूः, भुवः, स्वः,** तथा त्वन्नो अग्नि इत्यादि (अग्नि की ५ आहुतियाँ) देकर **"प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते न मम "** से होम समापन करें। इन ९ आहुति देने के बाद संस्रवप्राशन पूर्णपात्र का दान करायें।

शीतोष्ण जल पास में रखें। केशान्त संस्कार करते समय नाई शिर के दक्षिण भाग, पश्चात् पश्चिम भाग फिर उत्तर भाग का वपन करें।

अलग-अलग भाग हेतु अलग-अलग गोदान का संकल्प करें। यथा-

दक्षिण गोदानम्- **ॐ अद्येत्यादि-अस्य कुमारस्य चूडाकर्म-कर्तुमधिकारार्थं दक्षिणगोदानं मुण्डनं च करिष्ये।**

शीतोष्ण जल से केशों का आसिंचन करें। ॐ उष्णेन वायउदकेने-ह्यदिते केशान्वप॥ नवनीत घृत व दधिपिण्ड का प्रासन करायें।

केशों को कंघी से उठाकर ऊँचा करें- **ॐ सवित्रा प्रसूता दैँव्या आप उन्दन्तु ते तनूम्। दीर्घायुत्वाय वर्चसे॥**

तीन कुशायें केशों में रखें **ॐ ओषधेत्रायस्व** एवं केशों को नापित अस्त्र से हटाये। लोहे का उस्तरा इस मंत्र से चलावें-

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्तेपिता **नमस्ते अस्तु** मामाहि ँ सीः।

इस मंत्र से केश, कुशा एवं अस्त्र का संलग्नीकरण करें।

निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्य यप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥

इसके बाद छेदन करें-

ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्यराज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।
तेन ब्रह्मणोवपते दमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासम् ॥

केशों व कुश तरुण को गोमय पिण्ड में अग्नि के उत्तर में रखें। दो बार बिना कुछ कहे यही क्रिया करके केश व कुशों को गोमय पिण्ड में रखें।

पश्चिम गोदानम्- **हस्ते जलमादाय......अस्य कुमारस्य चूडाकर्म कर्तुमधिकारार्थं पश्चिम गोदानं मुण्डनं च करिष्ये।**

पहले की तरह मंत्रादि पठन व कर्म करें।

केशों को उठाते समय इस मंत्र को कहें-**ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूम्। दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे।**

त्रेणी शल्य से केशों को हटाये, तीन कुश तरुण अन्दर रखें- **ॐ ओषधेत्रायस्व** मंत्र से।

लोहक्षुर शिर पर रखें-

ॐ शिवोनामासि स्वधिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ꣳ सी:।

त्र्यायुष मंत्र से केश छेदन करें।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥

इस तरह २ बार बिना मंत्र के करें केश व कुशतरणों को गोमय पिण्ड में रखें।

उत्तर गोदानम्- **हस्ते जलमादाय अस्य कुमारस्य चूडाकर्म कर्तुमधिकारार्थमुत्तर गोदानं मुण्डनं च करिष्ये।**

पहिले की तरह "**ॐ सवित्रा प्रसूता**" मंत्र से केशों को ऊँचा करें। "**ओषधेत्रायस्व**" मंत्र से कुशतरुण रखें एवं "**शिवोनामासि**" मंत्र से क्षुरिका शिर पर रखें पश्चात् केश छेदन करें। मंत्र-

येन भूरिश्चरादि वज्ज्योक्कपश्चाद्धि सूर्यम् ।
तेनतेवपामि ब्रह्मणा जीवा तवे जीवनायसु श्लोक्याय स्वस्तये ॥

केशों व कुश तरुणों को गोमय पिण्ड में रखें। पुनः चुपचाप इस तरह को दो बार करें।

पश्चात् ३ बार शिर की प्रदक्षिण क्रम से क्षुरिका से वपन करें।

ॐ यत्क्षुरेण मज्जयतासु पेशसावप्तावा वपति । केशाञ्छिन्धि शिरोमास्यायुः प्रमोषीः ॥

इसके बाद शिर को गीला करें। क्षुरिका नापित को देवें।

पिता कहें- **ॐ अक्षुण्वन्परिवप**। नाई कहे- **वपामीति**॥

कुमार का मुँह पूर्व की तरफ करके शेष केशों का वपन करें। केशों का अपने कुलदेवता की रीति अनुसार अर्पण करें। अथवा गोमय पिण्ड में रखें उनको वस्त्र में लपेट कर जल मध्य या गोशाला अथवा अज्ञात स्थान पर रख देवें। कुमार को स्नान कराकर, नूतन वस्त्र धारण करायें। मस्तक पर हल्दी से स्वस्तिक बनायें, तिलक करें कुल देवता के समक्ष जाकर पूजा नमस्कार करें। कर्म को श्रीकर्माङ्गदेवता के अर्पण करें।

॥ इति चौलसंस्कार प्रयोगः ॥

|| अथ गण्डान्त विषय प्रकरणम् ||

गर्गऋषि का मत है कि नक्षत्र गण्ड़ान्त माता का , तिथि गण्ड़ान्त पिता का, एवं लग्न गण्डान्त जातक का विनाश करता हैं।

अश्विनी, मघा, मूल की तीसरी, चौथी, व नवीं आदि की घटिका रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा, नक्षत्र १ ।१६ ।६ घटियों का त्याग करना चाहियें।

ऋषि वसिष्ठ के अनुसार श्लेषा-मघा, ज्येष्ठा-मूल और रेवती- अश्विनी के मध्यभाग की चार घटी तक गण्डान्त होता है। अन्य ग्रन्थों के अनुसार कर्क वृश्चिक मीन राशि की अन्तिम आधी घटी में तथा पंचमी, दशमी, चौदस तिथि के अन्त में एक घटी गण्ड़ान्त होता है। इसका जन्म, यात्रा, एवं विवाह में सर्वदा त्याग करना।

ऋषि **बादरायण** के अनुसार गण्डान्त में दिन के समय में उत्पन्न होने पर पिता का, रात में माता का एवं संध्या के गण्डान्त में स्वयं का विनाश करता है।

|| अभुक्तमूल गण्ड़ान्तः ||

वृहन्नारद के अनुसार जेष्ठा के अंत की २ घटी तथा मूल के प्रारंभ की दो घटी अभुक्त संज्ञक होती है।

वसिष्ठ ऋषि के अनुसार जेष्ठा के अन्त की एक घटी तथा मूल के आदि की दो घटी कुल ३ घटी अभुक्त मूल है।

|| गण्डमूल नक्षत्रः ||

ज्येष्ठा मूल एवं अश्लेषा के गण्डान्त अधिक भारी होते है तथा मघा, रेवती एवं अश्विनी गण्डान्त हल्के होते है। इनकी शान्ति हेतु **गोमुखप्रसव कर्म एवं शान्तिकर्म** करना चाहिये।

आचार्य श्रीपति के अनुसार मूल के प्रथम चरण में पुत्र उत्पन्न होने पर पिता का, दूसरे में माता का तीसरे में धन का नाश तथा चौथे पाद में जन्म शुभ होता है।

कन्या का जन्म प्रथम चरण में पशु पीड़ा, द्वितीयं चरण में सौख्यप्रद, तृतीय चरण में जन्म पिता का नाश, तथा चतुर्थ चरण में माता का नाश करने वाली होवें।

ऋषि नारद ने कहा है कि ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले बड़े भाई को हानि नहीं करते, तथा कन्या मूल नक्षत्र में जन्मे तो पिता का नाश नहीं करती।

आचार्य गर्ग ने कहा है कि मूल में उत्पन्न होने वाली कन्या श्वसुर का, आश्लेषा में सास का, ज्येष्ठा में जेठ का तथा विशाखा में स्त्री अपने देवर का विनाश करने वाली होवें।

मूलस्थिति ज्ञानम्

कूर्मयामल में कहा है कि ज्येष्ठ, वैशाख, फाल्गुन एवं अगहन में पाताल में। आषाढ़, भादों, क्वार, माघ में स्वर्ग में। पौष, सावन, कार्तिक और चैत्र में मूल का निवास संसार में होता है। '**मणिमाला**' में भी यहीं लिखा है।

स्वर्ग व पाताल में मूल निवास सुखद तथा मर्त्यलोक में मरणदाता होता है।

रवियुक्ताश्विनी सौम्यादित्यहस्तादिकत्रयम् ।
मैत्रं च रेवतीज्येष्ठा तदा मूलं न दोषकृत् ॥

रविवार युक्त अश्विनी हो, बुध सूर्य से युक्त हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा व रेवती का हो तो मूल नक्षत्र दोष दायक नहीं होता है। अन्यच्च-

तृतीया दशमो षष्ठी शनिभौमसमन्विता ।
शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥

रुद्रयामल के अनुसार - अभुक्त मूल में जन्मे बालक का कम से कम २७ दिन (अधिक में ८ वर्ष अन्यत्र पालन करें) ज्येष्ठा में उत्पन्न बच्चे का १५ दिन तक, आश्लेषा में नौ मास तक बालक का दर्शन नहीं करें।

परन्तु गोप्रसव, गण्डान्तशान्ति कराकर १३, १५, २७, वें दिन दर्शन करें। गण्डान्त की शान्ति गण्डनक्षत्र में करें।

शास्त्रों में "**जातकस्य द्वादशे**" लिखा है परन्तु १२ दिन साधारणत: अशुभ मानते है इसलिये १३ वें या २७ वें दिन शान्ति विधान करें।

॥ वृक्षाकारमूल चक्रम् ॥

वृक्ष	भाग	घटी	अन्य मत से	घटी फलम्
मूल	१	७	४	स्वामीनाश
स्तंभ	२	८	७	हानि
त्वचा	३	१०	१०	भ्रातृनाश
शाखा	४	११	८	माता का नाश
पत्र	५	१२	९	कलावान्
पुष्प	६	५	५	राजप्रिय
फल	७	४	६	राज्यप्राप्ति
शिखा	८	३	११	अल्पजीवन

॥ पुत्रजन्म समये मूलपुरुष फलम्॥

भाग	अंग	घटी	फलम्
१.	मस्तक	५	राजा
२.	मुख	७	पितामरण
३.	स्कंध	४	महाबल
४.	भुजा	८	बलवान्
५.	हाथ	३	हत्या
६.	हृदय	९	राजसचिव
७.	नाभि	२	ब्रह्मवेत्ता
८.	उपस्थ	१०	अतिविषयी
९.	जानु	६	अधिकबुद्धिमान्
१०.	पैर	६	मरण

॥ कन्याजन्म समये मूलपुरुषाकार फलम्॥

भाग	स्त्रीअंग	घटी	फल
१.	मस्तक	४	पशुपीड़ा
२.	मुख	६	धनहानि
३.	कण्ठ	५	धनागम
४.	हृदय	५	कुटिलता
५.	बाहु	१०	वित्तलाभ
६.	हाथ	८	दयाधर्म
७.	गुह्य	४	अतिकामी
८.	जंघा	४	बड़े मामा का नाश
९.	जानु	४	बड़े भाई का नाश
१०.	पैर	१०	वैधव्यता

॥ पुरुषाकार आश्लेषा चक्रम् ॥

भाग	अंग	घटी	फलम्
१.	मस्तक	५	सुन्दर पुत्र या राज्यलाभ
२.	मुख	७	पिता का नाश
३.	आँख	२	माता का नाश
४.	गला	३	स्त्री लंपट
५.	कन्धा	४	गुरुभक्त
६.	हाथ	८	बलवान्
७.	हृदय	११	आत्मघाती
८.	नाभि	६	स्त्रीवान्, भ्रमी
९.	गुह्य	९	तपस्वी
१०.	पैर	५	धन विनाशी

॥ वृक्षाकार आश्लेषा चक्रम् ॥

भाग	अवयव	घटी	फल
१.	फल	१०	लक्ष्मी
२.	पुष्प	५	राज्य
३.	पत्ता	९	भय
४.	डाल	७	हानि
५.	छाल	१३	माता का नाश
६.	लता	१२	पिता का नाश
७.	स्कंध	४	स्वयं का नाश

॥ अन्य नक्षत्र दोष निदानम् ॥

उत्तरे तिलपात्रं स्यात्पुष्ये गोदानमुच्यते ।
अजाप्रदानं त्वाष्ट्रे स्यात्पूर्वाषाढे च कांचनम् ॥

उत्तरा, पुष्य, चित्रा, पूर्वाषाढ़ा में पैदा होने वाले की शान्ति उसी नक्षत्र में विधि पूर्वक करें।

ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्-

ज्येष्ठा के पहिले पाद में उत्पन्न कन्या बड़ी बहिन का, दूसरे में धन का, तीसरे में माता का, चौथे में उत्पन्न होने पर पिता का नाश करने वाली होती है। जेष्ठा में

उत्पन्न लड़की जेष्ठ की हानि करती है। ज्येष्ठा में उत्पन्न बालक प्रथम चरण में बड़े भाई, दूसरे में बान्धव का, तीसरे में धन और चौथे में स्वयं का नाशक होता है।

दशांश के आधार पर जेष्ठा नक्षत्र फलम्-

जेष्ठ नक्षत्र के पहले दशांश में जन्म होने पर नानी, दूसरे में नाना, तीसरे में मामा, चौथे में माता का, पांचवे में स्वयं का, छठे में वंश का, सातवें में दोनों कुलो का, आठवें में बड़े भाई का, नवें में श्वसुर का, जेष्ठा के दशवें हिस्से में समस्त का विनाश होता है।

॥ शतौषधि नामानि ॥

पुराण में कहा है कि -

मोरपंखी, विष्णुक्रान्ता, सहदेवी, पुनर्नवा, शरपुंखा, वाराही, काकजंघा, सुलक्ष्मणा, तुंबिका, कर्कन्धू ॥१०॥

कर्पूरी, कारवेल्लिका, कर्कोठी, चक्राङ्का, सफेद आक, व्याघ्रपत्ता, रुदन्ती, अश्वगंधा, मुसली, गिरिकर्षिका, ॥२०॥

इन्द्रवारुणी, अपामार्ग, शङ्खपुष्पी, कुमारिका, शल्लकी, गंधारी, निर्गुण्ड़ी, देवदारिका, वट, शमी (छोंकरा) ॥३०॥

प्लक्ष, ढाक, पीपल, आम, गूलर, जामुन, नन्दीवृक्ष, वेतस, पुन्नाग, अर्जुन, ॥४०॥

अशोक, मौलसरी, अश्मन्तक, साल, ताल, तमाल, पाटल, शतपत्रिका, महुआ, शिरीष, ॥५०॥

श्रीवृक्ष, वृहती, दूसरी बृहती, बला, अतिबला, पाठा., नागवल्ली, जाती, बकुलक, केतकी, ॥६०॥

केला, मातुलिङ्गी, जयन्ती, यवानी, पुण्ड्रिका, द्रोणपुष्पी, कुंभी, श्रीपर्णी, दमन, चम्पक ॥७०॥

पदमक, कांचन पुष्पिका, सिद्धेश्वरी, बदरी, धव, राजवृक्षा, कुन्द, मुचकुन्द, गोजिह्वा, क्षीरकन्दुका, ॥८०॥

दाड़िमी, बीजपूरी, ब्राह्मी, आमलकी, भृङ्गराज, अधोपुष्पी, मत्स्याक्षी, आटरूषका, तरंगिणी, गुडूची ॥९०॥

निशाह्वा, शतमूलिका, वाकुची, काकजंघा, बर्बरी, तुलसी, कुश, काश, इक्षुमूल, सर्षपमूल ॥१००॥

ये सौ प्रकार की औषधियाँ विभिन्न तांत्रिक प्रयोगों व शान्ति प्रयोगों में काम आती है।

॥ सर्वौषधिनामानि ॥

१. कर्णिकार २. वच ३. कुष्ठ ४. शालेय ५.६. रजनीद्वय ७.सुण्ठी ८.चम्पक ९. मुस्ता १०. सतावरी ये सर्वोषधि समुदाय होता है।

॥ सप्तमृत्तिका ॥

गजशाला, गौशाला, अश्वशाला, दीमक द्वारा निकाली गयी मिट्टी, संगम स्थल की मिट्टी, तालाब व राजद्वार की मिट्टी।

॥ सूतिका स्नानम् ॥

त्याज्य नक्षत्र- दैवज्ञ मनोहर ग्रंथ में कहा है कि कृत्तिका, भरणी, मूल, आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा और श्रवण ये दश नक्षत्र प्राणहंता है, स्त्री पुनः गर्भवती नहीं होती है।

त्याज्य तिथि-

प्रतिपच्च नवभ्यां च षष्ठ्यां च शनि शुक्रयोः ।

विधवा त्रीणि जन्मानि पुनः सूतो न जायते ॥ (वृ. दै. रं.)

अर्थात् प्रतिपदा, नवमी, षष्ठी तिथि के साथ शुक्रवार, शनिवार के संयोग होने पर यदि प्रसूता को स्नान कराया जाता है स्त्री तीन जन्म तक विधवा होती है। (यौवनकाल या वृद्धावस्था के काल का उल्लेख नहीं है) और पुनः संतान नहीं होती है अर्थात् होतो गर्भखण्डन आदि कुयोग बने।

शुभ नक्षत्र - तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाति, रेवती, हस्त, अनुराधा, एवं अश्विनी प्रसूता स्नान में शुभ है।

मतान्तरे- हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुन, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, मृगशिरा एवं उत्तरा नक्षत्र में रिक्तातिथि को छोड़कर अन्यवार में करें।

वार फलम्-

स्नाता प्रसूता असुता बुधेन स्नाता च वंध्या भृगुनंदनेन ।
सौरेषु मृत्युः परहानिरिन्दौ पुत्रार्थकामा रविभौम जीवाः ॥

यदि प्रसूती बुध को स्नान करती है तो सुतहीन, शुक्र को वन्ध्या, शनि को मृत्युतुल्य कष्ट, सोमवार को दूधरहित और रवि, भौम या गुरुवार को स्नान करे तो पुत्र धन व अभीष्ट से युक्त होती है।

॥ अथ गोमुखप्रसव विधानम् ॥

रेवती, अश्विनी, अश्लेषा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा मूल नक्षत्र में वैधृति व्यतिपातादियोग, ग्रहण योग, ज्वालामुखी योग, सिनीवाली व कुहू में शान्ति हेतु गोमुखप्रसव विधान करना चाहियें।

॥ उपयुक्त समय ॥

जन्मर्क्षे वा त्रिजन्मर्क्षे शुभेवारे शुभेदिने ।
कृत्वाभ्यंगादिकं सर्व गृहालंकार पूर्वकम् ॥

अर्थात् गोमुखप्रसव विधान जन्म नक्षत्र या जन्म के नक्षत्र से तीसरे नक्षत्र में शुभवार या शुभ दिन में यह कार्य करें।

॥ लौकिक विशेष ॥

लोकाचार में प्रसूतिस्नान व गंडान्त शान्ति विधान एक ही दिन करते है इसलिये नांवण की पूजा व हवन कार्य दो कर्म होते है। गोमुखप्रसव भी इस समय होना जरुरी है अत: कई आचार्य गोमुखप्रसव की आहुतियों का अर्थ हवन विधान से समझते है अत: अधिदेवता प्रत्यधिदेवताओं की आहुतियों सहित संपूर्ण हवन विधान करा देते है एवं बाद में गोमुखप्रसव हेतु तीन सरकण्ड़ों से या मोली से योनि आकार (त्रिभुजाकार) बनाकर उसमें से ३ बार बालक को निकाल कर शुद्ध करते है एवं फिर नांवण कराते है।

परन्तु विशेष - जब तक सूतिका द्वारा सूर्य पूजन (नांवण) नहीं होगा तब तक अशौच निवारण नहीं होगा तो अधिदेवता व प्रधान देवताओं की आहुति कैसे लगेगी? अत: पहले नांवण कराना चाहिये, गोमुखप्रसव हेतु एक छोटी वेदी अलग बनानी चाहिए। गोमुखप्रसव व नांवण के बाद ही मूलादि शांति हेतु हवन का अधिकार प्राप्त होगा।

औरतों के लिये समस्या यह है कि पीहर वालों से कपड़े हवन के समय लेवें तो नांवण पर से प्रसूता खाली नहीं उठनी चाहिए। इस कारण पण्डित हवन पहले एवं नांवण बाद में कराते है।

स्वमतेन् - वैसे आचार्य को लोकाचार एवं शास्त्रोक्त विधान दोनों को अपनाना पड़ता है। लोकाचार का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। यह ध्यान रखने की बात है कि ***''गोमुखप्रसव में आहुतियाँ मधु, दधि एवं आज्य की लगती है, तिलादि होम की नहीं''*** अतः इसे शान्ति होम नहीं समझे।

प्रसूता एवं यजमान द्वारा प्रारंभ में गोमुखप्रसव तक का विधान करा लेवें। बाद में प्रसूता से सूर्य पूजा करायें छोटी वेदी पर या किसी हवन पात्र में गौमुखप्रसव हेतु दही, शहद व आज्य से विष्णु, वरुण एवं यक्ष्मणे की आहुतियाँ देकर नामकरण संस्कार की तरह नांवण का विधान पूरा करायें।

नांवण समय घर की किसी स्त्री द्वारा कोई वस्त्र ओढ़ा देवें। पश्चात् जेष्ठा मूलादि की शान्ति हेतु प्रधान मण्डल बनाकर तिलादि से शान्ति होम करें इस समय पीहर के वस्त्रादि प्रसूता को दिलावें।

॥ अथ गोमुखप्रसव प्रयोग विधिः॥

यजमान सपत्नीक पूर्वाभिमुख होकर आसन ग्रहण करें। ब्राह्मण **भद्रसूक्त व शान्तिसूक्त** का पाठ करें।

संङ्कल्प - **श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः....... अद्य दिने अस्य बालकस्य अमुक नक्षत्रोत्पत्ति (अमुकयोगोत्पत्ति) सूचितारिष्ट शान्त्यर्थ गोमुख प्रसव शांति करिष्ये। तत्रादौ दिग्रक्षणं कलशाराधनं गणपति पूजनं आचार्य वरणं च करिष्ये।**

स्वस्तिक पर गणेशजी की प्रतिमा या सुपारी रखकर पूजा करायें। आचार्य ईशान भाग में अबीर, गुलाल या श्वेत चूर्ण अथवा चावलों से अष्टदल बनायें। यथा शक्ति अनाज रखें। नया शूर्प(छाजला, अनाज साफ करने का पात्र) अष्टदल व अनाज पर रखें। शूर्प में लाल वस्त्र बिछायें कुछ तिल बिखेरें। बालक को चित्त अवस्था में पूर्व की ओर शिर रखतें हुए सुलावें। तदुपरान्त शूर्प सहित बालक को मोली से लपेटे। (यह गर्भ योनि की भावना हुई)।

गाय को बालक के पास लावे, गाय का मुख बालक की ओर होवे। माना कि शिशु गृह भाग में है और गाय बाह्य है, गाय का शिशु से संबन्ध कठिन है तो शूर्प

से मोली का धागा ले जाते हुये गाय के मुँह से अन्वारब्ध करें। गाय की प्राप्ति भी संभव नहीं हो तो शूर्प को ही गाय की योनिगर्भ मानें।

गाय के शरीर में गर्भ की पुष्टि की भावना निम्न मंत्रों से करें-

योनिं विष्णुः कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
प्रजापतिः प्रसिञ्चतु सृष्टा गर्भं ददातु ॥१॥
धेहि गर्भं सिनीवालि धेहिगर्भं पृथुष्टके ।
ते देवावश्विनौ गर्भमाधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥२॥
हिरण्ययी अरणीयं अश्विना निर्मथतः ।
गर्भं हवामहे तं ते दशमे मासि सूतवे ॥३॥
परापते न जायेत पुनः सुपुत्र आपतत् ।
मेस्यै च पुत्रकामायै गर्भं धेहि प्रसूतवे ॥४॥

फिर गाय के सब अंगों पर हाथ फेरें।

गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

पश्चात् शूर्प में से बालक की मोली हटाकर वस्त्र सहित निकाले। शूर्प के आगे त्रिकोणाकार भाग मोली से या तीन सरकण्डों के मुँहो को मिलाकर बनावें आचार्य उस त्रिकोणाकार में से बालक को ढके हुये मुँह सहित निकालकर माता को देवें, माता बालक को पिता को देवें। साधारणत: यह क्रिया लौकिक में तीन बार करते है अत: पिता बालक को आचार्य को देवें, आचार्य मोली में से निकाल कर माता को देवें एवं माता पिता को देवें ऐसा तीसरी बार फिर करें। पिता वस्त्र हटाकर बालक का मुँह देखें आचार्य पंचगव्य से बालक के छीटें देवें ध्यान रखें बालक की आँखों में नहीं गिरे।

मंत्र- **आपोहिष्ठा भयो भुवस्तान उर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उशती रिव मातरः। तस्मा अरंगमामवो। यस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथाचनः।**

पिता पुत्र के मस्तक को तीन बार सूँघकर माता को दे देवें। मंत्र-

ॐ अंगादंगात्संभवसि हृदयादधि जायसे ।
आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदां शतम् ॥

पिता ब्राह्मणों से कहें- **भो ब्राह्मणाः गोमुख प्रसव कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण - **अस्तु पुण्याहम्।**

पिता - **भो ब्राह्मणाः गोमुख प्रसव कर्मणः कल्याणं भवंतो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण - **अस्तु कल्याणम् ।**

पिता - **भो ब्राह्मणाः गोमुख प्रसव कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण - **ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

पिता - **भो ब्राह्मणाः गोमुख प्रसव कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण - **ॐ अस्तु श्रीः।**

पिता - **भो ब्राह्मणाः गोमुख प्रसव कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण - **ॐ ऋद्ध्यताम्। आनन्दमस्तु॥**

गोदान हेतु संकल्प करें- **कृतैतद् गोमुख प्रसव शान्ति कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थे इमां गां सोपस्कर सहितां रुद्रदेवत्वं अमुक गोत्राय अमुक नाम्ने शर्मणां तुभ्यमहं संप्रददे।**

छोटी वेदी बनाकर उसके **पंचभूसंस्कार करें।** अथवा नित्य होमपात्र की स्थापना कर शुद्धि कर **अग्नि की स्थापना करें।** ब्रह्मा की स्थापना करें आचार्य वरण करें।

नवग्रह मण्डल पर केवल नवग्रहों का आवाहन करें। अधिदेवता आदि का आवाहन नहीं करें। सूतिका से सूर्य पूजन करायें।

ग्रह मंड़ल के पास एक कलश की स्थापना करें, उस पर पूर्ण पात्र रखें, पूर्ण पात्र पर तीन सुपारियाँ रखकर उनमें **विष्णु, वरुण एवं यक्ष्महण** देवता का आवाहन करें।

विष्णु -

ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः।

दिवीव चक्षुराततम्। ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि ॥

वरुण -

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणो हवोद्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः॥

ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥

यक्षमहण –

ॐ अक्षिभ्यान्ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां चिबुका दधि।
यक्ष्म शीर्षण्यं मस्तिका जिह्वाया विवृहामिते॥

ॐ यक्ष्मणे नमः। यक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि।

सुपारियों पर हाथ रखकर प्राणों की भावना करें।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरंतु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मा महेति च कश्चन॥

ॐ मनोजूति॰ मंत्र से प्रतिष्ठा करें।

ॐ विष्णवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः। इनका षोडशोपचार पूजन करें।

पश्चात् देवता रूपी सुपारियों पर हाथ रखें अथवा हाथ जोड़े।

मंत्राः–

ॐ यतमिन्द्रं भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवन् छिन्वि तव तन्न उतिभिर्विद्विषो विभृधोजहि॥१॥
ॐ त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यांसि विधतः।
तं त्वा वयं मधवन्निद्र गीर्वणः! सुतावन्तो हवामहे॥२॥
ॐ इन्द्रस्य कुत वृत्रहा परस्या नो वरेण्यः।
स नो रक्षियच्चरमं समध्यमं स पश्चात् पातु नः पुरः॥३॥
ॐ त्वन्नः पश्चादधरादुतरा पुरइन्द्रं निपाहि विश्वतः।
आरे अस्मत् कृणुहि दैव्यं भयमा रे हेती र देवीः॥४॥
ॐ अद्याद्याश्वश्च इन्द्रत्राश्व परे च नः।
विश्वाच नो जरितृनसत् पथे अहा दिवानक्तं चरक्षिषः॥५॥
ॐ प्रभंगी शूरो मघवा तुवी मद्यः संमिलो वीर्यायकम्।
अभाते बाहु वृषणा शतक्रतो निया वज्रं मिमिक्षतु॥६॥

पश्चात् घी की आहुतियाँ देवें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते न मम॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम॥ ॐ अग्निये स्वाहा। इदं अग्निये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥

अग्नि का पूजन करें- **ॐ शांतिके वरदनाम्ने वैश्वानराय नमः।**

घृत आहुति देवें। **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते न मम॥**

पश्चात् एक पात्र में घृत, मधु एवं दही का मिश्रण कर उससे हवन करें। ४ आहुति वरुण, १ विष्णु की एवं ७ यक्ष्महण हेतु देवें।

मंत्र- **ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे स्वाहा। इदमद्भ्यो न मम ॥१॥**

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ स्वाहाः। इदं मदभ्यो न मम॥ २॥

ॐ आपोजन यथाचनः स्वाहा। इदमद्भ्यो न मम॥३॥

ॐ अप्सुमे सोमो अब्रवीदन्त विश्वानि भेषजाः। अग्निं च विश्वशं भुवमापश्च विश्वभेषजीः स्वाहा। इदमद्भ्यो न मम ॥४॥

ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः । दिवीव चक्षुरायतं स्वाहा। इदं विष्णवे न मम ॥५॥

ॐ अक्षीभ्यां नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां चिबुका दधि। यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिका जिह्वया विवृहामिते स्वाहा॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥६॥

ॐ ग्रीवाभ्यस्त उषणिहाभ्यः कीकसेभ्यो अनूक्यात् । यक्ष्मं दोषं साभ्यां बाहुभ्यां विवृहामिते स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥७॥

ॐ आंतेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादर्धि । यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्न: प्लक्षिभ्यो विवृहामिते स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥८॥

ॐ उरुभ्यांते अष्ठीवंदभ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् । यक्ष्मं श्रोणीभ्यां मासदाद्भंससा विवृहामिते स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥९॥

ॐ मेहनाद्धन करणाल्लोमभ्यस्ते नरवेभ्यः। यक्ष्मं सर्वस्मादात्मन् सत्मिदं विवृहामिते स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मणे न मम॥१०॥

ॐ अंगादंगाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि। यक्ष्मं सर्वस्मादात्मन

स्तमिदं विवृहामिते स्वाहा ॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥११॥

ॐ नाशयित्री बलासस्यार्श स उपचितामसि । अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसि नाशनी स्वाहा॥ इदं यक्ष्मणे न मम ॥१२॥

ॐ यक्ष्मणे स्वाहा। इसकी ८ या २८ आहुतियाँ देवें।

इसके बाद नवग्रहों की एक-एक आहुति देवें।

ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। ॐ भोमाय स्वाहा। ॐ बुधाय स्वाहा। ॐ गुरवे स्वाहा। ॐ शुक्राय स्वाहा। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। ॐ राहवे स्वाहा। ॐ केतवे स्वाहा।

अग्नि का पूजन कर स्विष्टकृत होम करें।

ॐ स्वाहा स्वधा युताग्नये वैश्वानराय नमः। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

बचा हुआ मधु, दही, घृत का मिश्रण होमाग्नि में ड़ाल देवें।

पश्चात् प्रायश्चित होम करके अग्नि वरुणादि की आहुतियाँ देकर प्रजापते स्वाहा से होम करें। **यथा-**

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम॥ ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम॥ ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः ।

यजिष्ठो वह्नितमः शोचुचानो विश्वाद्वेषा ँ सि पमुमुध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदं वरुणाय न मम ॥

ॐ सत्वन्नो अग्ने वमोभवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।

अवयक्ष्वणो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवोन एधि स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ॥

ॐ अयाश्चाग्ने स्वनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मया असि ।

अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥

ॐ ये ते शतं ये वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्तः ।

ते भिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्कास्वाहा ॥ इदं

वरुणाय सावित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वकेभ्यश्च न मम ॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्तदवाधमं विमध्यम ऌ श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ॥

ॐ अग्ने स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

प्रणिता को ईशान में उल्टी कर देवें, संस्रव प्राशन करावें।

प्रोक्षणी के जल से यजमान के छींटे देवें। कलश के जल से यजमान के शांत्याभिषेक कर आशीर्वाद देवें।

॥ इति गोमुख प्रसव शांति प्रयोगः ॥

॥ अथ मूलादिशान्ति प्रयोग:॥

प्रथम दिन २७ तरह के पेड़ों की पत्तियां, २७ जगह का जल, २७ तरह का अनाज, २७ जगह व चौराहे की मिट्टी, बाँस की छबड़ी कांसी का पात्र, स्वर्ण का टुकड़ा इत्यादि का संग्रह कर लेवें।

प्रयोग के दिन प्रात:काल ज्योतिपि डाकोत (डगऋषि की संतान) को सूर्योदय से पहले बुलाये । उपरोक्त सभी वस्तुओं के दो भाग कर लेवें ।

ब्राह्मण सुबह जल्दी आकर माता-पिता व जातक को बिठाकर अभिषिक्त करता है । आसन चौकी के नीचे लकड़ी का छोटा हल भी बनाकर रखते है । इसके बाद स्नान करें एवं वस्त्रों का परित्याग करें । ब्राह्मण कों कांसी की कटोरी में घी, सुर्वण, दक्षिणा डालकर देवें । तेल, तिल व अन्नादि व काला नीला वस्त्र का दान करें।

बाद में गोमुख प्रसव शांति व सूर्यपूजन (नांवण) कराकर मूलशांति हेतु हवन प्रारंभ करें। बचे हुये पेड़ों के पत्ते, जल, २७ तरह का अनाज, २७ जगह कि मिट्टी आदि आचार्य पास में रख लेवें ताकि शांति अभिषेक में काम आवे।

प्रधान हेतु अग्नि वेदी के पूर्व में श्वेत वस्त्र पर चावलों से स्वस्तिक बनायें । हरे रंग हेतु मूंग, लाल रंग हेतु मसूरदाल, काले रंग हेतु उड़द एवं पीले रंग हेतु चने की दाल का प्रयोग करें। अथवा चावलों को रंग लेवें। मध्य में श्वेत पुञ्ज रखें। चारों दिशाओं मे चार एवं मध्य में एक कलश रखें। पूर्व में लाल रंग की रेखा, दक्षिण में काले रंग, पश्चिम में पीले रंग व उत्तर में हरे रंग की रेखा खींचे।

नक्षत्रों के अधिपति भद्रपीठ हेतु पांच रंगों से, एक अष्टदल बनाकर उसके बाहर २४ दलों का पद्म बनायें एवँ उसके बाहर तीन परिधि इन्द्रादिलोकपालों हेतु बनायें।

अगर प्रधान व नक्षत्रों के अलग-अलग पीठ नहीं बनायें हो तो नक्षत्र भद्रपीठ पर प्रधान का कलश रखें। चारों दिशाओं में चार कलश रखें एवं शतछिद्र कलश प्रधान के पास में रखें। यजमान सत्पनीक पूर्वाभिमुख होकर शुभ आसन पर बैठे।

ब्राह्मण भद्रसूक्त व शांतिपाठ कर गणपति स्मरण करें।

संकल्प - **ॐ अद्येत्यादि मम अस्य बालकस्य मूल जनन सूचित सर्वारिष्ट निरसन द्वारा जातकस्य नैरुज्यदीर्घायु पुष्टि धन धान्य समृद्धि हेतवे श्री परमेश्वप्रीत्यर्थं स नवग्रहमखां मूलजनन शान्तिं करिष्ये। तदंगभूतं**

गणपति पूजनं, पुण्याहवाचनं, मातृका पूजनं, वसोर्द्धारा, नान्दीश्राद्धं, ब्राह्मणवरणं, पंचगव्यकरणं, ग्रहमख पूजनसहिते हवनादि कर्म चाहं करिष्ये।

दिक्रक्षण गणपति पूजन से अग्नि स्थापन पर्यन्त सब कार्य करें। **मूलाधिष्ठित प्रधान देव रुद्र है। स्वस्तिक पीठ** के मध्य में कलश रखें, उस पर पूर्ण पात्र रखकर रुद्र की मूर्ति अग्न्युत्तारण करके रखें। चार कलश चारों दिशाओं में रखें। चारों के बीच में एक १०० छिद्र का अन्य कलश रखें । (सभी कलशों में जल, पेड़ों की जड़ें या पत्तियां, पंचगव्य, पंचरत्न, सप्तमृत्तिका, कुशा, सप्तधान्यादि डालें)

मध्य कलश में रुद्र का आवाहन करें-

वृषभे च समाशीनं वरदाभयपाणिनम् ।
शुद्धस्फटिक-संकाशं श्वेतमाल्यांबरान्वितम् ॥

त्र्यंबक मंत्र से आवाहन करें। हाथ जोड़े-

हे त्र्यंबक महादेव! त्रायस्व शरणागतम् ।
जन्ममृत्यु जराव्याधि पीड़ितं कर्म बंधनैः ॥

शिव की पूजा करें। **नमस्ते रुद्रमन्यव ....** रुद्रसूक्त का पाठ करें । चार ब्राह्मण पूर्वादिक्रम से कलशों का स्पर्श करते हुये क्रमशः **शांतिसूक्त, अग्निसूक्त, अथवा जातवेदसूक्त, रुद्रसूक्त, त्र्यंबक मंत्र** का जप करें ।

अग्निसूक्त के अभाव में निम्न मंत्र जपे

रुद्रतेज समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकौ ।
अग्नि वैश्वानरसाक्षात् तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

आयुष्यमंत्र के जाप, **शिव महिम्न, रुद्रपाठ, शुक्रादि स्तुति पाठ एवं मृत्युंजय** मंत्र का जप ब्राह्मण करें।

सौ छिद्र वाले घट में देवदारु, छलीरा, कमल, वच, लोध, कांगनी, जलद, सफेद सरसों, धात्रीफल, नगर, हल्दी, जटामांसी, पुर उशीर, चंदन व कुष्ठ डालें।

पश्चात् **अष्टदल, चतुर्विंशतिदल एवं भूपूर युक्त भद्रपीठ** पर मध्य में एक कलश स्थापित करें, पूर्णपात्र रखें उस पर **नैऋति** की मूर्ति रखें एवं आवाहन करें - कलश में शतौषधी, या २७ औषधी डालें अभाव में **विष्णुक्रांता, सहदेवी, तुलसी शतवारी, वच, कुष्ठ, सुष्ठी, चम्पक, एवं मुस्ता डाले**। २७ जगह का जल भी डालें। (**पूर्व कलश में** रक्त चंदन,कमलकुष्ट, प्रियंगु, शुंठी, मुस्ता,

आमलक व च सफेद सरसों मुरामांसी अगर उशीर डाले) **नमस्ते रुद्रमन्यव** का जप करें।

दक्षिणकुंभ में पंचामृत, गजमद तीर्थोदक, सप्तधान्य डाल कर **''आशु शिशानादि''** ऋचा पढ़े। **पश्चिम कुंभ** में सप्तमृत्तिका डाले **'कृणुष्वाज:'** आदि ५ मंत्र पढ़े। **उत्तर कुंभ** में पंचरत्न वट, पीपल, पलाश, प्लक्षउदम्बर के पत्ते ड़ालें। आम, जामुन के पत्ते ड़ालें। **मध्य कलश में** (या १०० छिद्र वाले कलश में) शतौषधि डाले अभाव में विष्णु क्रातांदि औषधि डाले)

नक्षत्राधिपति भद्रपीठ पर मूलादि देवों का आवाहन करें।

मूल देवं विरूपाक्षो श्यामं कुणपवाहनम् ।
खड्गखेटधरं चोग्रं द्विभुजं च वृकाननम् ॥
आवाहयामि देवेशं मूलदेवं महाबलम् ।
देवदेव गणाध्यक्षमूलमावाहयाम्यहम् ॥

पश्चात् मूलनक्षत्राधिष्ठित नैर्ऋत्य का आवाहन करें -

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामान्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

मूल नक्षत्राधिष्ठित निर्ऋते इहा गच्छ इहतिष्ठ ॥१॥

फिर देव के दक्षिण याने कर्ता के वाम भाग में मूल नक्षत्र से पूर्व के नक्षत्र जेष्ठाधिपति इन्द्र का आवाहन करें-

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारइन्द्ँहवे हवे सुहव: शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवाधात्विन्द्र ॥

ॐ ज्येष्ठाधिष्ठित इन्द्र इहा० इहतिष्ठ ॥२॥

देवराज गजारूढ पुरंदर शतक्रतो ।
वज्रहस्त महाबाहो वांछितार्थप्रदोभव ॥

बाद में देव के वाम भाग अर्थात् कर्ता के दक्षिण भाग में मूलनक्षत्र के आगे के नक्षत्र पूर्वाषाढाधिष्ठित वरुण का आवाहन करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि : ।
अहेडमानो वरुणे हबोद्ध्युरुशँसमान आयु: प्रमोषी: ॥

आवाहयामि देवेशं वरुणं त्वं जलाधिपम् ।
यादः पृष्ठ समारूढं श्वेतच्छत्रं महाबलम् ॥

ॐ पूर्वाषाढाधिष्ठित वरुण इहा० इह० ॥३॥

अब शेष बचे २४ नक्षत्रों के अधिपतियों के लि॰ २४ दल के पद्म में आवाहन करें। पूर्वाषाढ़ा के बाद उत्तराषाढ़ा से लेकर अनुराधा के अधिष्ठित देवों का पूर्वादिक्रम से आवाहन करें ।

उत्तराषाढ़ाधिष्ठित विश्वेदेवा इहागच्छ इहतिष्ठ ॥१॥ श्रवणाधिष्ठित विष्णो इह० इहतिष्ठ ॥२॥ धनिष्ठाधिष्ठित अष्टवसवः इहा० इह० ॥३॥

शतभिषाधिष्ठित वरुण इहा० इह ॥४॥ पूर्वाभाद्रपदाधिष्ठित अजैकपाद इहा इह० ॥५॥ उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्य इहा० इह० ॥६॥

रेवत्यधिष्ठित पूषन् इहा० इह० ॥७॥ अश्विन्यधिष्ठित अश्विनौ इहा० इह० ॥८॥ भरण्यधिष्ठित यम इहा०इह० ॥९॥ कृत्तिकाधिष्ठित अग्ने इहा० इह० ॥१०॥

रोहिण्यधिष्ठित प्रजापते इहा० इह० ॥११॥ मृगशीर्षाधिष्ठित सोम इहा० इह० ॥१२॥ आर्द्राधिष्ठित रुद्र इहा० इह० ॥१३॥ पुनर्वस्वधिष्ठित अदिते इहा० इह० ॥१४॥ पुष्याधिष्ठित बृहस्पते इहा०इह० ॥१५॥ आश्लेषाधिष्ठित सर्प इहा० इह० ॥१६॥ मघाधिष्ठित पितरः इहा० इह० ॥१७॥ पूर्वाफाल्गुन्यधिष्ठित भग इहा० इह० ॥१८॥ उत्तराफाल्गुन्यधिष्ठित अर्यमान्निहागच्छ इह तिष्ठ ॥१९॥ हस्ताधिष्ठित सूर्य इहा० इह० ॥२०॥ चित्राधिष्ठित त्वष्टः इहा०इह० ॥२१॥ स्वात्यधिष्ठित वायो इहा० इह० ॥२२॥ विशाखाधिष्ठितौ इन्द्राग्नी इहागच्छतं इह तिष्ठम् ॥२३॥ अनुराधाधिष्ठित मित्र इहा० इह० तिष्ठ ॥२४॥

परिधि में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि देवों का आवाहन करें ।

पूर्व - **इन्द्राय नमः।** आग्नेये- **अग्नये नमः।** दक्षिणे - **यमाय नमः ।** निर्ऋत्ये - **निर्ऋतिये नमः।** पश्चिमे - **वरुणाय नमः।** वायवे - **वायव्ये नमः।** उत्तरे- **कुबेराय नमः।** ऐशान्ये - **ईशानाय नमः ।** इन्द्र ईशानयोमध्ये -**ब्रह्मणे नमः।** वरुण निर्ऋतियोर्मध्ये - **अनंताय नमः ।**

भो इन्द्रादि लोकपाल देवेभ्यो सांगायै सपरिवारायै, सवाहनायै,

सायुधायै इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ मनोजूति० मंत्र से प्रतिष्ठा करें ।

एह्ये हि रक्षोगण नायकत्वं विशाल वैताल पिशाच संघैः ।
ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वरस्तं भगवन नमस्ते ॥

ॐ निर्ऋत्याद्यावाहित देवेभ्यो नमः।

सब देवताओं का षोडशोपचार पूजन करें। दधि, दूर्वा, कुंकुम, अक्षत, सुपारी, कुशा, एवं जल एक पात्र में डालकर अर्घ देवें।

अयोने भगवन् भर्गलाला स्वेदाश्च संभवः ।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं मूलस्वामिन् नमोऽस्तुते ॥

प्रार्थना करें -

सर्व प्रेताधिपो देवो नैऋत्यो नील विग्रहः ।
खड्गचर्मधरो देवो नैर्ऋत्याधिपतये नमः ॥

नवग्रह पीठ पर नवग्रहों एवं अधिदेवता प्रत्यधि देवों का पूजन करें, हवनादिकर्म करें।

पश्चात् -**प्रजापते स्वाहा । इदंप्रजापते न मम ॥ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम । अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम। सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम ॥ ॐ अग्नि स्विष्टकृते स्वाहा। इदं स्विष्टकृते न मम॥**

फिर अग्नि का पूजन करें - **ॐ शांति के वरदनाम्ने वैश्वानराय नमः ॥** समिद्, पायस, घृत, तिलादि से ग्रह होम, अधिदेवता प्रत्याधिदेवता एवं प्रधान हेतु होम करें।

ब्राह्मण **आयुष्य मंत्रों** का पठन **मृत्युञ्जयजप, शांतिसूक्त, रुद्रसूक्त** पाठ करते रहें।

मूल नक्षत्र हेतु निम्न मंत्र से १०८ आहुति देवें -

ॐ मातेवं पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि७स्वेयोनावभारुषा ।
तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥

ॐ मूलाय स्वाहा । इदं मूलाय न मम ॥

इसके बाद ८ आहुति मंत्रोक्त देकर बाद में "**ॐ मूलाय स्वाहा**" नाम मन्त्र से दे सकते है।

पश्चात्- "**ॐ निर्ऋतये स्वाहा**" की १०८ आहुतियाँ, **इन्द्राय स्वाहा** की

२८ आहुतियां, **वरुणाय स्वाहा** की २८ आहुतियां देवें ।

शेष २४ नक्षत्राधिष्ठित देवों की प्रत्येक की ८-८ आहुतियां देवें। **पूर्वाषाढा** से लेकर **अनुराधाष्ठित** देवों की नामावलि में **प्रारंभ में ॐ** जोड़ कर तथा **अंत में स्वाहा** बोलकर घृत पायस तिलादि से होम करें । यथा -

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विष्णवे.। वसुभ्य.। वरुणाय.। अजैकपदे.। अहिर्बुध्नाय.। पूष्णे.। अश्विभ्यां.। यमाय.। अग्नये.। प्रजापतय.। सोमाय.। रुद्राय.। अदितये.। बृहस्पतये.। सर्पाय.। पितृभ्य.। भगाय.। अर्यम्णे.। सवित्रे.। त्वष्ट्रे.। वायवे.। इन्द्राग्निभ्यां.। मित्राय.।

इन्द्रादि दश लोकपालों हेतु प्रतिद्रव्य एक आहुति देवें ।

यथा - **ॐ इन्द्राय स्वाहा.। अग्नये.। यमाय.। निर्ऋतये.। वरुणाय.। वायवे.। सोमाय.। ईशानाय.। ब्रह्मणे.। अनन्ताय.।**

पश्चात् कृशरपायस याने खीर मावा में तिल,घृत, शक्कर डालकर प्रत्येक देवता हेतु ८-८ आहुतियां देवें।

ॐ निर्ऋतये स्वाहा । सवित्रे.। दुर्गायै.। वास्तोष्पतये.। अग्नये.। क्षेत्राधिपतये.। मित्रावरुणाभ्यां.। रुद्राय.।

श्रीः हेतु समिद आज्य व चरु द्रव्य से होम करें। **'ॐ श्रिये स्वाहा।'**

सोम के लिये पायस द्रव्य से १३ आहुतियां देवें। यथा- **ॐ सोमाय स्वाहा** स्रुव से शुचि को घी से भरकर एक आहुति देवें **ॐ रुद्राय स्वाहा।**

श्रीसूक्त से लक्ष्मी होम करें। गुगल से मृत्युजय व दुर्गा होम करें। रोग व शत्रुनाश हेतु सरसों से होम करें।

प्रायश्चित् होमः - ॐ भुर्भुवः स्वः इत्यादि व्याहृतियों २८ आहुति देवें। **ॐ भूःस्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।**

इनकी ७ आवृत्ति करने पर २८ आहुति हो जायेगी ।

मृडनाम्ने वैश्वानराय नमः से अग्नि का पूजन करें।

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ।इदमग्नये से स्विष्टकृते न मम॥ फिर ९ आहुतियाँ देकर दिक्पालों की बलि देवें । यथा-

भूः स्वाहा इदं अग्नये न मम॥ से प्रारंभ कर **प्रजापतये स्वाहा** तक ९

आहुतियां देवें। (मंत्र गोमुख प्रसव शांति में पूर्णाहुति समय दिये है)

अग्नि वेदी के चारों ओर दशों दिशाओं में **इन्द्रादि दिक्पालों हेतु बलि प्रदान करें।** दिशाओं के देवों का आवाहन करें, बलि का पूजन करें। बलि एवं नैवेद्य अर्पण करें।

इन्द्रादि दिग्पालेभ्यः सांगाय, सपरिवाराय सायुधं इमान् समाष बलि सदीप नैवेद्यं समर्पयामि ।

भो इन्द्रादि दिग्पाला दिशो रक्ष बलिं भक्षय मम सपरिवारस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता, तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता कल्याण कर्ता वरदो भवतः।

इसके बाद पूर्णाहुति होम कर संस्रुवप्राशन कराये । पूर्ण पात्रादि दान कराये। प्रणिता को ईशान कोण में उल्टी करें ।

टिप्पणी : – बहुत से प्रांतों में इस समय गोमुख प्रसव हेतु गोमुखाकार सरकंडों या मोली में बालक को ३ या ७ बार निकालते हैं, काले मटके में १३ किलो या २७ किलो अनाज भरकर १३ मीटर या २७ हाथ वस्त्र में लपेटकर यजमान उस का मूसल से छेदन कंसवध की भावना रखते हुये करते हैं। वह अनाज, वस्त्र विप्र को दान देवें । इसके पश्चात २७ कुओं के जल व पत्तों से जातक व माता-पिता का अभिषेक करते हैं। गोमुख प्रसव की भावना इस समय की है अतः नांवण भी इसके बाद करते है । परन्तु यह मूल सिद्धान्त से भिन्न है गोमुख प्रसव व अन्न दान होम से पहिले करा ले । अन्नदान हवन बाद भी किया जा सकता है ।

अभिषेक – शतछिद्र या सहस्त्रछिद्र वाला कलश लेवें उसमें औषधियां रखे , २७ तरह का अनाज व मृत्तिका डालें। पत्नि को वाम भाग में बिठावे बालक को माता गोद में लेवें । एक कंबल यजमान दंपत्ति एवं बालक पर आच्छादित करें। शतछिद्र कलश में पंचगव्य, गंगाजल डालें। २७ जगह का जल जो पूजन के कलशों में भरा था सब संग्रहीत कर शतछिद्र कलश में डालते हुये मूलदोष नाश हेतु अभिषेक मंत्र पढ़े ।

''आपोहिष्ठा मयोभुवान.'' तीनों ऋचायें बोलें । इसके बाद पौराणिक मंत्रों से अभिषेक करें।

॥ मूल दोषशान्ति मन्त्रा: ॥

योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहन : ।
मूलजातं शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥१॥

योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ् मेषवाहनः ।
सप्तजिह्वश्चदेवोऽग्निर्मूलदोषं व्यपोहतु ॥२॥
योऽसौ दंडधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ।
मूलजातं शिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम ॥३॥
योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः ।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गंड़ान्तसंभवम् ॥४॥
योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ।
नक्रवाहः प्रचेतानो मूलदोषं व्यपोहतु ॥५॥
योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः ।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः ॥६॥
योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः ।
मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ॥७॥
योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ।
मूलादिसर्वगंडान्तं दोषमाशु व्यपोहतु ॥८॥
विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः ।
सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः ॥९॥
मूलनक्षत्रजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च ।
भ्रातृज्ञातिकुलोत्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु ॥१०॥
पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा ।
मूलनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबांधवान् ॥११॥

दोष शांति के मंत्रों के बाद आशीर्वादात्मक एवं रक्षात्मक मंत्रों से अभिषेक करें।

॥ अभिषेक मन्त्राः ॥

सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः ।
वासुदेवोजगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमौ वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणाऽनन्तसहिता दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिःश्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः ॥
एतास्त्वामभिषिंचन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥४॥
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीवसितार्कजाः ।
ग्रहास्त्वामभिषिंचन्तु राहुकेतुश्च तर्पिताः ॥५॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥६॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥७॥
सरितः सागराः शैलस्तीर्थानि जलदानदाः ।
एते त्वामभिषिंचन्तु सर्व कामार्थसिद्धये ॥८॥
सहस्राक्षं शतधारमृषिभिः पावनं कृतम् ।
तेन त्वामभिषिंचामि पावमान्यः पुनन्तु ते ॥९॥
भगं ते वरुणो राजा भगं सूर्यैः बृहस्पतिः ।
भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो दधुः ॥१०॥
यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यश्चमूर्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णो रापो निघ्नन्तु ते सदा ॥११॥

छायापात्र दानम् - कांसी के पात्र में घृत व तैल डालें जातक एवं माता पिता उसमें अपने मुख का अवलोकन कर सदक्षिणा विप्र को दान करें। अन्नदान तिलदान वस्त्रदान कर ब्राह्मण भोजन करायें ।

॥ इति मूलशांति प्रयोगः ॥

॥ अथ ज्येष्ठाशांति प्रयोग:॥

मूलशांति की तरह ही पहले गोमुख प्रसव शांति करायें । स्वस्तिक पीठ बनाकर उसके चारों और चार कलश तथा मध्य में शतछिद्र वाला कलश रखे उनमें पंचगव्य, गंगाजल, सप्तमृत्तिका शतौषधि व सप्तधान्यादि का प्रक्षेप करे १३

या २७ जगह का लाया गया जल डालें।

नक्षत्र अधिष्ठित देवताओं के लिये अष्टदल एवं २४ दल का पद्म परिधि युक्त बनायें।

संकल्पादि कर गणेशपूजन पुण्याहवाचनादि कर वेदी पर अग्नि स्थापन करायें। नक्षत्र अधिष्ठित पीठ पर कलश रखे पूर्ण पात्र रखें उस पर इन्द्र की मूर्ति रखें । इन्द्र का आवाहन करें । अगर इन्द्र मूर्ति स्वास्तिक पीठ पर रखते हैं, तो शतछिद्र कलश नक्षत्र पीठ पर रखें।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिंद्रꣳहवे हवे सुहवꣳ शूरमिंद्रम् ।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिंद्रꣳस्वतिनो मघवाधात्विंद्रः॥

वज्रांकुशधरं देव मैरावतगजानिवत् ।
आगच्छ भगवनिंद्र स्थानेचात्र स्थिरोभव ॥

वहीं ज्येष्ठा नक्षत्र का आवाहन करें -

ॐ स इषुहस्तैः सतिषङ्गिभिर्वशीसꣳस्त्रष्टासयुध इन्द्रोगणेन।
स ᳪ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्द्ध्युग्रधन्वा प्रति हिताभिरस्ता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जेष्ठे इहागच्छेहतिष्ठ ॥

कलश के दक्षिण भाग में - **ॐ अनुराधाधिष्ठित मित्र इहा. इह तिष्ठ ॥**
कलश के वाम भाग में - **ॐ मूलाधिष्ठित निर्ऋत्ते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥**
चतुर्विंशति दल में पूर्वादि क्रम से - **पूर्वाषाढाधिष्ठित वरुण इहा. इह तिष्ठ** से प्रारंभ कर **विशाखाधिष्ठितौ इद्राग्नी इहागच्छतम् इह तिष्ठतम्** तक का आवाहन मूलशांतिवत् करें।

पीठ देवों का पूजन कर इन्द्र का अर्घ देवें ।

नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते ।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं गण्डदोष प्रशान्तये ॥

स्वस्तिपीठ पर मध्य कलश में **तत्वायामि ब्रह्मणा** मंत्र से आवाहन करें ।

पूर्व कलशे -

ॐ त्वंनो अग्ने तव देव पायुभिर्मघानो रक्षतन्वश्चवंद्य ।
त्राता तोक कस्य तनये गवामस्य निमेषऽरक्षमाणस्तव व्रते ॥

दक्षिण कलशे -

ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठोअस्या उषसो व्युष्टौ ।
अवयक्ष्व नो वरुणऽरराणो वीहि मृडीकऽसुहवो न एधि ॥

पश्चिम कलशे - **समुद्रोसिनभया समुद्र ज्येष्ठा** मंत्र से आवाहन करें।

अथवा -

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँऽदारदुवाऽशुनासममृतत्व मानद् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानामृतस्य नाभिः ॥

उत्तर कलशे -

इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं स च तापरुष्णया ।
असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये श्रृणुहयासुषोमया ॥

वरुण मंत्रों से प्रतिष्ठित कर सब कलशों का पूजन करें। ब्राह्मण **शांतिसूक्त, अग्निसूक्त, रुद्रसूक्त** का पाठ करें । **मृत्युञ्जय मंत्र** का जप करें।

पश्चात्- ग्रह पूजन होम अभिषेकादि समस्त कर्म मूलशांतिवत् करें। इन्द्र मंत्र एवं ज्येष्ठा मंत्र की १०८ आहुति देवें। **मित्राय स्वाहा** एवं **निर्ऋतये स्वाहा** की २८ आहुति देवें। बाकी जो २४ दल पद्म के देवता है उनकी ८-८ आहुति एवं दिक्पालों की १-१ आहुति देकर शेष कार्य मूलशांतिवत् करें। अभिषेक श्लोकों में मूलदोषं व्यपोहतु की जगह **'ज्येष्ठादोषं व्यपोहतु'** कहें।

|| इति ज्येष्ठा शांति प्रयोग: ||

|| अथ आश्लेषाशांति प्रयोग:||

गोमुख प्रसवशांति करायें। पुनः यजमान संकल्प कर गणेश पूजन, पुण्याहवाचनादि कर्म कराकर अग्नि स्थापन करें। स्वस्तिक पीठ एवं अष्टदल चतुर्विंशतिदल परिधि युक्त प्रधान पीठ बनायें। मूल शांतिवत् पूजा विधान करें।

स्वस्तिक पीठ के मध्य में एक कलश तथा चार कलश चारों दिशाओं में रखें। मध्य कलश में रुद्र का आवाहन करें। ब्राह्मण सभी कलशों का स्पर्श करें।

मध्य कलश के स्पर्श करते समय **नमस्ते रुद्र मन्यव** पूरे अध्याय का पठन करें एवं पूर्व कलश को **आशुः शिशान** (अप्रतिरथ सूक्तं) से, **दक्षिण कलश** को **शांति सूक्त** से, **पश्चिम कलश** को **अग्निसूक्त** एवं **उत्तर कलश** को

कृणुष्वपाज सूक्त को पढ़ते हुये स्पर्श करें। कलशों में जल, औषधी अन्नादि प्रक्षेप करें। रुद्र पूजनकलशार्चन करें।

दूसरे नक्षत्र पीठ पर मध्य में एक कलश स्थापित कर उस पर प्रधान देव **सर्प की मूर्ति** रखें। (स्वस्तिक पीठ पर भी रख सकते हैं।) आवाहान करें-

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आश्लेषा नक्षत्राधिष्ठित सर्पाय नमः, सर्पं इहागच्छ इहतिष्ठ।

कलश के दक्षिण भाग में- **पुष्याधिपति बृहस्पति इहा. इह.।**

कलश के वाम भाग में- **मघाधिपतिं पितृन् इहा. इह.।**

अष्टदले - अष्टदल में पूर्वादि क्रम से अष्टनागों का पूजन करें।

ॐ अनंताय नमः। वासुकये.। तक्षकाय.। कर्कोटकाय.। पद्माय.। शेषाय.। कंवलाय.। शंखपालाय.। चतुर्विंशति दले - पूर्वादिक्रमेण (मूल शांति विधान की तरह)

'**पूर्वाफाल्गुन्यधिष्ठित भग इहा गच्छ इह तिष्ठ** ' से प्रारंभ कर **पुनर्वस्व-धिष्ठित अदिते इहा इह** तक आवाहन करें।

देवों का आवाहन करें। परिधि में **इन्द्रादिदिक्पालों** का पूजन करें। पीठ देवताओं का पूजन कर अर्घ देवें।

पश्चात् ग्रह पूजन होम विधान करें।

प्रधान देव '**सर्प**' की '**नमोस्तु' सर्पेभ्यो०** 'मंत्रों' से १०८ आहुतियाँ देवें।

पुष्प अधिष्ठित बृहस्पति की '**बृहस्पति अति यदर्यो०** मंत्र से २८ तथा मघाधिपति पितर हेतु '**ॐ पितृभ्य स्वाहा**' या **उदीरता०** मंत्र से २८ आहुति देवें।

'**ॐ भगाय स्वाहा**' से '**ॐ अदितये स्वाहा**' तक के देवों की ८-८ आहुति देवे। दिक्पालों की भी ८-८ आहुति देवें। अष्टनागों की १-१ आहुति देवें।

पायस में तिल मिलाकर ८-८ आहुतियां देवें।

ॐ निर्ऋतये स्वाहा। सवित्रे स्वाहा.। रुद्राय.। दुर्गायै.। वास्तोस्पतये.। अग्नये.। क्षेत्राधिपतये.। मित्र वरुणाभ्यां.। अग्नये स्वाहा ।

पायस होम करें -

श्रियै स्वाहा। (अष्टाहुति) सोमाय स्वाहा । (अष्टाहुतिं दद्यात्) । इसके बाद लक्ष्मी होम, गुग्गलु होमादि विधान एवं अभिषेकादि समस्त कर्म मूल शांतिवत् करे।

अभिषेक समय कहें - **आश्लेषा दोष व्यपोहतु।**

॥ इति आश्लेषा शान्ति प्रयोगः ॥

॥ अथ मघाशान्ति प्रयोगः॥

विधान मूलशान्ति की तरह ही करें। प्रधान देवता पितर है। अतः पितर की मूर्ति बनाकर मध्य कलश में या स्वस्तिक पीठ पर रखें। निम्न मंत्र से आवाहन करें।

मंत्र - **पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्तः पितरः पितर शुन्धध्वं स्वाहा।**

ध्यानम्—

पितरः कृष्णवर्णाश्च चतुर्हस्ता विमानगाः ।
यष्ट्याक्ष सूत्र कमण्डलुमयस्यैव धारिणः ॥

भो मघाधिष्ठित पितरः इहागच्छ इह तिष्ठत ॥

कलश के दाहिनी ओर (अधिदेवता) **''आश्लेषाधिष्ठित सर्प इहा इह तिष्ठ''।**

मंत्र-

नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
येऽन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पभ्यो नमः ॥

कलश के बाँयी ओर (प्रत्यधि देवता) **पूर्वाफाल्गुन्यधिष्ठित भगः इहागच्छ इह तिष्ठ।**

ॐ भगं प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः। भगं प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम स्वाहा।

पूर्वादि कलशों एवं शतछिद्र कलश में यथोक्त औषधियाँ ड़ालें।

पश्चात् मध्यकुम्भ से पूर्वादि क्रम से २४ दल पद्म में **उत्तराफाल्गुन्यधिष्ठित**

अर्यमा से प्रारंभ कर **पुष्याधिष्ठित बृहस्पति** तक आवाहन करें पूजा होम, **अभिषेक,** दान मूल शान्तिवत् करायें।

॥ इति मघा शान्ति प्रयोग: ॥

॥ अथ रेवती शांति प्रयोग:॥

स्वस्तिक पीठ पर पूषा की मूर्ति रखें। अष्टदल चतुर्विंशति दल का परिधियुक्त अन्य पीठ मण्डल बनायें। उसके मध्य में १०० छिद्र का कलश चारों दिशाओं में चार कलश रखें। चार कलश स्वस्तिक पीठ पर प्रधान के साथ रखें तो भी उत्तम हैं। पूषा का आवाहन करें -

ॐ पूषन्तव व्रते व्ययन्न कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।

ॐ रेवत्यधिष्ठित पूषन् इहागच्छ इह तिष्ठ॥

२४ दल पीठ पर (अथवा प्रधानपीठ पर यदि अलग बनाया हो तो) मध्य में पूषा का आवाहन करें। रेवती नक्षत्र का आवाहन करें। यदि दो पीठ नहीं बनायें तो एक ही पीठ पर आवाहन करें। रेवती नक्षत्र्याधिपति के आगे-पीछे के देवताओं का आवाहन करें।

मध्यकलश (शतछिद्र वाले) के दांयी ओर (अधिदेवता)-

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽस्तु मा मा हि ठं सीः। निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय स्वाहा।

ॐ उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्य इहा. इह.।

कलश के बाँयी ओर (प्रत्यधिदेवता)- **ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षितम् ॥**

ॐ अश्विन्यधिष्ठित अश्विनौ इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

शेष २४ नक्षत्रों के अधिष्ठित देवताओं हेतु २४ दल पद्म में पूर्वादि क्रम से "**भरण्यधिष्ठित यम इहा. इह.**" से प्रारम्भ कर "**पूर्वाभाद्रपदाधिष्ठित अजैकपाद इहा. इहतिष्ठ** " तक आवाहन करें।

चारों दिशाओं के कलशों का पूजन, होम, अभिषेकादि कर्म मूल शान्तिवत् करें।

॥ इति रेवती शान्ति प्रयोग: ॥

॥ अथ अश्विनीशान्ति प्रयोगः॥

मूलशांतिवत् स्वस्तिक पीठ पर नक्षत्र मण्डल बनायें।

अश्विनी नक्षत्र शांति हेतु अश्विन की मूर्ति बनायें। प्रधान कलश पर अश्विन्यधिष्ठित देव का आवाहन करें-

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीयम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा।

ॐ अश्विन्यधिष्ठित अश्विनौ इहागच्छ इह तिष्ठ।

कलश के दांयी ओर (अधिदेवता) -

ॐ पूषन्तव व्रते वयं न्न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।

ॐ रेवत्यधिष्ठित पूषन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

कलश के बांयी ओर (प्रत्यधिदेवता)-

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे स्वाहा।

ॐ भरण्यधिष्ठित यम इहा. इह.॥

शेष २४ नक्षत्रों के अधिष्ठित देवताओं का आवाहन २४ दल पद्म में पूर्वादि क्रम से- **''कृत्तिकाधिष्ठित अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।''** से प्रारम्भ कर **''उत्तराभाद्रपदाधिष्ठित अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इह तिष्ठ''** तक आवाहन करें

चारों दिशाओं के कलशों का पूजन, शान्तिजप, होम, अभिषेक एवं शेष कर्म मूल शान्तिवत् करें।

॥ इति अश्विनीशान्ति प्रयोगः ॥

॥ तिथि लग्नगण्डान्त शान्ति विषयः ॥

तिथि गंडान्त में होम शांति, नक्षत्रगण्डान्त में गाय का दान तथा लग्नगण्डान्त में स्वर्ण का दान करें । माता पिता व पुत्र का अभिषेक करें।

अन्य नक्षत्र विषये विशेष –

उत्तरेतिलपात्रं स्यातिष्ये गोदान मुच्यते ।
अजाप्रदानं त्वाष्ट्रे च पूर्वाषाढे च कांचनम् ॥

उत्तरातिष्यचित्रासु पूर्वाषाढोद्भवस्य च ।
कुर्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजा बुधः ॥
सुवर्णेन तदर्द्धेन यथावित्तानुसारतः ।
नक्षत्राधिपते रूपं कृत्वा वस्त्रद्वयान्वितम् ॥
वरुणस्यार्चनं कार्यं स्वस्तिवाचन पूर्वकम् ।
शतौषधानि रत्नानि मृत्त्वक्पल्लवसंयुतान् ॥
पूजान्ते समिदन्नाज्यैर्होमं तिलयवैस्तथा ।
ततः पूर्णाहुतिं हुत्वा वेदाध्यायि कुटुम्बिने ॥
उत्तरा प्रथमपादे तिलपात्रं तथैव च ।
तिष्ये तु गां सवत्सां सुशीलां च पयस्विनीम् ॥
अजां चित्रासु वै दद्यात्पूर्वाषाढे तु काञ्चनम् ।
यवांश्च व्रीहिमाषांश्च तिलमुदगांश्च दापयेत् ॥
यथावित्तानुसारेण कारयेद्विप्रभोजनम् ।
पितुरायुष्यवृद्धयर्थं शांतिरत्र विधीयते ॥

॥ अथ कृष्णचतुर्दशी जनन शान्तिः॥

कृष्णचतुर्दशी **तिथि प्रमाण के ६ भाग करें।** प्रथम भाग शुभ, दूसरे में पिता को अरिष्ट, तीसरे में माता को कष्ट, चतुर्थभाग में मामा को घात कष्ट, पांचवें में वंश हानि एवं छठा भाग स्वयं व वंश को हानिप्रद है। अतः शांति अवश्य करायें। शांति विधान हेतु **''रुद्र की मूर्ति बनायें''** मूल शांतिवत् शांति होम कराये । चार कलशों के जल व औषधियों से अभिषेक करें।

त्र्यंबकेन च मंत्रिणो पूजां कुर्याद्विधानतः ।
स्थापयेच्चतुरः कुंभान् चतुर्दिक्षो यथा क्रमम् ॥

१०० छिद्र का कलश स्थापित कर कलशों में धान्य, पंचामृत एवं औषधियाँ प्रक्षेप कर विधि पूर्वक शेष कर्म करें।

॥ सिनीवाली एवं कुहू जनन शान्ति प्रयोग:॥

अमावस्या के दिन जन्म हो एवं अमावस्या की कुछ घटिका शेष रहने से चन्द्रमा की कला बाकी रहने पर **सिनीवाली जन्म** कहलाता है। अमावस्या पूर्ण होने को है चन्द्रमा की कला नष्ट हो गयी है (सूर्य चंद्रमा के अंश समान होने पर) उस स्थिति में जन्म **कुहूजनन कहलायेगा ।**

उक्त समय का जन्म हानिप्रद है एवं इन्द्र की लक्ष्मी का भी हरण कर लेने जैसा प्रभावशाली है अत: शांति अवश्य करानी चाहिये ।

शांति होम अभिषेक कलश स्थापन मूलशांतिवत् करें।

तीन प्रधान देवों की प्रतिमा बनाकर उनके मन्त्रों से होम करें।

(१) रुद्र की मूर्ति बनाये।

प्रतिमां कारयेच्छंभी चतुर्भुजसमन्विताम् ।
त्रिशूलखड्गवरदाभयहस्तां यथाक्रमात् ॥
श्वेतवर्णां श्वेतपुष्पां श्वेताम्बर वृषस्थितम् ।
त्र्यम्बकेन मंत्रेण पूजा कुर्याद्यथाविधि ॥

(२) इन्द्रमूर्ति-

इन्द्रश्चतुर्भुजो वज्रांकुशचाप: ससायक: ।
रक्तवर्णो गजारूढो यतइन्द्रेति मंत्रत: ॥

(३) पितर मूर्ति-

पितर: कृष्णवर्णाश्च चतुर्हस्त विमानगा: ।
यष्टयाक्षसूत्र - कमण्डलुमयस्यैव धारिण: ॥
ये सत्या इति मंत्रेण पूजा कुर्यादनन्तरम् ।

पश्चात यथाविधि होम विधान व दानादि कर्म करें ।

॥ अथ कार्तिके स्त्रीप्रसूता शान्ति:॥

यजमान सपत्नीक ससुत पूर्वदिशा की और मुंह करके शुभासन पर विराजमान होकर संकल्प करें ।

ॐ अद्येत् सौर कार्तिकमासाधिकरणकै तत्स्वीय स्त्रीप्रसव संसूचितै

तत् कुमारैतत्पित्राद्यारिष्टोपशमन पूर्वक श्री ब्रह्म प्रभृतिदेवता प्रसादाद् आयुः सुख संपद्रक्षादि सिद्ध्यर्थं श्री ब्रह्मादिपूजनरूपां कार्तिक स्त्रीप्रसूता शांतिमहं करिष्ये।

गणेशादि पूजन करें। भद्रपीठ पर चारों दिशाओं में चार कलश स्थापित करें, उनमें देवों का आवाहन करें।

पूर्वे – ॐ एह्येहि सर्वाभरपूज्यपाद पितामहाधोक्षज पद्मजात ।
चतुर्मुखध्यानरताष्टनेत्र त्वां ब्रह्ममूर्ते भगवन्नमस्ते ॥
ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमशतश्च विवः ॥

दक्षिणे– ॐ एह्येहि नारायण चक्रपाणे लक्ष्मीपते दानववंशवह्ने ।
सुवर्णपृष्ठासन पद्मनाभ जनार्दनस्त्वं भगवन्नमस्ते
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्यपा ँ सुरे ॥

पश्चिमे – ॐ एह्येहि भो शंकर शूलपाणे गंगाधर श्रीकरनीलकण्ठ ।
उमापते भस्मविभूषितांग महेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ॥
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।

उत्तरे – ॐ दिवाकरं सहस्त्रांशु ब्रह्माद्यैरमरैः स्तुतम् ।
लोकनाथं जगच्चक्षु सूर्यमावाहयाम्यहं ॥

आकृष्णेन रजसावर्त्तमानो....... मंत्र से आवाहन करें। चार ब्राह्मणों का जप कार्य हेतु वरण करें। मृत्युंजय जप का दस हजार या लक्ष जप हेतु संकल्प करें। देवों का आवाहन अग्नि स्थापन हवनादि कर्म करें।

प्रधान देवों की आहुतियाँ देवें।

ॐ सूर्याय स्वाहा ॥१॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥२॥ ॐ विष्णवे स्वाहा ॥३॥ ॐ रुद्राय स्वाहा ॥४॥ ॐ शंभवे स्वाहा ॥५॥ ॐ ईशाय स्वाहा ॥६॥ ॐ पशुपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ शिवाय स्वाहा ॥८॥ ॐ शूलिने स्वाहा ॥९॥ ॐ महेश्वराय स्वाहा ॥१०॥ ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥११॥ ॐ शर्वाय स्वाहा ॥१२॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥१३॥ ॐ शंकराय स्वाहा ॥१४॥ ॐ चन्द्रशेखराय स्वाहा ॥१५॥ ॐ भूतेशाय स्वाहा ॥१६॥ ॐ खण्डपरशवे स्वाहा ॥१७॥ ॐ गिरीशाय स्वाहा

॥१८॥ ॐ मृडाय स्वाहा ॥ १९॥ ॐ मृत्युंजयाय स्वाहा ॥२०॥ ॐ कृत्तिवाससे स्वाहा ॥२१॥ ॐ पिनाकिने स्वाहा ॥२२॥ ॐ प्रमथाधिपाय स्वाहा ॥२३॥ ॐ उग्राय स्वाहा ॥२४॥ ॐ कपर्दिने स्वाहा ॥२५॥ ॐ श्री कण्ठाय स्वाहा ॥२६॥ ॐ शितिकंठाय स्वाहा ॥२७॥ ॐ कपालभृते स्वाहा ॥२८॥ ॐ वामदेवाय स्वाहा ॥२९॥ ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा ॥३०॥ ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा ॥३१॥ ॐ कृशानुरेतसे स्वाहा ॥६२॥ ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा ॥३३॥ ॐ धूर्जटये स्वाहा ॥३४॥ ॐ नीललोहिताय स्वाहा ॥३५॥ ॐ स्मरहराय स्वाहा ॥३६॥ ॐ भर्गाय स्वाहा ॥३७॥ ॐ त्र्यंबकाय स्वाहा ॥३८॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ॥३९॥ ॐ गंगाधराय स्वाहा ॥४०॥

त्र्यम्बक मंत्र से घृताक्त बिल्ब पत्रों से होम करें। हवनादि कर्म पश्चात् "**सुरास्त्वामभिषिंचै**" (मूल शांति प्रकरणे)मंत्रों से अभिषेक करें ।

प्रार्थना करें -

रक्ष मां पुत्रपौत्रांश्च रक्ष मां पशुबन्धनात्।
रक्ष पत्नीं पतिं चैव पितरं मातरं धनम् ॥

छाया पात्र दान करें सूर्य के अर्घदान करें।

॥ अंथ त्रिखलजनन शांति प्रयोगः ॥

तीन पुत्र बाद एक कन्या या तीन कन्या बाद एक पुत्र हो तो माता पिता एवं कुल या स्वयं के लिये हानि कारक होता है। अतः शांति प्रयोग अवश्य करायें।

संकल्प - ॐ अद्येत्यादि मम सुतत्रयजन्मान्तरं कन्या जनन (वा कन्यत्रय जन्मान्तरं पुत्र जन्म) सूचित सर्वारिष्टनिवृत्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं त्रिक्प्रसव शांतिं करिष्ये।

गणेशादि पूजन करें। ऐशान दिशा में **वरुण कलश** स्थापित करें। भद्रपीठ पर मध्य में रुद्रकलश रखें।

पूर्व दिशा में **ब्रह्म कलश**, दक्षिण दिशा में **विष्णु कलश**, पश्चिम दिशा में **इन्द्र कलश**, और उत्तर दिशा में **ईश कलश** की स्थापना करें। पश्चात् देवों का आवाहन करें -

पूर्वे –

ॐ पद्मपत्रासनस्थश्च ब्रह्मकायश्चतुर्मुखः ।
अक्षमालाध्रुवं विभ्रत पुस्तकं च कमण्डलुम् ॥
पद्मयोने चतुमूर्ते वेदव्यास पितामह ।
आयाहि ब्रह्मलोकात्त्वं तस्मै ब्रह्मात्मने नमः ॥

"ॐ ब्रह्मजज्ञानं" मंत्र से पूजन करे ।

प्रार्थना करें –

ॐ कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्मुख ।
जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ॥

दक्षिणे –

ॐ सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्थल कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णु शिरसा चतुर्भुजम् ॥
ॐ एह्येहि नीलाम्बुजपादपद्म श्रीवत्सवक्षः कमलाविधेय ।
सर्वामरैः पूजितपादपद्म गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्यपार्ठसुरे ॥ इस मंत्र से पूजन करें।

प्रार्थना करें –

ॐ योऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
पुष्प बद्धरते नित्यं तस्मै देवं नमो नमः ॥

पश्चिमे –

चतुर्दन्तो गजारूढो वज्रपाणि पुरन्दरः ।
शचीपतिस्तु ध्यातव्यो नानारत्न विभूषितः ॥
एह्येहि सर्वामर-सिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश ।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते ॥
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रऽहवे हवे सुहव ऽशूरमिन्द्रं ।
हवयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रऽस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥

पूजनोपरान्त प्रार्थना करें -

ॐ भगवन्तो गजारूढा वज्रहस्ताः सुराधिपः ।
पूर्वावकाशा युष्माभिः रक्षणीया प्रयत्नतः ॥

उत्तरे -

शुद्धस्फटिकसंकाशं गौरीशं वृषवाहनम् ।
वरदाभय शूलाक्ष - सूत्रधृक्परमेश्वरम् ॥
एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलनिस्त्रिंश खट्वांगधरेणसार्धम् ।
लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषपतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेवयं ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

पूजनोपरान्त प्रार्थना करें -

रक्षां मे कुरु देवेश त्रिनेत्राय त्रिशूलने ।
वृषभध्वजाय यज्ञाय नक्षत्रपतये नमः ॥

मध्यकलशे -

दक्षोत्सङ्गनिषण्णकुञ्जरमुखं प्रेम्णा करेण स्पृशन्
वामोरुस्थित वल्लभांकनिलयं स्कन्दं परेणामृशन् ।
इष्टाभीतिमनोहरं करयुगं बिभ्रत् प्रसन्नाननो ।
भूयान्नः शरदिन्दु सुन्दरतनुः श्रेयस्करः शङ्करः ॥
एह्येहि शंभो करशूलपाणे गंगाधर श्रीधर नीलकण्ठ।
उमापते भस्म विभूषितांग महेश्वर त्वं भगवन्ननमस्ते ॥
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥

पूजन के पश्चात् प्रार्थना करें -

शिवकान्त शंभो शशाङ्कार्धमौले, महेशान शूलिन् जटाजूट धारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्व रूप, प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥

४, ५ ब्राह्मणों का ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, ईशान, एवं रुद्र मंत्र के जप कार्य हेतु वरण करें।

पश्चात् इन देवों के मंत्रों से हवन करें। कलशों के जल से यजमान का अभिषेक करें।

प्रार्थना करें -

विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा पिनाकी वृषवाहनः ।
त्रिखलजात शिशोर्दोषं व्यपोस्तु यमस्तथा ॥
योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ् मेषवाहनः ।
सप्तजिह्वः स देवोऽग्निस्त्रिखलदोषं व्यपोहतु ॥

अभिषेक से निवृत्त होकर यजमान तीर्थोदक से स्नान करें। मृद्भाण्ड में अन्न भरें उस पात्र को पिता पैर के प्रहार से खंडित करें और अन्न का दान कर देवें ।

शिशु को यज्ञ काष्ठ से निर्मित गजपृष्ठ पर बैठाकर स्नान करायें शिर पर छत्र धारण करायें।

मंत्रों यथा -

ॐ आतपत्र पवित्राणां नृपाणां कीर्तिवर्धनम् ।
पाहिमां सुदृढच्छत्र सागरामृतसंभव ॥

शिशु का तीन बार चुम्बन करें । तीन अन्न पात्र, तीन वस्त्र, तीन धातु, तीन तिल पात्र का दान करें। सूर्य के अर्घदान करें।

॥ इति त्रिखलजनन शांति प्रयोगः ॥

॥ अथ यमलजनन शांति प्रयोगः॥

काशी खण्ड में यमल जनन तीन तरह का माना है। १. दो पुत्र एक साथ, २. दो कन्या एक साथ, ३. एक कन्या एक पुत्र।

तस्य फलम् -

एक लिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ ।
पित्रोविध्नकरौ ज्ञेयो तत्र शांतिर्विधीयते ॥

विधानम् - पीपल वृक्ष की चौकी पर चावलों से स्वस्तिक बनाये । उस पर अश्विनी कुमारों की अश्व मूर्तियां स्थापित कर पूजन करें। लालपुष्प, लालचंदन से पूजा कर षोडशोपचार पूजन करें।

यस्मै त्व सुकृते जातवेद मंत्र से पूजन होम करें।

खीर व घी से उपरोक्त मंत्र की १००८ आहुति देवें अथवा **करोतु सा न**

शुभहेतुरीश्वरी ।शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापद॥ मंत्र की आहुतियां देवें।

शांतिपाठ, सूर्यसूक्त, विष्णुसूक्त का पाठ करें। तथा **वैश्वदेवी** की कथा करके यजमान मूर्ति का दान करें।

मूर्तिदान समय अश्विनी कुमारों से प्रार्थना करें -

अश्वरूपौ महाबाहू अश्विनौ दिव्य चक्षुषौ ।
अनेन वाजिदानेन प्रीयेतां मे यशस्विनौ ॥

दान मंत्र-

आचामर्य: प्रथमो वेधा विष्णुस्त सविताभग: ।
दस्र मूर्ति प्रदानेन प्रीयतामाश्विनौ भग: ॥

इसके बाद आचार्य माता-पिता का अभिषेक करें।

(इति यमलजनन शांति प्रयोग:)

॥ अथैकनक्षत्र जनन शांति प्रयोग : ॥

पिता पुत्र - दो भाई बहिनों या बान्धव एक नक्षत्र में उत्पन्न होते है तो पहिले पैदा हुये का नाश होता है अत: शांति प्रयोग करना चाहिये।

एक नक्षत्र में जन्म होने पर जन्म नक्षत्र की शांति विधान से **नक्षत्र के देवता** अधि-प्रत्यधि देवता का पूजन करना चाहिये। **विष्णु एवं शिव की मूर्ति बनाकर** पूजन करें। नक्षत्रमंत्र, विष्णु एवं शिव के मंत्रों से हवनादि कर्म करके मूर्ति का दान करें।

दान मंत्र -

विविधस्यास्य विश्वस्य पितरौ विश्वतोमुखौ ।
प्रीयेतां मूर्तिदानेन देवौ हरिहराबुभौ ॥

हवन के बाद दान, दान के पश्चात् अभिषेक एवं अभिषेक के बाद विष्णु व शिव मंदिर में यथा विधि पूजन कर ब्राह्मण को भोजन करायें ।

॥ इति एकनक्षत्रजनन शांति प्रयोग : ॥

॥ अथ वैधृति शांति प्रयोग: ॥

गोमुख प्रसव शांति विधान करके वैधृति शांति प्रयोग करना चाहिये।

संकल्प - **अद्येत्यादि - अस्य शिशोवैधृति जनन सूचित -सर्वारिष्टशांति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं वैधृति जनन शान्तिं करिष्ये।**

गणपति पूजन अग्निस्थापन ग्रह पूजन करें। वेदी के पूर्व की ओर भद्र पीठ पर कुंभ स्थापना कर '**रुद्र की मूर्ति**' स्थापित करें।

'**नमस्ते रुद्र मन्यव**' से रुद्र का आवाहन करें।

रुद्र के बाँयी और सूर्य का आवाहन '**ॐ आकृष्णेन**' मंत्र से करें। रुद्र के दाहिनी और चन्द्रमा का आवाहन '**ॐ इमन्देवा**' मंत्र से करें।

ब्राह्मण कुंभ का स्पर्श करें तथा **रुद्रसूक्त, अप्रतिरथसूक्त, इन्दुसूक्त एवं मृत्युंजय मंत्र** का जप करें।

खीर एवं घृत से रुद्र की १०८ आहुति तथा सूर्य एवं सोम हेतु २८-२८ आहुति प्रदान करें। दान अभिषेकादि कर्म मूल शांतिवत् करें।

॥ इति वैधृतिशांति प्रयोग: ॥

॥ अथ व्यतीपातशांति प्रयोग:॥

गोमुख प्रसव शांति कर्म करके व्यतीपात शांति विधान करें।

संकल्प - **अद्येत्यादि अस्य शिशो: व्यतिपात जनन सूचित सर्वारिष्ट शांति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं व्यतीपात जनन शान्तिं करिष्ये ।**

गणेश पूजन, अग्नि स्थापन, ग्रह पूजन करें। अग्निवेदी के पूर्व में भद्र पीठ पर कलश स्थापन करे उस पर **सूर्य की मूर्ति स्थापित करें।**

'**आकृष्णेन**' मंत्र से आवाहन पूजन करें।

सूर्य के दाहिनी और '**नमस्ते रुद्र मन्यव**' से रुद्र का आवाहन एवं बाँयी ओर '**ॐ अग्निदूतं पुरोदधे**' मंत्र से अग्नि का आवाहन पूजन करें।

विप्र कलश का स्पर्श करे। '**विभ्राट**' **सूर्यसूक्त, अग्निसूक्त, रुद्रसूक्त, तथा त्र्यम्बकं मंत्र** का पाठ व जप करें। पूजा होम अनन्तर खीर व घी से सूर्य की १००८ या १०८ आहुति, रुद्र एव अग्नि की २८-२८ आहुति देकर लक्ष्मी होमादिक कर्म करके यज्ञ समापन करें।

॥ इति व्यतीपातजनन शांति प्रयोग: ॥

|| अथ अशुभकाले दन्तोत्पत्ति शांति प्रयोग: ||

व्यवहार चण्डेश्वर में कहा है कि यदि बालक प्रथम मास में दांत से युक्त हो तो स्वयं का मरण, दूसरे में छोटे भाई का, तीसरे में बहिन का, चौथे में माता का, पांचवें में बड़े भाई का मरण होता है । छठे मास में दांत निकलने पर बालक दूसरे का अन्न खाने वाला सातवें में पिता को सुख, आठवें में पुष्ट शरीर, नवें, दशवें, ग्यारहवें एवं बाहरवें में दांत आवे तो धन ऐश्वर्य की वृद्धि करते है।

ऋषि भार्गव एवं रामाचार्य के अनुसार यदि बालक का जन्म दांतों के साथ बालक का जन्म माता पिता या मामा के लिये घातक होता है।

जिस शिशु के पहिले ऊपर के दांत आते है वह बालक भी शुभ नहीं है।

अशुभ दंतोत्पत्ति का अशुभ फल सात माह के भीतर प्राप्त हो जाता है अत: शांति प्रयोग करना चाहिये।

भगवान केशव की मूर्ति बनाकर पूजा करें।

उनके लिये खीर व घी से १००० या १०८ आहुति देवे तथा **वृद्धि, सोम, समीरण, धाता, विधाता, कुलदेव और नवग्रहों के लिये २८-२८ आहुतियाँ देवें।**

यज्ञीय काष्ठ से निर्मित गजपृष्ठ पर बालक को बैठाकर स्नान कराये ऊपर छत्र धारण करे। (मंत्र त्रिखल शांति प्रयोग में दिये है) बालक का तीन बार चुंबन करें। मिट्टी अंगार, भात, दही को बालक का स्पर्श कराकर समुद्र में छोड़ें। **रुद्रयामल** में कहा है कि बालक के पहिले ऊपर के दांत निकले तो मामा के लिये क्लेश होता है। इसलिये मामा को चाहिये कि दही भात सुवर्ण चांदी ताम्र या कांसी के पात्र भरकर बालक के हाथ में रखकर बालक को देखे एवं वस्त्राभूषण बालक को देकर आलिङ्गन करें। पात्र रखने का मंत्र -

रक्ष भो भागिनेय त्वं रक्ष मे सकलं कुलम् ।
गृहीत्वा भाजन सान्नं प्रसन्नो भव मे सदा ॥
निर्विघ्नं कुरु कल्याणं निर्विघ्नां च स्वमातरम् ।
अध्यात्मानमधिष्ठाय चिरञ्जीव मया सह ॥

इसके पश्चात् बहिन व बहनोई का अभिनंदन करें। घी, तिल से हवन करके ब्राह्मण भोजन करायें।

॥ इति अशुभदंतौत्पत्ति शांति प्रयोग: ॥

॥ श्रीसूर्य तन्त्रम् ॥

॥ सूर्यवैदिकमन्त्रन्यासादिप्रयोग:॥

मंत्र: - **ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो यातिभुवनानिपश्यन्॥१॥** इति सूर्यमन्त्रः।

विनियोग:- **आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः। सविता देवता। रजसेति बीजम्। वर्त्तमान इति शक्तिः। सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥**

ऋष्यादि न्यास:- **ॐ हिरण्यस्तूपऋषये नमः, शिरसि॥१॥ ॐ त्रिष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे॥२॥ ॐ सवितृदेवतायै नमः, हृदये॥३॥ ॐ रजसा बीजाय नमः, गुह्ये॥४॥ ॐ वर्त्तमानशक्तये नमः, पादयोः॥५॥** इति ऋष्यादि न्यासः।

करन्यास:- **ॐ आकृष्णेनेत्यंगुष्ठाभ्यां नमः॥१॥ ॐ रजसेति** तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ **ॐ वर्त्तमान** इति मध्यमाभ्यां नमः॥३॥ **ॐ निवेशयन्नमृतम्मर्त्यं** चेत्यनामिकाभ्यां नमः॥४॥ **ॐ हिरण्ययेन सविता रथेनेति** कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥ **ॐ आदेवो भुवनानि पश्यन्निति** करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिन्यास:- **ॐ आकृष्णेनेति** हृदयाय नमः॥१॥ **ॐ रजसेति शिरसे स्वाहा**॥२॥ **ॐ वर्तमान** इति शिखायै वषट्॥३॥ **ॐ निवेशयन्नमृतम्मर्त्यं** चेति कवचाय हुं॥ **ॐ हिरण्ययेन सविता रथेनेति** नेत्रत्रयाय वौषट्॥ **ॐ आदेवोयाति भुवनानि** पश्यन्नित्यस्त्राय फट्॥

मन्त्रन्यास:- **ॐ आकृष्णेनेति शिरसि॥१॥ ॐ रजसेति ललाटे॥२॥ ॐ वर्त्तमान इति मुखे॥३॥ ॐ निवेशयन्निति हृदये॥४॥ ॐ अमृतं चैति नाभौ॥५॥ ॐ मर्त्यंचेति कट्याम्॥६॥ ॐ हिरण्ययेनेत्यूर्वोः॥७॥ ॐ सवितेति जानुनोः॥८॥ ॐ रथेनेति जंघयोः॥९॥ ॐ आदे वो याति**

गुल्फयोः ॥१०॥ॐ भुवनानीति पादयोः ॥११॥ॐपश्यन्निति सर्वाङ्गेषु न्यसेत्॥१२॥ इति मन्त्रन्यासः॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥

अथ ध्यानम्–

ॐ पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरंगवाहः ।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥१॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

अस्य जपसंख्या सप्त सहस्त्राणि। जपान्ते अर्कसमित्तिल पायस घृतैर्दशांश होमः तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्ज्जनं तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनं च कार्यम्। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। ॥१॥

अथ सूर्यदान द्रव्याणि – माणिक्य गोधूम सवत्स धेनुः कोसुंभवासो गुडहेमताम्रम्। आरक्तकं चन्दनमंबुजं च वदंति दानं रविनन्दनाय।

वेदों में सूर्य को '**गभस्ति**' तथा '**सविता**' कहा है। सूर्य समस्त संसार का सृजन करता है, ज्योतिष सिद्धांत में इसे आत्मा माना गया है।

किसी की जन्म कुण्डली में सूर्य-शनि या सूर्य-राहु साथ हो या आमने-सामने हो तो व्यक्ति जीवन में दुःखी रहता है। सूर्य से चौथे, आठवें, बाहरवें शनि या राहु केतु होवे तो भी व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। नेत्र पीड़ा, चर्मरोग कुष्ठरोग अकस्मात् धोखा, घात योग भी व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। अतः व्यक्ति को सूर्योपासना करनी चाहियें।

॥ सूर्य तान्त्रिक मंत्राः॥

द्वयक्षर मार्त्तण्ड भैरव मंत्रः– ह्रिं ह्र्यूं ।

हिन्दी तंत्रसार में **ह्र्यो ॐ** लिखा है तथा शारदा तिलक में **ह्र्यूं** बताया है।

पुरश्चरण बाद– शालि, घृत, तिल, विल्व से एक लक्ष होम करें। राजवृक्ष के होम से शत्रुनाश तथा जपाकुसुम के होम से वशीकरण, मातुलिङ्ग (बिजौरा) के होम से धन प्राप्ति होवे।

अन्य मंत्र– रां हुं।

इस मंत्र के ऋषि अज। छन्द गायत्री। देवता भानु है।

त्र्यक्षर मंत्र– ह्रां ह्रीं सः।

इसके ऋषि अज, गायत्री छन्द, देवता सविता है।

ध्यानम्–

स्थितः पद्मेऽरुणे त्र्यक्षोऽरुण-वर्ण सुभूषणः ।
पद्मद्वय वराभीति हस्तश्चारुण-सेवितः ॥

अन्य मन्त्रः- ह्रीं हंसः

इस मंत्र की उपासना से धन प्राप्ति, लाभ होवे।

चतुरक्षर मंत्र- ॐ ह्रीं हंसः।

मेरुतंत्र के अनुसार ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता सूर्य है।

देदीप्यमान-रत्नौघ-मुकुट विराजितम् ।
पाशांकुश वराभीतिकरं रक्तं भजे रविम् ॥

मंत्र रत्न मंजूषा में इसके ऋषि अज, छन्द गायत्री, देवता सूर्यरूपिणी भुवनाधीशा कहा है।

ध्यानम्–

भास्वद् रत्नौघमौलिं स्फुरदमृत रुचो रञ्जयच्चारुरेखाम् ।
सद्यः संतप्तकार्तस्वर कमल जपाभासुरभिः प्रभाभिः ॥
विश्वाकाशावकाशं ज्वलदतिरुचिरं धर्तृ-पाशांकुशेष्टा-
भीतानां भङ्गि-तुङ्गस्तनमवतु जगन्मातुरार्कं वपुर्नः ॥

षडंगन्यासः- **ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।**

चार लक्ष जप कर, ब्रह्मवृक्ष की समिधा, कमल पुष्प तथा त्रिमधु से होम करने से अतुल धन प्राप्ति तथा पुत्र पौत्रादि की वृद्धि होवे।

षडक्षर मंत्रः- हं खः खः खोल्काय।

इसके ऋषि ब्रह्मा। छन्द गायत्री। देवता सवितृ है।

षडन्यासः- खां, खीं, खूं, खैं, खौं, खः से अंगन्यास करें।

रक्तपद्मं द्वयं हस्तैर्बिभ्रतं च वराभये ।
बन्धूकाभं त्रिनेत्रं च रविं ध्यायेत् सुभूषितम् ॥

एक लक्ष जप करके पलाश या उदुम्बर समिधा से त्रिमधु युक्त बिल्व होम करें।

अष्टाक्षर मंत्रः- ॐ घृणिः सूर्य आदित्य।

मंत्र रत्नमंजूषा के अनुसार इसके भार्गव ऋषि है। शारदा तिलक के अनुसार देव-नाग है। शारदा तिलक की टीका में "रं" इसका बीज, तथा ॐ शक्ति बताया है।

अन्यच्च- ॐ घृणि सूर्याय नमः।

॥ दशाक्षर सूर्यमंत्र प्रयोगः ॥

मंत्रः - **ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं।**

यह मंत्र आधिव्याधि एवं दरिद्रता नाशक है।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्रीसूर्य मन्त्रस्य भृगुऋषिः, गायत्री छन्दः, दिवाकरो देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिं, दृष्टादृष्ट सर्वाभीष्टफल सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ भृगु ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। दिवाकर देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयो। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

न्यास	**करन्यास**	**षडङ्गन्यास**
सत्यो तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
विष्णु तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
रुद्र तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
अग्नि तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
सर्व तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

अष्टांगन्यास - **ह्रीं ॐ श्रीं हृदयाय नमः। ह्रीं घृं श्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रीं णिं श्रीं शिखायै वषट्। ह्रीं सूं श्रीं कवचाय हुं। ह्रीं र्यं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं आं श्रीं अस्त्राय फट्! ह्रीं दिं श्रीं उदराय नमः उदरे। ह्रीं त्यं श्रीं पृष्ठाय नमः पृष्ठे।**

पञ्चमूर्तिन्यासः – ॐ लृं आदित्याय नमः शिरसि। ॐ ॠं रवये नमः मुखे। ॐ उं भानवे नमः हृदि। ॐ इं भास्कराय नमः लिंगे। ॐ अं सूर्याय नमः पादयोः।

वर्णन्यासः – ॐ ह्रीं ॐ श्रीं नमः मूर्ध्नि। ॐ घृं श्रीं नमः मुखे। ॐ ह्रीं णिं श्रीं नमः कंठे। ॐ सूं श्रीं नमः हृदि। ॐ ह्रीं र्यं श्रीं नमः कुक्षौ। ॐ ह्रीं आं श्रीं नमः नाभौ। ॐ ह्रीं दिं श्रीं नमः जङ्घयोः। ॐ ह्रीं त्यं श्रीं नमः पादयोः।

मंडलन्यासः- अं आं.....अः सोममंडलाय नमः शिखादि कण्ठान्तम्। कं खं गं.....मं सूर्यमंडलाय नमः कण्ठादि नाभ्यान्तम्। यं रं लं.....क्षं वह्निमंडलाय नमः नाभ्यादि पादान्तम्।

हंसन्यासः – अं आं इं.....क्षं हंसः पुरुषात्मने नमः इति सर्वाङ्गे।

ग्रह न्यास – अं आं.....ॠं आदित्याय भगवते नमः आधारे। लृ लृ.....अः सोमाय भगवते नमः लिङ्गे। कं खं गं घं ङं अंगारकाय भगवते नमः नाभौ। चं छं जं झं ञं बुधाय भगवते नमः हृदि। टं ठं डं ढं णं बृहस्पतये भगवते नमः कण्ठे। तं थं दं धं नं शुक्राय भगवते नमः मुखमध्ये। पं फं बं भं मं शनैश्चराय भगवते नमः भ्रूमध्ये। यं रं लं वं राहवे भगवते नमः भाले। शं षं सं हं केतवे भगवते नमः ब्रह्मरंध्रे।

ध्यानम् –

शोणाम्भोरुह संस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयी विग्रहं
दानाम्भोज युगाभयानि दधतं हस्तैः प्रवालप्रभम्।
केयूराङ्गदहार कंकणधरं कर्णोल्लसत्कुण्डलं
लोकोत्पत्ति विनाश पालनकरं सूर्यं गुणाब्धिं भजे ॥१॥

रक्ताब्जयुग्माभय दान हस्तं केयूरहारांगद कुण्डलाढ्यम्।
माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे बंधूक कांतिं विलसत्त्रिनेत्रम् ॥२॥

॥ अथ सूर्य यंत्रार्चनम् ॥

पीठपूजनम् – सामान्यक्रम में सूर्य की दीप्त्यादि नौ (९) पीठ शक्तियों का पूजन करें। यथा विशेषे –

पीठ मध्ये :- ॐ मं मण्डूकाय नमः, कं कालाग्निरुद्राय नमः, मूं

मूलप्रकृत्यै नमः। आं आधारशक्त्यै नमः। कूं कूर्माय नमः। अं अनंताय नमः। वं वराहाय नमः। शं शेषाय नमः। पृं पृथिव्यै नमः। अं अमृतार्णवाय नमः। क्षं क्षीरसागराय नमः। शं श्वेतद्वीपाय नमः। मं मणिमण्डपाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। मं मणिवेदिकायै नमः। रं रत्नसिंहासनाय नमः।

प्रभूताय नमः आग्नेये। विमलाय नमः नैर्ऋत्ये। साराय नमः वायवे, समाराध्याय नमः ऐशान्ये। परमसुखाय नमः मध्ये।
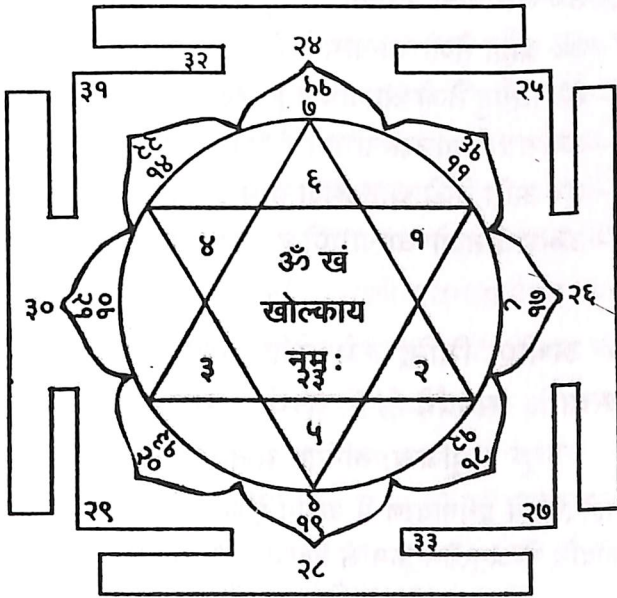
सूर्य पूजन यंत्रम्

पुनः पीठ मध्ये – ॐ अनंताय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ आनन्दकंदाय नमः। ॐ संविन्नलाय नमः। ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः। ॐ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः। ॐ पंचादशद्वर्ण कर्णिकायै नमः। ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ रं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः।

पीठ में पूर्वादि आठ दिशाओं में पीठशक्तियों का पूजन करें। (केशरों में) – रां दीप्तायै नमः। रीं सूक्ष्मायै नमः। रूं जयायै नमः। रें भद्रायै नमः। रैं विभूत्यै नमः। रों विमलायै नमः। रौं अमोघायै नमः। रं विद्युतायै नमः।

मध्ये - **रः सर्वतोमुख्यै नमः।**

ॐ ब्रह्म विष्णु शिवात्मकाय सौराय योगपीठात्मने नमः ॥

मूल मन्त्र से सूर्य को आसन देकर **ॐ हं खः खः खोल्काय नमः।** इस मंत्र से मूर्ति की कल्पना करे तथा सूर्य की पूजा करें।

॥ आवरण पूजनम् ॥

षट्कोण पश्चात् अष्टदल तथा उसके बाहर भूपूर युक्त सूर्य यंत्र होता है।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे)-

अग्निकोणे - **ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः।**

नैर्ऋत्ये - **ॐ ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा।**

वायवे - **ॐ विष्णु तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट्।**

ऐशान्ये - **ॐ रुद्र तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुम्।**

मध्याग्रे - **ॐ अग्नि तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्।**

दिक्षु - **ॐ सर्व तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।**

पुष्पाञ्जलिः-

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर अर्घ पात्र से जल छोड़ें।

(मंत्र महोदधि में प्रथमावरण में अष्टांग पूजा का उल्लेख है - पूर्वादि दिशाओं में। मंत्र महोदधि में अनुलोम क्रम से लिखा है।)

ऋष्यादि न्यास- **ह्रीं ॐ श्रीं हृदयाय नम, ह्रीं घृं श्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रीं णिं श्रीं शिखायै वषट्, ह्रीं सूं श्रीं कवचाय हुम्, ह्रीं र्यं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रीं आं श्रीं अस्त्राय फट्, ह्रीं दिं श्रीं उदराय नमः उदरे, ह्रीं त्यं श्रीं पृष्ठाय नमः पृष्ठे।**

द्वितीयावरणम् :- (अष्टदले) पूर्वे - ॐ आदित्याय नमः। आदित्य श्री **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** दक्षिणे - **ॐ यं रवये नमः श्री पा०पू०त०।** पश्चिमे - **ॐ उं भानवे नमः श्री पा०पू०त०।** उत्तरे - **ॐ इं भास्कराय नमः श्री पा०पू०त०।** मध्ये - **ॐ सूं सूर्याय नमः श्री० पा०पू०त०।**

(मन्त्रमहोदधि में आदित्य मध्य में तथा रवये पूर्व में और उत्तर में सूर्य पूजन लिखा है।)

आग्नेयदले - **ॐ उषायै नमः श्री पा०पू०त०। नैर्ऋत्यदले - ॐ प्रं प्रज्ञायै नमः श्री पा०पू०त०।** वायव्यदले - **ॐ प्रं प्रभायै नमः श्री पा०पू०त०। ईशानदले - ॐ सं सन्धायै नमः श्री पा०पू०त०।**

पुष्पाञ्जलि :- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे .....द्वितीयावरणार्चनम् ॥**

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर अर्घ पात्र से जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् :- अष्टदलों के अग्रभाग में पूर्वादिक्रमेण -**ॐ ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मी श्री० पा० पू० त० ॥१॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः श्री० पा० पू० त० ॥२॥ ॐ कौमार्यै नमः श्री० पा०पू० त० ॥३॥ ॐ वैष्णव्यै नमः श्री पा०पू० त० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः श्री पा०पू० त० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः श्री पा० ॥६॥ ॐ चामुण्डायै नमः श्री पा० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः श्री पा० ॥८॥** मध्ये - **अरुणाय नमः, श्री पा० ॥९॥**

पुष्पाञ्जलि :- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि.....तृतीयावरणार्चनम् ॥**

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर अर्घ पात्र से जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् - भूपूर में पूर्वादिक्रमेण -**ॐ सों सोमाय नमः श्री पा०पू० त०। ॐ अं अंगारकाय नमः श्री पा०पू० त०। ॐ बुं बुधाय नमः श्रीपा०पू० त०। ॐ गुं गुरवे नमः श्रीपा०पू० त०। ॐ शुं शुक्राय नमः श्री पा०पू० त०। ॐ शं शनैश्चराय नमः श्री पा०पू० त०। ॐ रां राहवे नमः श्री पा०पू० त०। श्रीं कें केतवे नमः श्री पा०पू० त०।**

पुष्पाञ्जलि :- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं.....चतुर्थावरणार्चनम् ॥ पू० त० सन्तु।**

पंचमावरणम् - भूपूरे पूर्वादिक्रमेण दिक्पाल पूजनम् - **ॐ लं इन्द्राय नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ रं अग्नये नमः श्री पा०। ॐ मं यमाय नमः श्री पा०। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः श्री पा०। ॐ वं वरुणाय नमः श्री पा०। ॐ यं वायवे नमः श्री पा०। ॐ कुं कुबेराय नमः श्री पा०। ॐ हं ईशानाय नमः श्री पा०।** इन्द्रेशानयोर्मध्ये -**ॐ आं ब्राह्मणे नमः श्री पा०।** वरुणनिर्ऋतियोर्मध्ये - **ॐ ह्रीं अनंताय नमः श्री पा०पू० त०।**

पुष्पाञ्जलि :- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे .....पंचमावरणार्चनम् ॥ पू० त० सन्तु।**

षष्टावरणम् – भूपूर में अस्त्रों की पादुका पूजन करें। **ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्त्ये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पं पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः।**

पुष्पाञ्जलि :- **ॐ अभीष्ट सिद्धिं.....षष्ठमावरणार्चनम्** ॥ पूजिता: तर्पिता: सन्तु कहकर अर्घ पात्र से जल छोड़ें।

॥ इति सूर्य यंत्रार्चनम् ॥

॥ अन्य दशाक्षर मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

षडंगन्यासः- **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।**

॥ त्रैलोक्यमङ्गल सूर्यकवचम् ॥

॥ सूर्य उवाच ॥

साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु मे कवचं शुभम्।
त्रैलोक्य मंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१॥
यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक् फलमाप्नोति निश्चितम्।
यद्धृत्वा च महादेवो गणानामधिपो ऽभवत् ॥२॥
पाठनाद् धारणाद् विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा।
एवमिंद्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥३॥

विनियोग:- **ॐ अस्य श्रीसूर्य कवचस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यः देवता, आरोग्य यशो मोक्षार्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **श्रीब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीसूर्य देवतायै नमः हृदि। आरोग्य यश मोक्षार्थ्ये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम्।
सूर्य्योऽव्यान्नयन द्वंदमादित्यः कर्णयुग्मकम् ॥१॥

अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
ह्रीं बीजं मे शिखां पातु हृदये भुवनेश्वरः ॥२॥
चन्द्रबीजं विसर्गाढ्यं पातु मे गुह्यदेशकम् ।
त्र्यक्षरोऽसौ महामंत्र सर्वतंत्रेषु गोपितः ॥३॥
शिवो वह्नि समायुक्तो वामाक्षि बिन्दु भूषितः ।
एकाक्षरो महामंत्र श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः ॥४॥
गुह्याद् गुह्यतरो मंत्रो वाञ्छाचिंतामणिः स्मृतः ।
शीर्षादि पादपर्यन्तं सदापातु मनूत्तमम् ॥५॥
इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
श्रीप्रदं कांतिदं नित्यं धनारोग्यविवर्धनम् ॥६॥
कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधि विनाशनम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान्भवेत् ॥७॥
बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ।
तत्तत्सर्व भवत्येव कवचस्य च धारणात् ॥८॥
भूतप्रेत पिशाचाश्च यक्ष गंधर्व राक्षसाः ।
ब्रह्म राक्षस वेताला नैव द्रष्टुमपि क्षमाः ॥९॥
दूरादेव पलायंते तस्य संकीर्तनादपि ।
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरु कुंकुमैः ॥१०॥
रविवारे च संक्रांत्यां सप्तम्यां च विशेषतः ।
धारयेत् साधक श्रेष्ठस्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥११॥
त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद् दक्षिणेभुजे ।
शिखायामथवा कंठे सोऽपि सूर्य्यो न संशयः ॥१२॥
इति ते कथितं साम्ब त्रैलोक्ये मंगलाधिपम् ।
कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥१३॥
अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम् ।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोशितैरपि ॥१४॥

॥ इति ब्रह्मयामले त्रैलोक्यमंगलं नाम सूर्य कवचं समाप्तम् ॥

॥ श्रीसूर्य वज्रपञ्जर कवचम् ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

यो देव देवो भगवान् भास्करो महसां निधिः ।
गायत्रीनायको भास्वान् सवितेति प्रगीयते ॥१॥
तस्याहं कवचं दिव्यं वज्रपंजरकाभिधम् ।
सर्वमंत्रमयं गुह्यं मूलविद्यारहस्यकम् ॥२॥
सर्वपापापहं देवि! दुःख-दारिद्र्य नाशनम् ।
महाकुष्ठहरं पुण्यं सर्वरोगनिवर्हणम् ॥३॥
सर्वशत्रुसमूहघ्नं संग्रामे विजयप्रदम् ।
सर्वतेजोमयं सर्वदेवदानव पूजितम् ॥४॥
रणे राजभये घोरे सर्वोपद्रवनाशनम् ।
मातृका वेष्टितं वर्म भैरवानन निर्गतम् ॥५॥
ग्रहपीडाहरं देवि! सर्व संकट नाशनम् ।
धारणादस्य देवेशि! ब्रह्मा लोक पितामह ॥६॥
विष्णुर्नारायणो देवि! रणे दैत्याञ्जयिष्यति ।
शङ्करः सर्वलोकेशो वासवोऽपि दिवस्पतिः ॥७॥
औषधीशः शशि देवी! शिवोऽहं भैरवेश्वरः ।
मन्त्रान्तकं परं वर्म सवितुः सारमुत्तमम् ॥८॥
यो धारयेद् भुजे मूर्ध्नि रविवारे महेश्वरि! ।
स राजवल्लभो लोके तेजस्वी वैरिमर्दनः ॥९॥
बहुनोक्तेन किं देवि! कवचस्यास्य धारणात् ।
इह लक्ष्मीधनारोग्यवृद्धिर्भवति नान्यथा ॥१०॥
परत्र परमा मुक्तिः देवानामपि दुर्लभा ।
कवचस्यास्य देवेशि! मूलविद्यामयस्य च ॥११॥
वज्रपंजरकाख्यस्य मुनिर्ब्रह्मा समीरितः ।
गायत्र्यं छन्द इत्युक्तं देवता सविता स्मृतः ॥१२॥

माया बीजं शरत् शक्तिः नमः कीलकमीश्वरि! ।
सर्वार्थ साधने देवि! विनियोगः प्रकीर्तितः ॥१३॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीवज्रपञ्जर कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीसविता देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्तिः, नमः कीलकं, सर्वार्थ साधने वज्रपंजरकवच पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः - ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्र्यं छन्दसे नमः मुखे, श्रीसविता देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, सः शक्तये नमः नाभौ, नमः कीलकाय नमः पादयोः, सर्वार्थ साधने वज्रपंजर कवच पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यानम्–

रक्ताम्बुजासनमशेष - गुणैकसिन्धुम्,
भानुं समस्त जनतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै-
र्माणिक्य मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥

मानस पूजन कर कवच पाठ करें यथा-

॥ कवच पाठ ॥

ॐ अं आं इं ईं शिरः पातु ओं सूर्यो मंत्रविग्रहः ।
उं ऊं ऋं ॠं ललाटं मे ह्रां रविः पातु चिन्मयः ॥१॥
लृं लॄं एं ऐं पातु नेत्रे, ह्रीं ममारुण - सारथिः ।
ओं औं अं अः श्रुती पातु, सः सर्वजगदीश्वरः ॥२॥
कं खं गं घं पातु गण्डौ, सूं सूरः सुरपूजितः ।
चं छं जं झं च नासां मे, पातु र्यां अर्यमा प्रभुः ॥३॥
टं ठं डं ढं मुखं पायाद् यं योगीश्वर पूजितः ।
तं थं दं धं गलं पातु, नं नारायणवल्लभः ॥४॥
पं फं बं भं मम स्कंधौ, पातु मां महसां निधिः ।
यं रं लं वं भुजौ पातु, मूलं सकलनायकः ॥५॥
शं षं सं हं पातु वक्षो, मूलमंत्रमयो ध्रुवः ।
ळं क्षः कुक्षिं सदा पातु, ग्रहनाथो दिनेश्वरः ॥६॥

ङं ञं णं नं मं मे पातु, पृष्ठं दिवस नायकः ।
अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं, नाभिं पातु तमोपहः ॥७॥
ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः लिङ्गं मेऽव्याद् ग्रहेश्वरः ।
कं खं गं घं चं छं जं झं, कटिं भानुर्ममाऽवतु ॥८॥
टं ठं डं ढं तं थं दं धं जानू भास्वान् ममाऽवतु ।
पं फं बं भं यं रं लं वं, जङ्घे मेऽव्याद् विभाकरः ॥९॥
शं षं सं हं ळं क्षः पातु, मूलं पादौ त्रयीतनुः ।
ङं ञं णं नं मं मे पातु सविता, सकलं वपुः ॥१०॥
सोमः पूर्वे च मां पातु, भौमोऽग्नौ मां सदाऽवतु ।
बुधो मां दक्षिणे पातु, नैऋत्यां गुरुरेव माम् ॥११॥
पश्चिमे मां सितः पातु, वायव्यां मां शनैश्चरः ।
उत्तरे मां तमः पायादैशान्यां मां शिखी तथा ॥१२॥
ऊर्ध्वं मां पातु मिहिरो, मामधस्ताज्जगत्पतिः ।
प्रभाते भास्करः पातु, मध्याह्ने मां दिनेश्वरः ॥१३॥
सायं वेदप्रियः पातु निशीथे विस्फुरापतिः ।
सर्वत्र सर्वदा सूर्यः पातु मां चक्रनायकः ॥१४॥
रणे राजकुले द्यूते विवादे शत्रु - सङ्कटे ।
संग्रामे च ज्वरे रोगे, पातु मां सविता प्रभुः ॥१५॥
ॐ ॐ ॐ उत ॐ उ ऊ हसमयः सूर्योऽवतान्मां भयाद्
ह्रां ह्रीं ह्रुं ह ह हा हसौः हसहसौः हंसोऽवतात् सर्वतः ।
सः सः सः सससा नृपाद्वनचराच्चौराद्रणात् संकटात्,
पायान्मां कुलनायकोऽपि सविता ॐ ह्रीं हसौः सर्वदा ॥१६॥
द्रां द्रीं द्रूं दधनं तथा च तरणिर्भांभैर्भयाद् भास्करो,
रां रीं रूं रु रु रूं रविर्ज्वरभयात् कुष्ठाच्च शूलामयात् ।
अं अं आं विविवीं महामयभयं मां पातु मार्तण्डको,
मूलव्याप्ततनुः सदाऽवतु परं हंसः सहस्त्रांशुमान् ॥१७॥

॥ फलश्रुति ॥

इति श्रीकवचं दिव्यं, वज्रपञ्जरकाभिधम् ।
सर्वदेव रहस्यं च मातृका मंत्र वेष्टितम् ॥१॥
महारोगभयघ्नं च पापघ्नं मन्मुखोदितम् ।
गुह्यं यशस्करं पुण्यं सर्वश्रेयस्करं शिवे! ॥२॥
लिखित्वा रविवारे तु तिष्ये वा जन्मभे प्रिये! ।
अष्टगंधेन दिव्येन सुधाक्षीरेण पार्वति! ॥३॥
अर्कक्षीरेण पुण्येन भूर्जत्वचि महेश्वरि! ।
कनकीकाष्ठ - लेखन्या कवचं भास्करोदये ॥४॥
श्वेतसूत्रेण रक्तेन श्यामेनावेष्टयेद् गुटीम् ।
सौवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेत् मूर्ध्नि वा भुजे ॥५॥
रणे रिपूञ्जयेद् देवि! वादे सदसि जेष्यति ।
राजमान्यो भवेन्नित्यं सर्वतेजोमयो भवेत् ॥६॥
कण्ठस्था पुत्रदा देवि! कुक्षिस्था रोगनाशिनी ।
शिरस्थाः गुटिका दिव्या राजलोकवशङ्करी ॥७॥
भुजस्था धनदा नित्यं तेजोबुद्धि विवर्धिनी ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥८॥
कण्ठे सा धारयेन्नित्यं बहुपुत्रा प्रजायते ।
यस्य देहे भवेन्नित्यं गुटिकैषा महेश्वरि! ॥९॥
महास्त्राणीन्द्र मुक्तानि ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वति! ।
तद् देहं प्राप्य व्यर्थानि भविष्यन्ति न संशयः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं कवचं वज्रपञ्जरम् ।
तस्य सद्यो महादेवि! सविता वरदो भवेत् ॥११॥
अज्ञात्वा कवचं देवि! पूजयेद् यस्त्रयीतनुम् ।
तस्य पूजार्जितं पुण्यं जन्मकोटिषु निष्फलम् ॥१२॥
शतावर्तं पठेद् वर्म सप्तम्यां रविवासरे ।
महाकुष्ठार्दितो देवि! मुच्यते नात्र संशयः ॥१३॥

नीरोगो यः पठेद् वर्म दरिद्रो वज्रपञ्जरम् ।
लक्ष्मीवाञ्जायते देवि! सद्यः सूर्यप्रसादतः ॥१४॥
भक्त्या यः प्रपठेद् देवि! कवचं प्रत्यहं प्रिये! ।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा देहान्ते मुक्तिमाप्नुयात् ॥१५॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले श्री सूर्य वज्रपञ्जर कवचम् ॥

॥ अथ सूर्य स्तवराज स्तोत्रम् ॥

॥ वसिष्ठ उवाच ॥

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनिसंततः ।
राजन्नाम सहस्रेण सहस्रांशु दिवाकरम् ॥१॥
खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा ।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥२॥

॥ श्रीसूर्य उवाच ॥

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत ।
अलं नामसहस्रेण पठ स्तवमिमं शुभम् ॥३॥
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च ।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ॥४॥
विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः ।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥५॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा ।
तपनतापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥६॥
गभस्तिहस्तो ब्रध्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः ।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम ॥७॥
देहारोग्यकरश्चैव धनवृद्धियशस्करः ।
स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥८॥
य एतेन महाबाहो द्वे संध्ये स्तवनोदये ।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापै प्रमुच्यते ॥९॥

कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम् ।
एतज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः ॥१०॥
पूजितोऽयं महामंत्रः सर्वपापहरः शुभः ।
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः ॥११॥

॥ इति साम्बपुराणे सूर्यस्तवराज स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ सूर्यस्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ जन्मेजय उवाच ॥

कथं कुरुणामृषभः स तु राजा युधिष्ठिरः ।
विप्रार्थमाराधितवान् सूर्यमद्भुत दर्शनम् ॥१॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

शृणुष्वावहितो राजन्! शुचिर्भूत्त्वा समाहितः ।
क्षणं च कुरु राजेन्द्र! सम्प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥२॥
धौम्येन तु यथा पूर्वे पार्थाय सु-महात्मने ।
नामाष्टशतमाख्यातं तच्छृणुष्व महामते ॥३॥

॥ धौम्य उवाच ॥

सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूर्षार्कः सविता रविः ।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ॥४॥
पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥५॥
इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरि शनैश्चरः ।
ब्रह्मा विष्णु रुद्रश्च स्कंदो वै वरुणो यमः ॥६॥
वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पतिः ।
धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥७॥
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलि सर्वमलाश्रयः ।
कला काष्ठा मुहूर्त्ताश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥८॥

संवत्सरकरोऽश्वत्थ कालचक्रो विभावसुः ।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्त सनातनः ॥९॥
कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः ।
वरुणः सागरोंऽशुश्च जीमूतो जीवनोऽरिहा ॥१०॥
भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ।
स्त्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥११॥
अनंतः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः ।
जयो विशालो वरदः सर्वधातु निषेचिता ॥१२॥
मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः ।
धन्वन्तरिर्धूमकेतुरादि देवोऽदितेः सुतः ॥१३॥
द्वादशात्माऽरविंदाक्षः पिता माता पितामहः ।
प्रजाद्वारं सर्गद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टरम् ॥१४॥
दाहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
चराचरात्मा सूक्षात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥१५॥

॥ फलश्रुति ॥

एतद् वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः ।
नामाष्टशतकं वेदं प्रोक्तमेतत् स्वयंभुवा ॥१॥
सुरगण पितृ यक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचर सिद्धवन्दितम् ।
वरकनक हुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽसि हिताय भास्करम् ॥२॥
सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत् सपुत्रदारान् धनरत्नसंचयान् ।
लभेत् जातिस्मरतां नरः सदा धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान् ॥३॥
इमं स्तवं देववरस्य यो नरः प्रकीर्तयेच्छुचि सुमनाः समाहितः ।
विमुच्यते शोकदावाग्नि सागराल्लभेत् कामान् मनसा यथेप्सितान् ॥४॥

॥ इति महाभारते वनपर्वणि धौम्य युधिष्ठर संवादे श्रीसूर्यस्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ आदित्यहृदय स्तोत्रम् ॥

॥ पूर्व पीठिका ॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याब्रवीद राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥२॥
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥३॥
आदित्य हृदयं पुण्यं सर्वशत्रु विशानम् ।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥
सर्वमङ्गल माङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोक - प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥

विनियोगः –**ॐ अस्य श्रीआदित्य हृदय स्तोत्रस्यागस्त्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आदित्यहृदय भूतो भगवान् ब्रह्मा देवता, निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वशत्रुक्षयार्थ पूर्वकं सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :– **अगस्त्य ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। आदित्य हृदयभूत ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादि गायत्री कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः– इस स्तोत्र के करन्यासादि तीन तरह से हो सकते है। **केवल प्रणव से, गायत्री मंत्र से अथवा रश्मिमते** इत्यादि छः नाम मंत्रों से।

ॐ रश्मिमते	अंगुष्ठाभ्यां नमः,	हृदयाय नमः।
ॐ समुद्यते	तर्जनीभ्यां नमः,	शिरसे स्वाहा।
ॐ देवासुरनमस्कृताय	मध्यमाभ्यां नमः,	शिखायै वषट्।
ॐ विवस्वते	अनामिकाभ्यां नम,	कवचाय हुम्।
ॐ भास्कराय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ भुवनेश्वराय	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,	अस्त्राय फट्।

इसके बाद गायत्री मंत्र का ध्यान कर स्तोत्र का पाठ करें।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥१॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावन: ।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभि ॥२॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिव: स्कंद: प्रजापति: ।
महेन्द्रो धनद: कालो यम: सोमो ह्यपांपति: ॥३॥
पितरो वसव: साध्या अश्विनौ मरुतोमनु: ।
वायुर्वह्नि: प्रजा: प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकर: ॥४॥
आदित्य सविता सूर्य: खग: पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशो भानुहिरण्यरेता दिवाकर: ॥५॥
हरिदश्व: सहस्त्रार्चि सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथन: शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥६॥
हिरण्यगर्भ शिशिरस्तपनोऽहस्करो रवि: ।
अग्निर्भोऽदिते: पुत्र: शङ्ख: शिशिरनाशन: ॥७॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजु: सामपारग: ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगम: ॥८॥
आतपी मण्डली मृत्यु: पिङ्गल: सर्वतापन: ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्त: सर्वभवोद्भव: ॥९॥
नक्षत्र ग्रह ताराणामधिपो विश्वभावन: ।
तेज सामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥१०॥
नम: पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नम: ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नम: ॥११॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नम: ।
नमो नम: सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नम: ॥१२॥
नम: उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नम: ।
नम: पद्म प्रबोधाय प्रचण्डाय नमो ऽस्तुते ॥१३॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्य वर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥१४॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥१५॥
तप्त चामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥१६॥
नाशयेत्येष वै भूतं तमेव सृजतिप्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥१७॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्नि होत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥१८॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥१९॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नवसीदति राघव ॥२०॥
पूजयस्वै नमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति ॥२१॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एव मुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥२२॥

वैसे तो मूल स्तोत्र यहीं तक है, परन्तु कुछ विद्वान आगे के चार श्लोक पढ़ते हैं।

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टश्लोकोऽभवत् तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥१॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूषा धनुरादाय वीर्यवान् ॥२॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेव महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥३॥
अथ रविवरदन्निरीक्ष्यरामं मुदितमनाः परमं प्रहृज्यमाणः ।
निशिचरपतिं संक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥४॥

॥ इति वाल्मीकीय रामायणे रामरावण युद्ध परिश्रान्ते अगस्त्य ऋषि कृत आदित्य स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ चाक्षुषीविद्या साधना ॥ (नेत्रोपनिषद्)

प्राचीन ग्रंथों में नेत्ररोगहारी चाक्षुषी विद्या के कई पाठ मिलते है उनमें दो प्रयोग अधिक प्रचलित है। उन्हीं का वर्णन यहाँ किया जा रहा है। रविवार को पुष्य या हस्त नक्षत्र अथवा शुभ चन्द्रबल देखकर रविवार को प्रारंभ करें। प्रातः काल उदित होते सूर्य की ओर मुँह करके बैठे। सूर्य का ध्यान करके मंत्र जप व स्तुति पाठ करें। बारह रविवार अवश्य करें।

(१)

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री चाक्षुषी विद्याया अहिबुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता, चक्षुरोग निवृत्तये पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **अहिबुध्न्य ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सविता देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

ध्यानम् :—

भास्वद्रत्नाढ्य मौलिः स्फुरदधार रुचा रंजित चारुकेशो
भास्वान् यो दिव्य तेजाः करकमलयुतः स्वर्णवर्णः प्रभामि ।
विश्वाकाशावकाशो ग्रहगण सहितो भाति यश्चोदयाद्रौ
सर्वानन्दप्रदाता हरि हर नमितः पातु मां विश्वचक्षुः ॥

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरोभव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाऽन्धो न स्यामिति कल्पय कल्पय कल्याणं कुरु कुरु। यानि यानि चास्मात् पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ चक्षुस्तेजोदार्त्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणा कराय अमृताय ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यायाक्षि तेजसे नमः।

खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिप्रतिरूपः। ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरणमयं ज्योतिरूपं तपन्तम्। सहस्त्ररश्मि शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥

ॐ नमो भगवते श्री सूर्यायादित्यायाऽक्षितेजसेऽहो वाहिनी वाहिनी

स्वाहा। ॐ वय सुपर्णा उपसेदरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो ना धभानाः । अप ध्वान्तमुर्णहि पूर्धि चक्षुर्मु भूग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ॥

ॐ पक्षिराजाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात्। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ पुष्करेक्षणाय नमः। ॐ कमलेक्षणाय नमः। ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। ॐ श्रीसूर्यनारायणाय नमः। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

फलश्रुति :- एवं चाक्षुष्मती विद्यया स्तुतः श्रीसूर्यनारायणः सुप्रीतोऽब्रवीत चाक्षुष्मती विद्यां ब्राह्मणो यो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति, न तस्यकुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वाऽथ विद्या सिद्धिर्भवति। य एवं वेद स महान् भवति।

(२)

ॐ सूर्यायाक्षितेजसे नमः खेचराय नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान शुचिरूपः। हंसो भगवान शुचिर प्रतिरूपः। वय सुपणो उपसे दरिद्रं प्रिय मेधा ऋषयो नाधमानाः। अवध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्। पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः।

॥ चाक्षुषी यंत्रम् ॥

कांसी की थाली में अनार की लकड़ी की कलम व हल्दी के घोल की स्याही से यह यंत्र लिखे। तांबे की दीपदानी में चौमुखा दीपक जलावें। दीपक थाली में रखें यंत्र की पूजा आरती करें।

चाक्षुषी स्तोत्र की १२ आवृति करें चाक्षुषी मंत्र की ५-६-१२ माला नित्य करें।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

॥ चाक्षुषी बीजमंत्र:॥

मंत्र :- ॐ ह्रीं हंसः।

इस मंत्र से आर्थिक लाभ समृद्धि भी मिलती है, नेत्र रोग में भी लाभप्रद है। सूर्य दोष का निवारण भी इस मंत्र जाप से होता है।

॥ अथ सूर्यव्रत विधि ॥

बारह महिनों में प्रत्येक मास के रविवारों को जिस विधि से व्रत करना चाहिये उसका वर्णन इस प्रकार से है।

भविष्यपुराण में मान्धाता-वसिष्ठ संवाद में इसका विधान कहा गया है। इसके प्रभाव से संतान हीनों को पुत्र प्राप्ति होवें, असाध्य रोगों व दरिद्रता योग से मुक्ति मिलें।

व्रत आरंभ करते समय संकल्प करे -

सूर्यव्रतं करिष्यामि यावद्वर्षं दिवाकर।
व्रतं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादात्प्रभाकर॥

पश्चात् -

ततः प्रातः समुत्थाय नद्यादौ विमले जले।
स्नात्वा संतर्पयेद् देवान् पितृंश्च वसुधाधिप॥१॥
उपलिप्य शुचौ देशे सूर्यं तत्र समर्चयेत्।
विलिखेत् तत्र पद्मं तु द्वादशारं सकर्णिकम्॥२॥
ताम्रपात्रे तथा पद्मं रक्त चंदन वारिणा।
तत्र संपूजयेद् देवं दीननाथं सुरेश्वरम्॥३॥

प्रातः काल नदी या तालाब में अथवा कूपादि पर शुद्ध जल से स्नान कर संध्या-तर्पण करें। गोमय व मृत्तिका से शुद्ध किये स्थान पर सूर्य की पूजा करें। एक ताम्रपात्र (तामड़ी) में रक्त चंदन से बारह दलों का कमल बनाकर उसमें सूर्य के १२ नामों से पूजा करें। १२ मासों के १२ आदित्य के नाम व प्रत्येक मास की विधि इस प्रकार है -

मासे मासे च ये राजान् विशेषास्ताञ्छृणुष्व वै।
मार्गशीर्षे यजेन्मित्रं नारिकेलार्घ्यमुत्तमम्॥१॥

नैवेद्ये तण्डुला देयाः साज्याश्च गुढसंयुताः ।
पत्रत्रयं तुलस्यास्तु प्राश्य तिष्ठेज्जितेन्द्रियः ॥२॥
दद्याद् विप्राय भोज्यं तु दक्षिणा सहितं नृप ।
पौषे विष्णुं समभ्यर्च्य नैवेद्ये कृशरं तथा ॥३॥
बीजपूरेण चैवार्घ्यं घृतं प्राश्यं पलत्रयम् ।
दद्यात् घृत तु विप्राय भोजनेन समन्वितम् ॥४॥
माघे वरुणनामानं संपूज्य सतिलं गुडम् ।
भोजनं दक्षिणां दद्यान्नैवेद्यं कदली फलम् ॥५॥
अर्घ्यं तेनैव दत्त्वा तु प्राश्या मुष्टित्रयं तिलाः ।
फाल्गुने सूर्यमभ्यर्च्य नैवेद्यं सघृतं दधि ॥६॥
अर्घ्यं जंबीर सहितं दधि प्राश्यं पलत्रयम् ।
दधितण्डुलदानं च भोजने समुदाहृतम् ॥७॥
चैत्रे भानुं च सम्पूज्य नैवेद्ये घृतपूरिकाः ।
दाडिमीफलमर्घ्ये च प्राश्यं दुग्धं पलत्रयम् ॥८॥
विप्राय भोजनं दद्यान्मिष्टान्नं तु सदक्षिणाम् ।
वैशाखे तपनः प्रोक्तो माषान्नं सघृतं स्मृतम् ॥९॥
अर्घ्यं दद्यात्तु द्राक्षाभिः प्राशने गोमयं स्मृतम् ।
कुर्यान्माषान्नदानं च सघृतं वै सदक्षिणाम् ॥१०॥
इन्द्रं ज्येष्ठे यजेद् राजान् नैवेद्ये तु करम्भकम् ।
अर्घ्यं च सहकारेण प्राश्यं जलाञ्जलित्रयम् ॥११॥
दध्योदन समायुक्तं भोजनं ब्राह्मणस्य तु ।
आषाढे रविमभ्यर्च्य जातीं चिपिटकं तथा ॥१२॥
विप्राय भोजनं दद्यात् प्राशयेन्मरिचत्रयम् ।
गभस्तिं श्रावणेऽभ्यर्च्य नैवेद्ये सत्तूपूरिकाः ॥१३॥
अर्घदाने च हि प्रोक्तं त्रपुसीफलमेव च ।
मुष्टित्रयं च सक्तूनां प्राशने समुदाहृतम् ॥१४॥

विप्राय भोजनं दद्याद् दक्षिणा सहितं नृप ।
यमो भाद्रपदे पूज्यः कूष्माण्डं साज्यमोदनम् ॥१५॥
गोमूत्रं प्राशने ह्युक्तं ब्राह्मणान् भोजयेत्तथा ।
हिरण्यरेता आश्विने नैवेद्ये शर्करा स्मृता ॥१६॥
दाडिमेनार्घ्यदानं तु प्राश्यं खण्डपलत्रयम् ।
विप्राय परया भक्त्या भोजने शालि शर्कराः ॥१७॥
दिवाकरः कार्तिके च रम्भायाः फलमेव च ।
पायसं चैव नैवेद्ये पायसं प्राशने स्मृतम् ॥१८॥
पायसैर्भोजयेद् विप्रान् दद्यात् ताम्बूल दक्षिणे ।
एवं व्रतं समाप्यैतत् तत उद्यापनं चरेत् ॥१९॥

(बीजपूर = बिजोरा नींबू, कृशर= तिल चावल की खिचड़ी, जम्बीर = जंभीरी नीम्बू, पूरिका = पूरी, माषान्न = उड़द, करम्भ = दही सत्तू दलिया, ओदन = भात, चिपिट = चिवड़ा, सक्तु = सत्तू, शालि = मिश्री, रंभाफल = केला)

॥ इति सूर्यव्रतविधानम् ॥

॥ सूर्यार्घविधानम् ॥

दद्यादर्घ्यं प्रतिदिनं वारे वा तस्य चोदिते ॥२॥ प्रभाते मंडलं कृत्त्वा पूर्ववत्पीठमर्चयेत्॥ पात्रं ताम्रमयं प्रस्थतोयग्राहि मनोहरम् ॥३॥ विधाय तत्र मनुना पूरयेत्तच्छुभोदकैः ॥ कुंकुमं रोचनं राजीरक्तचन्दनवैणवान् ॥४॥ करवीरजपालाशीकुशश्यामाकतंडुलान्॥ निक्षिपेत्सलिले तस्मिन्नैक्यं संकल्प्य भानुना ॥५॥ सांगमभ्यर्चयेत्तस्मिन्भास्करं प्रोक्तलक्षणम्॥ गंधपुष्पादिनैवेद्यैर्यथाविधि विधानवित् ॥६॥ तद्विधाय जपेन्मंत्रं सम्यगष्टोत्तरं शतम्॥ पुनः संपूज्य गंधाद्यैर्जानुभ्यामवनीं गतः ॥७॥ आमस्तकं तदुद्धृत्त्य व्योम्नि सावरणे रवौ ॥ दृष्टिं विधाय स्वैक्येन मूलमंत्रं धिया जपन् ॥८॥

मूलमंत्रः- ''ॐ ह्रींघृणिः सूर्यआदित्यः श्रीं''।

दद्यादर्घ्यं दिनेशाय प्रसन्नेनांतरात्मना। कृत्वा पुष्पाञ्जलिं भूयो

जपेदष्टोत्तरं शतम्॥९॥ यावदर्घामृतं भानुः समादत्ते निजैः करैः॥ तेन तृप्तो दिनमणिर्दद्यात्तस्मै मनोरथान्॥१०॥ अर्घ्यदानमिदं पुण्यं पुंसामारोग्य वर्द्धनम्॥ धनधान्यपशुक्षेत्रपुत्रमित्रकलत्रदम्॥११॥ तेजोवीर्ययशः कांतिविद्याविभवभाग्यदम्॥

॥ इत्यष्टाक्षरसूर्यमंत्रविधानं सार्घ्यं समाप्तम् ॥

॥ सूर्याष्टक स्तोत्रम्॥

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोस्तुते ॥१॥
सताश्व रथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥२॥
लोहितं रथमारूढं सर्वलोक पितामहम् ।
महापाप - हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरम् ।
महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
बृहितं तेजः पुञ्जं च वायुमाकाशमेव च
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
बन्धूक पुष्प संकाशं हारकुण्डल भूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।
तं सूर्य जगकर्तारं महातेजः प्रदीपनम् ।
महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
तं सूर्य जगतां नाथं ज्ञान विज्ञान मोक्षदम् ।
महापाप हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥८॥

॥ इति सूर्याष्टकं समाप्तम् ॥

॥ सूर्य स्तुति ॥

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि ।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादि हेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्य-मचिन्त्य रूपम् ॥१॥
प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ् मनोभिः
ब्रह्मेन्द्र पूर्वक सुरैर्नतमर्चितं च ।
वृष्टि प्रमोचन विनिग्रह हेतुभूतं
त्रैलोक्य पालनपरं त्रिगुणात्मकम् ॥२॥
प्रातर्भजामि सवितारमनन्त शक्तिः
पापौघ शत्रुभयरोग हरं परं च ।
तं सर्वलोक कलनात्मक कालमूर्ति
गोकण्ठबन्धन विमोचनमादि देवम् ॥३॥

॥ सूर्य स्तवन ॥

सूर्य स्तवन को जपने से मनुष्य अपनी समस्त अभीष्ट वस्तुओं को प्राप्त करता है एवं मानव जीवनोपरांत स्वर्ग का सुख भी सहज प्राप्त करता है। श्रद्धा, विनय पूर्वक इस मंत्र का दैनिक जप साधक के लिए निश्चय ही हितकर होगा इसमें सन्देह नहीं है।

ॐ नमः सहस्त्रबाहवे आदित्याय नमो नमः ।
नमस्ते पवन हस्ताय वरुणाय नमो नमः ॥
नमः तिमिरनाशाय श्रीसूर्याय नमो नमः ।
नमः सहस्त्र जिह्वाय भानवे च नमो नमः ।
त्वं च ब्रह्मा त्वं च विष्णु रुद्रस्त्वं च नमो नमः ।
त्वमग्निस्सर्वभूतेषु वायुस्त्वं च नमो नमः ।
सर्वगः सर्वभूतेषु न हि किंचिन्त्वया विना ।
चराचरे जगत्मस्मिन् सर्वदेहे व्यवस्थितः ॥

॥ सूर्यार्यास्तोत्रम् ॥

शुकतुण्डच्छविसवितुश्चण्डरुचे: पुण्डरीकवनबन्धो: ।
मण्डलमुदितं वन्दे कुण्डलमाखण्डलाशाया: ॥१॥

यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोऽपि ।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्र: स जयति धाम्नां निधि: सूर्य: ॥२॥

उदयाचलतिलकाय प्रणतोऽस्मि विवस्वते ग्रहेशाय ।
अम्बरचूडामणये दिग्वनिताकर्णपूराय ॥३॥

जयति जनानन्दकर: करनिकरनिरस्ततिमिरसङ्घात: ।
लोकालोकालोक: कमलारुणमण्डल: सूर्य: ॥४॥

प्रतिबोधितकमलवन: कृतघटनश्चक्रवाकमिथुनानाम् ।
दर्शितसमस्तभुवन: परहितनिरतो रवि: सदा जयति ॥५॥

अपनयतु सकलकलिकृतमलपटलं सुप्रतप्तकनकाभ: ।
अरविन्दवृन्दविघटनपटुतरकिरणोत्कर: सविता ॥६॥

उदयाद्रिचारुचामर हयखुरपरिहितरेणुराग ।
हरितहय हरितपरिकर गगनाङ्गदीपक नमस्तेऽस्तु ॥७॥

उदितवति त्वयि विकसति मुकुलीयति समस्तमस्तमितबिम्बे ।
नह्यन्यस्मिन् दिनकरसकलं कमलायते भुवनम् ॥८॥

जयति रविरुदयसमये बालातप: कनकसंनिभो यस्य ।
कुसुमाञ्जलिरिव जलधौ तरन्ति रथसप्तय: सप्त ॥९॥

आर्या: साम्बपुरे सप्त आकाशात् पतिता भुवि ।
यस्य कण्ठे गृहे वापि न स लक्ष्म्या वियुज्यते ॥१०॥

आर्या: सप्त सदा यस्तु सप्तम्यां सप्तधा जपेत् ।
तस्य गेहं च देहं च पद्मा सत्यं न मुञ्चति ॥११॥

निधिरेष दरिद्राणां रोगिणां परमौषधम् ।
सिद्धि: सकलकार्याणां गाथेयं संस्मृता रवे: ॥१२॥

॥ इति श्री याज्ञवल्क्यविरचितं सूर्यार्यास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसूर्यमण्डलस्तोत्रम् ॥

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायणशङ्करात्मने ॥१॥
यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्रयदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥२॥
यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं विप्रैः स्तुतं भावनमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥३॥
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्ततेजोमयदिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥४॥
यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥५॥
यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुःसामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥६॥
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसङ्घाः ।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥७॥
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥८॥
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धमुत्पत्ति रक्षाप्रलयप्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत् संहरतेऽखिलं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥९॥
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम् ।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१०॥
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसङ्घाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥११॥
यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१२॥

मण्डलात्मकमिदं पुण्यं यः पठेत् सततं नरः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते ॥१३॥

॥ इति श्रीमदादित्यहृदये मण्डलात्मकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ तृचाकल्पनमस्कार ॥

श्रीसूर्यनारायण भगवान् की प्रीति हेतु तृचाकल्पनमस्कार वैदिक मन्त्र और तन्त्राक्षर (बीजों) से संयुक्त ब्रह्मकर्मसमुच्चय में उपलब्ध है।

विधानम् - आसन पर बैठकर आचमन कर प्राणायाम करें, पुनः हाथ में जल लेकर संकल्प करे। संकल्प में देशकालपात्र-तिथि-वारादिका उच्चारणकर कहें-

'ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्री सवितृसूर्यनारायण प्रीत्यर्थं च तृचाकल्पविधिना नमस्काराख्यं कर्माहं करिष्ये'

इस प्रकार संकल्प कर जल छोड़ दें।

पुनः एक पात्र में जल भरकर उसमें गन्ध पुष्प, अक्षत रख दे। तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर श्रीसूर्यनारायण का ध्यान करें। **ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है-**

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

इस प्रकार ध्यानकर निम्नोक्त मन्त्रों का उच्चारण करते हुए नमस्कार करें।

ॐ ह्रां उद्यन्नद्य मित्रमहः ह्रां ॐ मित्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं आरोहन्नुत्तरां दिवम् ह्रीं ॐ रवये नमः ॥ ॐ ह्रूं हृद्रोगं मम सूर्य ह्रूं ॐ सूर्याय नमः ॥ ॐ ह्रैं हरिमाणं च नाशय ह्रैं ॐ भानवे नमः ॥ ॐ ह्रौं शुकेषु मे हरिमाणं ह्रौं ॐ खगाय नमः ॥ ॐ ह्रः रोपणाकासु दध्मसि ह्रः ॐ पूष्णे नमः ॥ ॐ ह्रां अथो हारिद्रवेषु मे ह्रां ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ॥ ॐ ह्रीं हरिमाणं नि दध्मसि ह्रीं ॐ मरीचये नमः ॥ ॐ ह्रूं उदगादयमादित्यः ह्रूं ॐ आदित्याय नमः ॥ ॐ ह्रैं विश्वेन सहसा सह ह्रैं ॐ सवित्रे नमः ॥ ॐ ह्रौं

द्विषतिं मह्यंरन्धयन् ह्रौं ॐ अर्काय नमः॥ ॐ ह्रः मो अहं द्विषते रथं ह्रः ॐ भास्कराय नमः॥

ॐ ह्रां ह्रीं उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवं ह्रां ह्रीं ॐ मित्ररविभ्यां नमः॥ ॐ ह्रूं ह्रैं हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ह्रूं ह्रैं ॐ सूर्यभानुभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं ह्रः शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ह्रौं ह्रः ॐ खगपूषाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रां ह्रीं अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि ह्रां ह्रीं ॐ हिरण्यगर्भमरीचिभ्यां नमः॥ ॐ ह्रूं ह्रैं उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह ह्रूं ह्रैं ॐ आदित्यसवितृभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ह्रः द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रथं ह्रौं ह्रः ॐ अर्कभास्कराभ्यां नमः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवं हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ॐ मित्ररविसूर्यभानुभ्यो नमः॥ ॐ ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं ॐ खगपूषाहिरण्यगर्भमरीचिभ्यो नमः॥ ॐ ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रथं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ आदित्यसवित्रर्कभास्करेभ्यो नमः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि। उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रथम्। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ मित्ररविसूर्यभानुखगपूष हिरण्यगर्भमरीच्यादित्य सवित्रर्कभास्करेभ्यो नमः।

इस मन्त्र की तीन बार आवृत्ति करनी चाहिये।

विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी सुरेश्वरः ।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ॥
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तरसहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥

नमो धर्मविधानाय नमस्ते कर्मसाक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ॥

जो आदित्य को प्रतिदिन नमस्कार करते है, उन्हें सहस्त्रों जन्म तक दरिद्रता का क्लेश नहीं होता।

अनेन तृचाकल्पनमस्काराख्येन कर्मणा भगवान् श्री सवितृसूर्यनारायणः प्रीयतां न मम। (इस तृचाकल्प नमस्कार कर्म से भगवान् सवितृ सूर्यनारायण प्रसन्न होवें।)

॥ याज्ञवल्क्यकृत सूर्यस्तोत्रम् ॥

नमः सवित्रे द्वाराय मुक्तेरमिततेजसे ।
ऋग्यजुः सामभूताय त्रयीधाम्ने च ते नमः ॥१॥
नमोऽग्नीषोमभूताय जगतः कारणात्मने ।
भास्कराय परं तेजस्सौषुम्नं रुचि बिभ्रते ॥२॥
कलाकाष्ठानिमेषादि कालज्ञानात्मरूपिणे ।
ध्येयाय विष्णुरूपाय परमाक्षर-रूपिणे ॥३॥
बिभर्ति यः सुरगणानाप्यायेन्दुं स्वरश्मिभिः ।
स्वधामृतेन च पितृंस्तस्मै तृप्त्यात्मने नमः ॥४॥
हिमाम्बुधर्मवृष्टिनां कर्ता भर्ता च यः प्रभुः ।
तस्मै त्रिकालरूपाय नमः सूर्याय वेधसे ॥५॥
अपहन्ति तमो यश्च जगतोऽस्य जगत्पतिः ।
सत्त्वधामधरो देवो नमस्तस्मै विवस्वते ॥६॥
सत्कर्मयोग्यो न जनो नैवापः शुद्धिकारणम् ।
यस्मिन्ननुदिते तस्मै नमो देवाय भास्वते ॥७॥
स्पृष्टो यदंशुभिर्लोकः क्रियायोग्यो हि जायते ।
पवित्रताकारणाय तस्मै शुद्धात्मने नमः ॥८॥
नमः सवित्रे सूर्याय भास्कराय विवस्वते ।
आदित्यादिभूताय देवादिनां नमो नमः ॥९॥

हिरण्मयं रथं यस्य केतवोऽमृतवाजिनः ।
वहन्ति भुवनालोकिचक्षुषं तं नमाम्यहम् ॥१०॥

॥ श्री पराशर उवाच ॥

इत्येवमादिभिस्तेन स्तूयमानस्य वै रविः ।
वाजिरूपधरः प्राह व्रियतामिति वाञ्छितम् ॥११॥
याज्ञवल्क्यस्तदा प्राह प्रणिपत्य दिवाकरम् ।
यजूंषि तानि मे देहि यानि सन्ति न मे गुरौ ॥१२॥
एवमुक्तौ ददौ तस्मै यजूंषि भगवान् रविः ।
अयातयामसंज्ञानि यानि वेत्ति न तद्गुरुः ॥१३॥
यजूंषि यैरधीतानि तानि विप्रैर्द्विजोत्तम ।
वाजिनस्ते समाख्याताः सूर्योऽप्यश्वोऽभवद्यतः ॥१४॥
शाखाभेदास्तु तेषां वै दश पञ्च च वाजिनाम् ।
काण्वाद्याः सुमहाभाग याज्ञवल्क्याः प्रकीर्तिताः ॥१५॥

॥ महाराज मनुकृत सूर्यस्तुति ॥

नमो नमो वरेण्याय वरदायांशुमालिने ।
ज्योतिर्मय नमस्तुभ्यमनन्तायाजिताय ते ॥
त्रिलोक चक्षुषे तुभ्यं त्रिगुणायामृताय च ।
नमो धर्माय हंसाय जगज्जनन हेतवे ॥
नरनारीशरीराय नमो मीष्ढुष्टमाय ते ।
प्रज्ञानायाखिलेशाय सप्ताश्वाय त्रिमूर्तये ॥
नमो व्याहृतिरूपाय त्रिलक्षायाशुगामिने ।
हर्यश्वाय नमुस्तुभ्यं नमो हरितबाहवे ॥
एकलक्षविलक्षाय बहुलक्षाय दण्डिने ।
एकसंस्थद्विसंस्थाय बहुसंस्थाय ते नमः ॥
शक्तित्रयाय शुक्लाय रवये परमेष्ठिने ।
त्वं शिवस्त्वं हरिर्देव त्वं ब्रह्मा त्वमेव हि ॥

त्वमोंकारो वषट्कारः स्वधा स्वाहा त्वमेव हि ।
त्वामृते परमात्मनं न तत्पश्यामि दैवतम् ॥

॥ सर्वग्रह पीड़ा नाशक सूर्य प्रयोग ॥

दत्तात्रेय तंत्र में सूर्य मंत्र जाप का विशेष प्रयोग सर्वग्रहपीड़ा निवारण हेतु तथा महादरिद्री पातकी योग के नाश के लिये दिया गया है।

इसके साथ ही तांत्रिक विधि भी दी गई है।

आक, धत्तूरा, अपामार्ग, दूर्वा, वट इन सबकी जड़ें लेवे, खेजड़ा के पत्ते, आम के पत्ते और गूलर के पत्ते इन सबको एक मिट्टी के बरतन में इकट्ठा कर रखें तथा दूध, घी, चावल, चना, मूंग, गेहूँ, तिल, गौमूत्र, सरसों, लाल सफेद चंदन, शहद और छाछ ये सब वस्तुयें उस पात्र में डालें और शनिवार को सायंकाल के समय पीपल के वृक्ष की जड़ में गड्ढा खोदकर गाड़ देवे और उसी समय पीपल के वृक्ष नीचे या देवालय में जाकर दश सहस्त्र जप निम्न मंत्र करें या करायें। एक समय में पूरे नहीं हो सके तो दूसरे दिन रविवार तक कर लेवें।

मंत्र - **ॐ नमो भगवते भास्कराय अस्माकं सर्व ग्रहाणां पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।**

॥ इति दरिद्रता नाशक सूर्य प्रयोग ॥

॥ सूर्य शान्ति प्रयोगः ॥

रोग लक्षण -

मस्तिष्क रोग, हृदय रोग, नेत्र रोग, उच्चरक्त चाप, पित्त जनित रोग, मस्तिष्क ज्वर, मिर्गी, ताप लहरी(लू), सिर दर्द, मस्तिष्क संबन्धी विकृतियाँ एवं सूर्य पीड़ा में इस यंत्र का प्रयोग करें।

उपचार-

१. उक्त सूर्य यंत्र को प्रातःकाल रविवार या कृतिका या उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में अष्टगंध से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर प्राण प्रतिष्ठा एवं पूजन कर ताँबे की ताबीज में धारण करें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

२. रविवार को बिल्व की जड़, लाल डोरे में सूर्य मंत्र से अभिमंत्रित करके बाँधने से भी सूर्य बाधा की शान्ति होती है।

३. निम्नलिखित औषधियों के चूर्ण से स्नान करने पर भी सूर्य बाधा की शान्ति होती है। यथा कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुवा के फूल, सुगन्ध-बाला।

४. गेहूँ, गुड़, घी, लाल वस्त्र, ताँबा, सोना, बछड़े सहित गाय, माणिक्य, लालचन्दन के दान से भी सूर्य-बाधा की शान्ति होती है।

ध्यानम्- नित्य हाथ जोड़कर भगवान् सूर्य का ध्यान करें-

पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्ग वाहनः ।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

भगवान् सूर्य के निम्न मंत्रों में से किसी एक मंत्र का जप करें-

मंत्राः-

१. ॐ घृणिः सूर्याय नमः। २. ॐ घृणिः सूर्य आदित्याय नमः। ३. ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः। ४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। ५. ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

प्रत्येक मंत्र की जप संख्या २८ हजार है।

॥ अर्जुनकृत सूर्यस्तवन ॥

जयति किरणमाली भासुरः सप्तसप्तिः ।
सकलभुवनधामा प्राब्दिगन्ताट्टाहासः ॥
भवति विगतपापं कीर्तनादेव यस्य ।
प्रचुरकलुषदोषैर्ग्रस्तमङ्गं नराणाम् ॥
उद्यन्तमम्बरतले सुरसिद्धसङ्घाः ।
सब्रह्मदैत्यमुनि किन्नरनागयक्षाः ॥

त्वामर्चयन्ति विबुधाः प्रणतैः
शिरोभिश्चञ्चत्किरीटमणि भाभिरनुत्तमाभिः ।
उत्साहशक्तिमय शौर्यसमन्वितानां
सेवाप्रयोगरचनाविधि तत्पराणाम् ॥
कार्याणि यन्न फलदानि भवन्ति पुंसां
हेतुस्त्वभक्तिरिह नाथ तवेति नूनम् ।
तेजोराशिस्त्वमिह शरणं सर्वतो दुःखितानां
त्वत्तुल्योऽन्यो जगति सकले नास्ति कश्चिद्दयालुः ।
त्वय्येकस्मिन् भवति सफला भक्तिरन्विष्यमाणा
त्वामासाद्य प्रभवति कुतो व्याधिदुःखं नराणाम् ॥
कः कुष्ठाभिहतः क्वचारिभिरथो को व्याधिभिः पीडितः
के पङ्ग्वन्धजडाः कः शीर्णचरणः को वा विपन्नक्रिणः ।
इत्येवं प्रसमीक्ष्य देव कृपया दोषात्परित्रायसे
कस्यान्यस्य परोपकार निरता चेष्टा यथैषा तव ॥
उदधिजलतरंग क्षोभलोलाक्षियुग्मैः
सफणिमणिमयूखोद्भासि - तैर्लेलिहद्भिः ।
प्रणिपतित - शिरोभिर्नागमुख्यैरजस्त्रं
श्रुतिभिरनुपमाभिः स्तूयसे पुष्कलाभिः ॥
तव सुरवर गच्छतोऽनुसरन्ति
त्रिदशनदीकमलोद्गतानि वालैः ।
कनककमलरेणु पिंजितानि
भ्रमरकुलानि पतंग चामराणि ॥
त्वं विष्णुस्त्वं शशाङ्कस्त्वमसुरमन्थनः षण्मुखस्त्वं धनेश-
स्त्वं कालस्त्वं च धाता क्षितिधरमलयापाश्रयस्त्वं हुताशः ।
ॐ कारस्त्वं द्विजानां त्वमिह जलनिधिस्त्वं शरस्त्वं च रुद्र-
स्त्वं मुख्यस्त्वं पयोदो व्रतयमनियमास्त्वं जगत् सर्वमेव ॥

(स्कंधपुराणे अवन्तिखण्डे-४३)

॥ श्रीसूर्य अष्टोत्तरशत–नामावली ॥

ॐ ह्रीं अरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं शरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं करुणारस सिन्धवे नमः।
ॐ ह्रीं असमानबलाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्तरक्षकाय नमः।
ॐ ह्रीं आदित्याय नमः।
ॐ ह्रीं आदिभूताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलागमवेदिने नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः।
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।
ॐ ह्रीं इनाय नमः।
ॐ ह्रीं विश्वरूपाय नमः।
ॐ ह्रीं इज्याय नमः।
ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः।
ॐ ह्रीं भानवे नमः।
ॐ ह्रीं इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः।
ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः।
ॐ ह्रीं ईशाय नमः।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः।
ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः।
ॐ ह्रीं सुवर्चसे नमः।
ॐ ह्रीं वसुप्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं वसवे नमः।
ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं उग्ररूपाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः।
ॐ ह्रीं विवस्वते नमः।
ॐ ह्रीं उद्यत्किरणजालाय नमः।
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं वीराय नमः।
ॐ ह्रीं निर्जराय नमः।
ॐ ह्रीं जयाय नमः।
ॐ ह्रीं उरुद्वयभावरूपयुक्त –सारथये नमः।
ॐ ह्रीं ऋणिबन्धाय नमः।
ॐ ह्रीं रुग् हन्त्रे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्षचक्रचराय नमः।
ॐ ह्रीं ऋजुस्वभावचित्ताय नम :।
ॐ ह्रीं नित्यस्तुत्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऋकारमातृकावर्ण –रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलत्-तेजसे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्षादिनाथमित्राय नमः।
ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय नमः।
ॐ ह्रीं लुप्तदन्ताय नमः।

ॐ ह्रीं शान्ताय नमः।
ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः।
ॐ ह्रीं घनाय नमः।
ॐ ह्रीं कनत्कनकभूषाय नमः।
ॐ ह्रीं खद्योताय नमः।
ॐ ह्रीं ऊनिताखिल दैत्याय नमः।
ॐ ह्रीं सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अपवर्गप्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्तशरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं एकाकिने नमः।
ॐ ह्रीं भगवते नमः।
ॐ ह्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः।
ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः।
ॐ ह्रीं घृणिभृते नमः।
ॐ ह्रीं बृहते नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः।
ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः।
ॐ ह्रीं शर्वाय नमः।
ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शौरये नमः।
ॐ ह्रीं दशदिक् सम्प्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं भक्तवश्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं जयिने नमः।
ॐ ह्रीं जगदानन्द हेतवे नमः।
ॐ ह्रीं जन्ममृत्युजराव्याधि वर्जिताय नमः।
ॐ ह्रीं उच्चस्थानसमारूढ रथस्थाय नमः।
ॐ ह्रीं असुरारये नमः।
ॐ ह्रीं कमनीयकराय नमः।
ॐ ह्रीं अब्जवल्लभाय नमः।
ॐ ह्रीं अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः।
ॐ ह्रीं आत्मरूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।
ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः।
ॐ ह्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः।
ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं रवये नमः।
ॐ ह्रीं हरये नमः।
ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
ॐ ह्रीं तरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः।
ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः।
ॐ ह्रीं भास्कराय नमः।
ॐ ह्रीं आदिमध्यान्तरहिताय नमः।
ॐ ह्रीं सौख्यप्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं सकलजगतांपतये नमः।
ॐ ह्रीं सूर्याय नमः।

ॐ ह्रीं कवये नमः।
ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः।
ॐ ह्रीं नारायणाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।
ॐ ह्रीं परेशाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः।
ॐ ह्रीं तेजोरूपाय नमः।
ॐ ह्रीं भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः।
ॐ ह्रीं श्रीहिरण्यगर्भाय नमः।
ॐ ह्रीं निखिलागमवेद्याय नमः।
ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः।
ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः।
ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः।
ॐ ह्रीं छायाउषादेवी समेताय नमः।

॥ इति श्रीसूर्य अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ सिद्ध सूर्य यंत्रम् ॥

यंत्र महात्म्य- यह चमत्कारी सूर्य यंत्र मनुष्य के समस्त कार्यों को सिद्ध करता है। इस यंत्र के प्रभाव से भगवान् सूर्यनारायण की कृपा प्राप्त होती है। इस यंत्र को धारण करने से खाँसी, दमा, गर्मी, कुष्ठरोग त्वचा व नेत्ररोग नष्ट होते है।

यंत्र निर्माण की विधि इस प्रकार है-

गुरु-शुक्रास्त, मलमास एवं गुर्वादित्यादि (सूर्य-बृहस्पति जब एक राशिस्थ हो ऐसे) निषिद्ध समय को छोड़कर शुद्ध दिनों में किसी भी महिने के शुक्ल पक्ष में रविवार को जिस दिन कृत्तिका नक्षत्र हो, उस दिन रविकृत्तिका योग में अथवा उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, पुष्य नक्षत्र में आक के दूध, केसर, गोरोचन और आक के पत्तों के रस से मसी (स्याही) बनाकर आक की कलम से इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर **"ॐ ह्रीं हंसः घृणिः सूर्याय नमः"** इस सूर्य मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर सुवर्ण के ताबीज में रखकर दक्षिण भुजा में धारण करने से मनुष्य के सब कार्य सिद्ध होते है (साधारण मनुष्य ताँबे के ताबीज में धारण कर सकते है)

किसी भी महिने के शुक्लपक्ष में रविवार के दिन जब पुष्य, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र रहे तब धारण करने से सूर्य का अनिष्ट फल शमन होता है एवं मनुष्य का तेज बढता है।

यंत्रम्-

६	३२	३	३४	३५	१
७	११	२७	२८	८	३०
१९	१४	१६	१५	२३	२४
१८	२०	२२	२१	१७	१३
२५	२९	१०	९	२६	१२
३६	५	३३	४	२	३१

॥ अथ सूर्याथर्वशीर्षमुपनिषत् ॥

अथ सूर्याथर्वाङ्गिरसं व्याख्यास्यामः ब्रह्मान्रिषिः आदित्यो देवता गायत्री छन्दः हंसाद्यग्निनारायण युक्तं बीजम्। हृल्लेख शक्तिः। द्विपदादिसर्ग संयुक्तं कीलकम्। धमार्थ काममोक्षेषु जपे विनियोगः।

षट्स्वरारूढ बीजेन षडंगं रक्ताम्बुजसंस्थं सप्ताश्वरथिनं हिरण्यवर्णं। चतुर्भुजं पद्मद्वयाभय वरदहस्तं। कालचक्र प्रणेतारं च श्रीसूर्यनारायणं॥ यऽ एवं वेद स वै ब्राह्मणः। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मह ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं तत्सवितुर वरेण्यम् भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् परोरजसे सावदोम् ॐ आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। सूर्याद्वैखल्विमानि भूतानि जायन्ते। सूर्याद्यज्ञाः पर्जन्योऽन्नमात्मा।

नमस्ते आदित्याय त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि। त्वमेव प्रत्यक्ष मृगसि। त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि। त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि। त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वासि। त्वमेव सर्वं छंदोसि। आदित्याद्वायुर्जायते। आदित्याद्भूमिर्जायते। आदित्यादापोजायते। आदित्याज्ज्योतिर्जायते। आदित्याद्व्योम दिशो जायंते। आदित्याद्वेदा जायंते। आदित्याद्देवा जायंते। आदित्यो वा ऽएष एतन्मंडलंपति। असावादित्यो ब्रह्म। आदित्यो ऽन्तःकरण मनोबुद्धि चित्ताहंकाराः। आदित्यो वै व्यान समानोदानापान प्राणाः। आदित्यो वै श्रोत्र त्वक् चक्षु रसनानासाः। आदित्यो वै वाक् पाणि पादोपस्थ पायूनि।

आदित्यो वै शब्द स्पर्श रूप रस गंधाः। आदित्यो वै वचना दान गमनानन्द विसर्गाः। आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः। नमो मित्राय भानवे मृत्योर्मा पाहिभ्राजिष्णवे विश्वहेतवे नमः। सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अंतरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः सूर्याद्वै भूतानि सूर्येण पालितानि तु। सूर्य लयं प्रानुवंति य सूर्यः सोहमेव च। चक्षुर्नो देवः सविता। चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः।

आदित्याय विद्महे सहस्त्रकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्। सविता पश्चात्तात्। सवितापुरस्तात्। सवितोत्तरात्तात् सविता धरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिम्। सवितानोरासतांदीर्घमायुः ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म घृणिरिति द्वे अक्षरे सूर्य इत्यक्षर द्वयम्। आदित्य इति। त्रीण्यक्षराणि एतद्वै सूर्यास्याष्टाक्षरमनुम् 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्य' इति मंत्रः। यः सदाहर हर्जषति। सो ऽब्रह्मण्यो ब्राह्मणो भवति। सूर्याभिमुखं जप्त्वा महाव्याधि भयात्प्रमुच्यते। अलक्ष्मीर्नश्यति अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति। अपेयपानात्पूतो भवति। अगम्या- गमनात्पूतो भवति। व्रात्य संभाषणात्पूतो भवति। मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत् सद्यः पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सैषा सावित्री विद्या न कस्यचित्प्रशंसेत्। एतन्महाभागः प्रातः पठति स भाग्यवान जायते। पशून विदति वेदार्थं लभते। त्रिकालं जत्वा क्रतु शतफलं प्राप्नोति। हस्तादित्ये जपति स महामृत्यं तरति। य एवं वेद।

(इत्युपनिषत्। इति सूर्याथर्वशीर्षम्।)
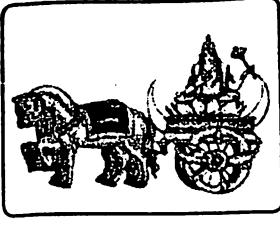
॥ चन्द्र तन्त्रम् ॥

॥ अथ चन्द्रवैदिकमन्त्रप्रयोगः॥

मंत्रः - ॐ इमंदेवाऽअसपत्नठं.सुवध्वम्महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेंद्रस्येंद्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवो मीराजासोमोस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥१२॥

विनियोगः- ॐ इमं देवा इति मन्त्रस्य गौतम ऋषिः। द्विपदाविराट् छन्दः। सोमो देवता। असपत्नमिति बीजम्। सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादि न्यासः- ॐ गौतम ऋषये नमः शिरसि॥१॥ ॐ द्विपदा विराट्छन्दसे नमः मुखे॥२॥ ॐ सोमदेवतायै नमः हृदि॥३॥ॐ असपत्न बीजाय नमः गुह्ये॥४॥ ॐ सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥५॥

करन्यासः- ॐ इमं देवाऽअसपत्न ठ्ठ सुवध्वमित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥१॥ ॐ महतेक्षत्रायेति तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ महतेज्ज्यैष्ठ्यायेति मध्यमाभ्यां नमः॥३॥ ॐ महते जानराज्ज्यायेन्द्रियायेत्यनामिकाभ्यां नमः॥४॥ ॐ इमममुष्यपुत्रममुष्यै इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥ ॐ पुत्रमस्यै व्विशऽएषवो मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठ्ठ राजेति करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥६॥ इति करन्यासः॥

हृदयादिन्यासः - ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ठं सुवध्वमिति हृदयाय नमः॥१॥ ॐ महते क्षत्रायेति शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ महतेज्ज्यैष्ठ्यायेति शिखायै वषट्॥३॥ ॐ महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्रियायेति कवचायहुम्॥४॥ॐ इमममुष्यपुत्र ममुष्यै इति नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐ पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठ्ठ राजा इत्यस्त्राय फट्॥६॥ इति हृदयादिन्यासः।

मन्त्रन्यासः - ॐ इमं देवा इति शिरसि॥१॥ ॐ असपत्नमिति

ललाटे ॥२ ॥ॐ सुवध्वमिति नासिकायाम् ॥३ ॥ ॐ महतेक्षत्रायेति मुखे ॥४ ॥ ॐ महते ज्यैष्ठ्यायेति कंठे ॥५ ॥ ॐ महतेजानराज्यायेंद्रस्येंद्रियायेति हृदये ॥६ ॥ इमममुष्येतिनाभौ ॥७ ॥ ॐ पुत्रममुष्यै इति कट्याम् ॥८ ॥ॐ पुत्रमस्यै इति जंघयोः ॥९ ॥ ॐ विशऽएषवोमीराजासोमो -स्माकंब्राह्मणाना ७ राजेति पादयोः ॥१० ॥

एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्-

ॐ श्वेतांबरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डकरो द्विबाहुः ।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

अस्य जपसंख्या एकादशसहस्त्राणि ११००० जपांते पलाशसमित्तिल पायसघृतैर्दशांशहोमः ॥ अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

॥ अथ दानद्रव्याणि ॥

सद्वंशपात्र स्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ।
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुंभम् ॥

॥ इति चंद्रमंत्रप्रयोगः ॥

॥ चन्द्र तांत्रिक मंत्राः ॥

एकाक्षर मंत्र- सौं

इस मंत्र के ऋषि भार्गव, छन्द पंक्ति,देवता चन्दमा है।

षडंगन्यास- **आं सौं हृदयाय नमः । ईं सौं शिरसे स्वाहा । ऊं सौं शिखायै वषट् । ऐं सौं कवचाय हुम् । औं सौं नेत्रत्रयाय वौषट् । अः सौं अस्त्राय फट् ।**

श्वेताब्जं संस्थं रजतकान्ति-हारविराजितम् ।
नीलकेशं च कुमुदं वामे दक्षकरे वरम् ।
दधानं भावयेद्देवं मृगाङ्कं मणि-मौलिकम् ॥

त्र्यक्षर मंत्र- वं सं वं

इस मंत्र के **एकतत्त्व ऋषि। छन्द श्री। सोम देवता। 'रुं'** बीज तथा **आं** शक्ति है।

इस अमृत मंत्र से जल अभिमंत्रित कर पीने से धनायु की वृद्धि होती है। चन्द्रविम्ब में ध्यान कर अमृत किरणों का आवाहन करना चाहिये।

॥ षडक्षर मंत्रः ॥

ॐ स्वौं सोमाय नमः।

इसके अंगन्यास **स्वां, स्वीं, स्वूं, स्वैं, स्वौं स्वः** से करें।

ध्यानम्–

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिंबाननं
मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः।
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितं
स्वस्यांकस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे ॥

इस मंत्र का मस्तक में ध्यान करने से अकाल मृत्यु तथा कष्टों से मुक्ति मिलती है। दीर्घायु होकर राज्यैश्वर्य की प्राप्ति होवें। चार लाख जप करने पर अनायास धन प्राप्ति होवें।

पूर्णिमा के दिन निराहार रहकर चन्द्रोदय समय पूर्व पश्चिमाभिमुख तीन आयताकार मण्डल भूमि पर बनायें। उसके पश्चिम में विहित आसन पर बैठकर मंडल में सोमपूजा कर उस पर चाँदी के पात्र में दूध भरकर रखें। उस पात्र का स्पर्श १०८ बार मंत्र जपे।

तदुपरान्त निम्न मंत्र से अर्घ देवें–

ॐ विद्ये विद्यामालिनी चन्द्रिणि चारुमुखि स्वाहा ।

इससे सर्वकामना सिद्ध होवें। विद्या की प्राप्ति होवें।

॥ दशाक्षर मंत्रः ॥

ॐ श्रीं श्रीं श्रूं सों सोमाय नमः।

अन्यच्च– ॐ श्रीं श्रीं श्रूं सः सोमाय नमः।

इसके ऋष्यादि पूर्ववत् है।

॥ अथ चन्द्रमोमंत्रप्रयोग:॥

अथ चन्द्रमसो वक्ष्ये मनुं सर्वसमृद्धिदम्॥

॥ अथ षडक्षरचन्द्रमंत्रप्रयोग:॥

मंत्रो यथा- (शारदातिलके) **'सौं सोमाय नम:'** इति षडक्षरमंत्र:॥

विनियोग:- **अस्य सोममंत्रस्य भृगुर्ऋषि:। पंक्तिश्छंद:। सोमो देवता। सौं बीजम्॥ नम: शक्ति:। मम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोग:॥**

ऋषिन्यास:-**ॐ भृगुऋषये नम:,शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नम:,मुखे। सोमदेवतायै नम:,हृदि। सौं बीजाय नम:, गुह्ये। नम: शक्तये नम:,पादयो:। विनियोगाय नम:। सर्वांगे॥ इति ऋष्यादिन्यास:।**

करन्यास:- **ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ सीं तर्जनीभ्यां नम:। ॐ सूं मध्यमाभ्यां नम:। ॐ सैं अनामिकाभ्यां नम:। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ स: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।**

अङ्गन्यास:-**ॐ सां हृदयाय नम:। ॐ सीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ सूं शिखायै वषट्॥ ॐ सैं कवचाय हुम्॥ ॐ सैं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ स्त्र: अस्त्राय फट्॥ इति हृदयादिषडंगन्यास:॥**

ध्यानम्—

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिंबाननं
मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तम:।
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं च दधतं नीलालकोद्भासितं
स्वस्यांकस्थभृगूदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे॥

॥ यंत्रपूजनम्॥

सर्वतोभद्रमंडले सोमतोभद्रमंडले वा मं मंडूकादिसोमांतपीठ देवता: संस्थाप्य **'ॐ मं मंडूकादिसोमांतपीठदेवताभ्यो नम:।'** इति पीठदेवता:संपूज्य तन्मध्ये **''ॐ सौं सोमाय रोहिणीपतये नम:''** इति संपूज्य रौप्यादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युतारणपूर्वकं**''सौं सर्वशक्तिकमलासनाय नम: ''** इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारै: संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात्॥

तत्र क्रमः ॥

सोम यंत्र पर चन्द्रमा की पूजा कर यंत्र के आवरण देवताओं का पूजन करें।
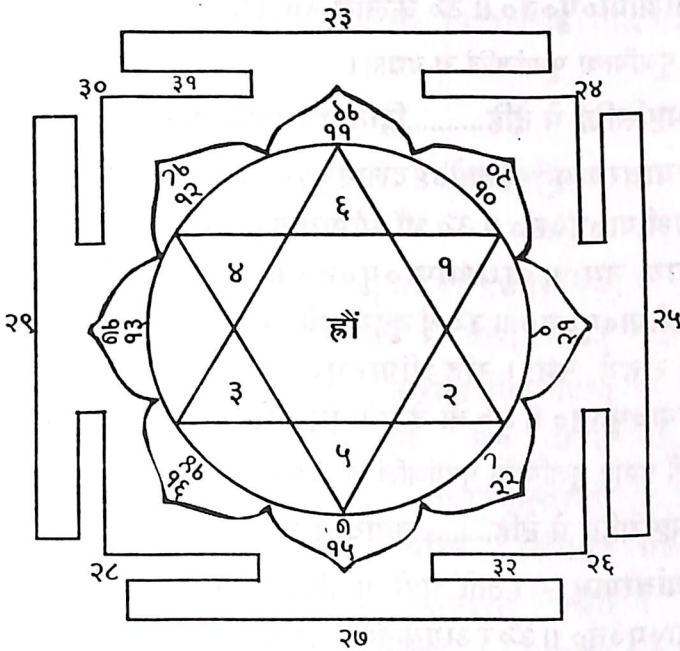
चन्द्र पूजन यंत्रम्

प्रथमावरणम् - (षट्कोणकेसरेषु) अग्निकोणे- **ॐ सां हृदयाय नमः।** निर्ऋतिकोणे- **ॐ सीं शिरसे स्वाहा।** वायव्ये- **ॐ सूं शिखायै वषट्।** ऐशान्ये-**ॐ सैं कवचाय हुम्।** पूज्यपूजकयोर्मध्ये- **ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्।** देवतापश्चिमे-**ॐ सः अस्त्राय फट्॥** इति षडंगानि पूजयेत्॥

मूलमन्त्र मंत्र के पुष्पाञ्जलि देवें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** इति वदेत्।

द्वितीयावरणम् - ततोऽष्टदले- पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशःप्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च। **ॐ रोहिण्यै नमः। रोहिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥** इति सर्वत्र॥ **ॐ कृत्तिकायै नमः। कृत्तिकाश्रीपा०पू०त०॥ ॐ रेवत्त्यै नमः। रेवती श्री पा०पू०त०॥ ॐ**

भरण्यै नमः। भरणीश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ रात्र्यै नमः। रात्रि श्रीपा०पू०त० ॥ ॐ आर्द्रायै नमः। आर्द्राश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः। ज्योत्स्नाश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ कलायै नमः। कलाश्रीपा०पू०त० ॥

इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि..........द्वितियावरणार्चनम्। इतिद्वितीयावरणम् ॥

तृतीयावरणम् -(ततोऽष्टदलाग्रेषु)- **ॐ आं आदित्याय नमः। आदित्यश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ भौं भौमाय नमः। भौमश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ बुं बुधाय नमः॥ बुधश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः। शनैश्चरश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः। बृहस्पतिश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ रां राहवे नमः। राहुश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ शुं शुक्राय नमः। शुक्रश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ कें केतवे नमः। केतु श्री पा०पू०त० ॥**

इत्यष्टौ ग्रहान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि..........तृतीयावरणार्चनम्। इति तृतीयावरणम्।

चतुर्थावरणम् - (ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण)- **ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्रश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ रं अग्नये नमः। अग्निश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ मं यमाय नमः। यम श्री पा०पू०त० ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिश्रीपा०पू०त० ॥** ॐ वं वरुणाय नमः। वरुण श्रीपा०पू०त० ॥ ॐ यं वायवे नमः। **वायुश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः। कुबेरश्रीपा०पू०त० ॥ ॐ हं ईशानाय नमः। ईशानश्रीपा०पू०त० ॥**

इन्द्रेशानयोर्मध्ये- **ॐ आं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपा०पू०त० ॥** वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये - **ॐ ह्रीं अनंताय नमः। अनंतश्रीपा०पू०त० ॥**

इति दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि..........चतुर्थावरणार्चनम्। इति चतुर्थावरणम्।

पञ्चमावरणम् - (तद्बाह्ये)- **ॐ वं वज्रायनमः। ॐ शं शक्तयेनमः। ॐ दं दंडायनमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पं पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्रायनमः।**

इत्यस्त्राणि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं षडलक्षजप: षट्सहस्त्रहोम:। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मण भोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मंत्र: सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥

तथा च-

रसलक्षं जपेन्मंत्रं साधको विजितेन्द्रिय: ।
तत्सहस्त्रं प्रजुहुयात्पायसेन ससर्पिषा ॥१॥
सोमांतं पूजिते पीठे पूजयेद्रोहिणीपतिम् ।
एवं सिद्धमनुर्मंत्री संपदां वसतिर्भवेत् ॥२॥
हृत्पुंडरीकमध्यस्थं ताराहारविभूषणम् ।
तारापतिं स्मरन्मंत्री त्रिसहस्त्रं मनुं जपेत् ॥३॥
राज्यैश्वर्यं दरिद्रोऽपि प्राप्नुयाद्वत्सरांतरे ।
पूर्वोक्तसंख्यं प्रजपेच्छशिनं मूर्ध्नि चिंतयेत् ॥४॥
रोगापमृत्युदु:खानि जित्वा वर्षशतं वसेत् ।
ब्रह्मचर्यरत: शुद्धश्चतुर्लक्षमिदं जपन् ॥५॥
निधानं भूगतं सद्य: प्राप्नुयाद्यत्नवर्जितम् ।
जितेन्द्रियो जपेन्मंत्रं पूर्णिमायां विशेषत: ॥६॥
भवेत्सौभाग्यनिलय: संपदामपरो निधि: ।
घोराञ्ज्वराञ्छिरोरोगानभिचारानुपद्रवान् ॥७॥
विद्विषामपि संघातं नाशयेन्मनुनाऽमुना ।
पौर्णमास्यां निराहारो दद्यादर्घ्यं विधूदये ॥८॥
प्राक्प्रत्यगायतं कुर्याद्भूतले मंडलत्रयम् ।
निषण्ण: पश्चिमे मंत्री मंडलेविहितासने ॥९॥
मध्यस्थे स्थापयेत्पश्चात्पूजाद्रव्याण्यशेषत: ।
अस्मिन्हि मंडले सोममर्चयित्वांबुजान्विते ॥१०॥
राजतं चषकं भद्रं स्थापयेत्पुरत: सुधी: ।
गोदुग्धेन समापूर्य स्पृष्ट्वा तं प्रजपेन्मनुम् ॥११॥

अष्टोत्तरशतं पश्चाद्विद्यामंत्रेण देशिकः ।
दद्यादर्घ्यं शशांकाय सर्वकामार्थसिद्धये ॥१२॥
अनेन विधिना कुर्वन्प्रतिमासमतंद्रितः ।
षणमासाभ्यंतरे सिद्धिं साधकेंद्रः समश्नुते ॥१३॥
श्रियमत्यूर्जितां पुत्रान्सौभाग्यं विपुलं यशः ।
कन्यामिष्टामवाप्नोति कन्यापि वरमीप्सितम् ॥१४॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वं दद्यान्निशापतिः ।

॥ इति षडक्षरचन्द्रमोमंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ विद्या प्राप्ति हेतु प्रयोग ः॥

मंत्रः- विद्ये विद्यामालिनि चंद्रिणी चन्द्रमुखी स्वाहा।

इस मंत्र के जप कर पूर्णिमा को अर्घादि [illegible]न करें।

॥ चन्द्र कवचम् ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीचन्द्र कवचस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि गौतम ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीचन्द्र-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

ध्यानम्—

समं चतुर्भुजं वन्दे केयूर-मुकुटोज्ज्वलम् ।
वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम् ॥

॥ कवच—पाठ ॥

शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः ।
चक्षुषी चन्द्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः ॥
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः ।
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कन्धौ जैवातृकस्तथा ॥

करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः ।
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकरभूषणः ॥
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु मधुकरः ।
ऊरू तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा ॥
अब्धिजः पातु मे जङ्घे प ातु पादौ विधुः सदा ।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः ॥
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति प्रदायकम् ।
यः पठेच्छृणुयाद् वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामले तन्त्रे श्री चन्द्रकवचम् ॥

॥ श्रीचन्द्राष्टविंशति नाम स्तोत्रम् ॥

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते! ।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीचन्द्राष्ट विंशति नाम स्तोत्रस्य गौतम ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीचन्द्रो देवता, श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि श्री गौतम ऋषये नमः। मुखे विराट् छन्दसे नमः। हृदि श्रीचन्द्रोदेवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीचन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

॥ नामावलि स्तोत्रम् ॥

सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः ।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ।
आत्रेयः इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कलानिधिः ॥
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णव सम्भवः ।
नक्षत्रनायकः शम्भु शिरश्चूडामणिर्विभुः ॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत् ।

प्रत्यहं भक्ति संयुक्तस्तस्य पीड़ा विनश्यति ।
तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समीहितम् ।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामले चन्द्राष्ट विंशति नाम स्तोत्रम् ॥

॥ अथ चन्द्रमसस्तोत्रम् ॥

ॐ श्वेताम्बरःश्वेतवपुः किरीटीश्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः ।
चन्द्रोऽमृतात्मावरदः शशांकः श्रेयांसि मह्यं प्रददातुदेवः ॥१ ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ॥२ ॥
क्षीरसिन्धुसमुत्पन्नो रोहिणीसहितः प्रभुः ।
हरस्य मुकुटावास बालचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥४ ॥
सुधामया यत्किरणाः पोषयंत्योषधीवनम् ।
सर्वान्नरसहेतुं तं नमामि सिन्धुनन्दनम् ॥५ ॥
राकेशं तारकेशं च रोहिणीप्रियसुन्दरम् ।
ध्यायतां सर्वदोषघ्नं नमामीन्दुं मुहुर्मुहुः ॥६ ॥

॥ इति चन्द्रमसस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ चन्द्रशान्ति प्रयोगः ॥

रोग लक्षण -

नेत्ररोग, हिस्टीरिया, पागलपन, खाँसी-जुकाम, उदर रोग, दमा, ब्रोंकाइटिस, गर्भाशय व प्रजनन अंगों के रोग, अतिसार, पेचिश आदि रोगों में एवं चन्द्रदोष में इस यंत्र का प्रयोग करें।

उपचार-

१. उक्त चन्द्रयंत्र सोमवार या रोहिणी या हस्त या श्रवण नक्षत्र के दिन अष्टगंध से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर चाँदी के ताबीज में प्राणप्रतिष्ठा,

पूजन कर धारण करें।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

२. क्षीरणी (खिरनी) की जड़ सोमवार को सफेद डोरे में चन्द्र मंत्र से अभिमंत्रित करके बाँधने से चन्द्र बाधा की शान्ति होती है।

३. पञ्चगव्य, चाँदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद को जल में डालकर स्नान करने से चन्द्र बाधा की शान्ति होती है।

४. बाँस के पत्र में भरा हुआ चावल, कपूर, मोती, चाँदी, श्वेत वस्त्र, शङ्ख, दही, मिश्री, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय का घी, बछड़े सहित श्वेत गाय देने से चन्द्र बाधा की शान्ति होती है।

ध्यान – नित्य हाथ जोड़कर चन्द्रमा का '**ध्यान**' इस प्रकार करें–

श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्ड-धरो द्वि-बाहुः ।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी, मयि प्रसादं विदधातु देवः ॥

मन्त्र– निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का नित्य जप करे। यथा–

१ **ॐ सों सोमाय नमः।**

२ **ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।**

३ **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।**

४ **ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमहि तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।**

(प्रत्येक मन्त्र की जप संख्या ४४ हजार है)

॥ श्रीसोम (चन्द्र) अष्टोत्तरशत–नामावली ॥

ॐ सौं श्रीमते नमः।
ॐ सौं शशधराय नमः।
ॐ सौं चन्द्राय नमः।
ॐ सौं ताराधीशाय नमः।
ॐ सौं निशाकराय नमः।
ॐ सौं सुधानिधये नमः।
ॐ सौं सदाऽऽराध्याय नमः।
ॐ सौं सत्पतये नमः।

ॐ सौं साधुपूजिताय नमः।
ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः।
ॐ सौं जयोद्योगाय नमः।
ॐ सौं ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः।
ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः।
ॐ सौं वीराय नमः।
ॐ सौं विश्वेशाय नमः।
ॐ सौं विदुषां पतये नमः।
ॐ सौं दोषाकराय नमः।
ॐ सौं दुष्टदूराय नमः।
ॐ सौं पुष्टिमते नमः।
ॐ सौं शिष्टपालकाय नमः।
ॐ सौं अष्टमूर्तिप्रियाय नमः।
ॐ सौं अनन्ताय नमः।
ॐ सौं कष्टदारुकुठाराय नमः।
ॐ सौं स्वप्रकाशाय नमः।
ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः।
ॐ सौं द्यु-चराय नमः।
ॐ सौं देवभोजनाय नमः।
ॐ सौं कलाधराय नमः।
ॐ सौं कालहेतवे नमः।
ॐ सौं कामकृते नमः।
ॐ सौं कामदायकाय नमः।
ॐ सौं मृत्युसंहारकाय नमः।
ॐ सौं अमर्त्याय नमः।
ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः।
ॐ सौं क्षपाकाराय नमः।
ॐ सौं क्षीणपापाय नमः।
ॐ सौं क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः।
ॐ सौं जैवातृकाय नमः।
ॐ सौं शुचये नमः।
ॐ सौं शुभ्राय नमः।
ॐ सौं जयिने नमः।
ॐ सौं जयफलप्रदाय नमः।
ॐ सौं सुधामयाय नमः।
ॐ सौं सुरस्वामिने नमः।
ॐ सौं भुक्तिदाय नमः।
ॐ सौं भद्राय नमः।
ॐ सौं भक्तानामिष्टदायकाय नमः।
ॐ सौं भक्तदारिद्रभञ्जनाय नमः।
ॐ सौं सामगानप्रियाय नमः।
ॐ सौं सर्वरक्षकाय नमः।
ॐ सौं सागरोद्भवाय नमः।
ॐ सौं भयान्तकृते नमः।
ॐ सौं भवितगम्याय नमः।
ॐ सौं भवबन्धविमोचकाय नमः।
ॐ सौं जगत्प्रकाशकरणाय नमः।
ॐ सौं जगदानन्दकारणाय नमः।
ॐ सौं निःसपत्नाय नमः।
ॐ सौं निराहाराय नमः।
ॐ सौं निर्विकाराय नमः।

ॐ सौं निरामयाय नमः।

ॐ सौं भूछायाऽऽच्छादिताय नमः।

ॐ सौं भव्याय नमः।

ॐ सौं भुवनप्रतिपालकाय नमः।

ॐ सौं सकलार्तिहराय नमः।

ॐ सौं सौम्यजनकाय नमः।

ॐ सौं साधुवन्दिताय नमः।

ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः।

ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः।

ॐ सौं सनकादिमुनिस्तुताय नमः।

ॐ सौं सितछत्रध्वजोपेताय नमः।

ॐ सौं सिताङ्गाय नमः।

ॐ सौं श्वेतमाल्याम्बरधराय नमः।

ॐ सौं सितभूषणाय नमः।

ॐ सौं श्वेतगन्धानुलेपनाय नमः।

ॐ सौं दशाश्वरथसंरूढाय नमः।

ॐ सौं दण्डपाणये नमः।

ॐ सौं धनुर्धराय नमः।

ॐ सौं कुन्दपुष्पोज्ज्वला
काराय नमः।

ॐ सौं नयनाब्जसमुद्भवाय नमः।

ॐ सौं आत्रेयगोत्रजाय नमः।

ॐ सौं अत्यन्तविनयाय नमः।

ॐ सौं प्रियदायकाय नमः।

ॐ सौं करुणारससम्पूर्णाय नमः।

ॐ सौं कर्कटकप्रभवे नमः।

ॐ सौं चतुरस्त्रसमारूढाय नमः।

ॐ सौं अव्ययाय नमः।

ॐ सौं चतुराय नमः।

ॐ सौं दिव्यवाहनाय नमः।

ॐ सौं विवस्वन्मण्डलाज्ञेयवासाय
नमः।

ॐ सौं वसुसमृद्धिदाय नमः।

ॐ सौं महेश्वरप्रियाय नमः।

ॐ सौं दान्ताय नमः।

ॐ सौं मेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः।

ॐ सौं ग्रहमण्डल
मध्यस्थाय नमः।

ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः।

ॐ सौं द्विजराजाय नमः।

ॐ सौं द्युतितकाय नमः।

ॐ सौं द्विभुजाय नमः।

ॐ सौं द्विजपूजिताय नमः।

ॐ सौं औदुम्बरनगावासाय नमः।

ॐ सौं उदाराय नमः।

ॐ सौं रोहिणीपतये नमः।

ॐ सौं नित्योदयाय नमः।

ॐ सौं मुनिस्तुताय नमः।

ॐ सौं नित्यानन्दफलप्रदाय नमः।

ॐ सौं सकलाह्लादनकराय नमः।

ॐ सौं पलाशसमिधप्रियाय नमः।

ॐ सौं चन्द्रमसे नमः।

॥ श्री भौमतन्त्रम् ॥

॥ अथ भौमवैदिकमंत्रप्रयोग: ॥

मंत्र: - ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिव: ककुत्पति:-पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति ॥ इति मंत्र।

विनियोग:- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मंत्रस्य विरूपाक्ष ऋषि:। गायत्री छंद:। भौमो देवता। ककुद्बीजम्। भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ॥

ऋष्यादि न्यास:- ॐ विरूपाक्ष ऋषये नम: शिरसि ॥१॥ ॐ गायत्री छंदसे नम: मुखे ॥२॥ ॐ भौमदेवतायै नम: हृदि ॥३॥ ॐ ककुद्बीजाय नम: गुह्ये ॥४॥ ॐ भौमप्रीतये जपे विनियोगाय नम: सर्वांगे ॥५॥ इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ अग्निर्मूर्द्धेत्यंगुष्ठाभ्यां नम: ॥१॥ ॐ दिव: ककुदिति तर्जनीभ्यां नम: ॥२॥ पति: पृथिव्याऽअयमिति मध्यमाभ्यां नम: ॥३॥ ॐ अपामित्य अनामिकाभ्यां नम: ॥४॥ ॐ रेताꣳसीति कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ जिन्वतीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। इति करन्यास:।

हृदयादिन्यास:- अग्निर्मूर्द्धेति हृदयाय नम:। ॐ दिव: ककुदिति शिरसे स्वाहा ॥ ॐ पति: पृथिव्याऽअयमिति शिखायै वषट्। ॐ अपां कवचाय हुं। ॐ रेताꣳसीति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ जिन्वतीत्यस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिन्यास:।

मन्त्रन्यास:- ॐ अग्निरिति शिरसि ॥१॥ ॐ मूर्धा ललाटे ॥२॥ ॐ दिवो मुखे ॥३॥ ॐ ककुदितिहृदये ॥४॥ ॐ पतिर्नाभौ ॥५॥ ॐ पृथिव्या: कट्याम् ॥६॥ ॐ अयमूर्वो: ॥७॥ ॐ अपां जानुनो: ॥८॥ ॐ रेताꣳसि गुल्फयो: ॥९॥ ॐ जिन्वति पादयो: ॥१०॥

इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्-

ॐ रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत् ।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात् ।

भौमे दशसहस्त्राणीति जपसंख्या १०००० । जपांतेत खदिरसमित्तिल पायसघृतैर्दशांशहोमः ॥ अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ।

अथ दानद्रव्याणि-

प्रवालगोधूममसुरिकाश्च वृषोरुणाश्चापि गुडः सुवर्णम् ।
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदंति दानम् ॥१॥

॥ इति भौममंत्रप्रयोगः ॥

॥ भौम तांत्रिक मंत्राः॥

१ षडक्षर मंत्र- ॐ हां हंसः खः खः ।

इसके ऋपि विरूप, छन्द गायत्री, एवं धरात्मज देवता है।

जपाभं शिवस्वेदजं हस्तेपद्म गदा शूल शक्तिर्वरं धारयन्तम् ।
अवन्तीसमुत्थं सु-मेषासनस्थं धरानंदनं रक्तवस्त्रं समीडे ॥

(मेरुतंत्रे)-

जपाकुसुम-सङ्काशं शक्तिशूल गदाधरम् ।
मेषस्थं रक्तवस्त्रं तं वन्देऽहं धरात्मजम् ॥

२ अष्टाक्षर मंत्र- ॐ अङ्गारकाय नमः ।

इसके ब्रह्मा ऋषि, छन्द गायत्री, देवता भूमिपुत्र है।

आं इं ऊं ऐं औं अः से एक-एक षडङ्गन्यास करें।

नमाम्यङ्गारकं रक्तं रक्ताम्बर विभूषणम् ।
जानुस्थ वामहस्ताढ्यं भाजनेतर-पाणिकम् ॥

नवाक्षर मंत्र- ॐ अङ्गारकाय नमः ।

इसके ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् है। बीज-अं तथा शक्ति आपः है।

दशाक्षर मंत्र- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः !

अन्यच्च- ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः।

इस मंत्र के विरूपाक्ष ऋषि। छन्द गायत्री। देवता मंगल। बीज- ह्रीं। शक्ति-श्रीं। कीलक क्लीं है।

षडंगन्यासः- ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से हृदयादि न्यास करें।

वर्णन्यासः- ॐ ब्रह्मरन्ध्रे। श्रीं दक्षकर्णे। क्लीं वामकर्णे। मं दक्षनेत्रे। नुं वामनेत्रे। भौं-दक्षनासायाम्। मां -वामनासायाम्। यं मुखे। नं लिङ्गे। मः नमः गुदे।

देवानां स्वाङ्गे न्यासः- मंगल के २१ नामो से अपने अंगो में प्रत्येक नाम से न्यास करें।

यथा- ॐ मंगलाय नमः शिखायां। ॐ भूमिपुत्राय नमः मूर्ध्नि।

१. शिखा। २. मूर्ध्नि। ३. मस्तक। ४. दोनों नेत्र। ५. दोनों कर्ण। ६. दोनों नासा। ७. मुख। ८. चिबुक। ९. कण्ठ। १०. दोनों स्कंध। ११. दोनों बाहु। १२. दोनों हाथ। १३. उदर। १४. नाभि। १५. कटि। १६. लिंग। १७. स्फिच। १८. दोनों जानु। १९. दोनों जंघा। २०. पादयोः। २१. पार्श्वे।

ग्रह नामानि-

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥
लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
ॐ अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥

ध्यानम्-

ध्याये भौमं रक्तवर्णं रक्तमाल्यांशुकावृतं।
कण्ठे कमलमालाढ्यं करयो शक्ति शूलके॥
भगवान् देवदेवेश! एह्येहि महाप्रभो।
ऐश्वर्यं वशमायातु भूतलेषु समाश्रिताम्।

मङ्गलानां मङ्गलं च सर्वकामा फलप्रदम् ॥

एकादशाक्षर मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं म्लां मं मङ्गलाय नमः।

ऋष्यादि दशाक्षर के ही है।

॥ अथ धनपुत्रादिप्रद मंगलमंत्र विधानम् ॥

मंत्रो यथा- "ॐ हां हंसः खं खः" (मंत्रमहोदधौ) इति षडक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् - मार्गशीर्षे वैशाखे वा शुक्लपक्षे चंद्रताराादिबलान्विते भौमवासरे व्रतं प्रगृह्य वक्ष्यमाणविधिना संवत्सर पर्यन्तं कार्यम्॥

तद्यथा-मंगलवारे अरुणोदयवेलायामुत्थाय शौचविधिं विधाय अपामार्गकाष्ठेन मौनधारणपूर्वकं दंतधावनं कृत्वा नद्यादौ गृहे वा यथाविधि स्नात्वा रक्तवाससी परिधाय नित्यकर्म समाप्य शिवालये स्वगृहे वा रक्तगोमय लिप्तमंडले स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य दक्षिणपार्श्वे रक्तचंदनरक्तपुष्पादीनि संपाद्य सपवित्रकर आचम्य मूलेन प्राणानायम्य

देशकालौ स्मृत्वा मम जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाज्जन्मलग्ना द्वर्षलग्नाद्वा गोचरात्-चतुर्थाष्टमादित्याधनिष्ट स्थानस्थित भौमसर्वानिष्ट फलनिवृत्ति पूर्वक तृतीयैकादशशुभ स्थान स्थित वदुत्तमफलावाप्त्यर्थम् आयुरारोग्य वृद्ध्यर्थमृणच्छेदार्थममुकरोगविनाशार्थ वा पुत्रप्राप्त्यर्थ श्रीमंगलदेवताप्रसन्नतार्थ भौमव्रतंकरिष्ये॥

तदंगत्वेन न्यास ध्यानपूजार्घ्य दानादि च करिष्ये। इति संकल्प्य कर्ता स्वदेहे न्यासान् कुर्यात्॥

विनियोगः- **ॐ अस्य मंत्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः। गायत्री छंदः। धरात्मजो भौमो देवता। हां बीजम्। हंसः शक्तिः। सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ॐ विरूपाक्षऋषये नमः, शिरसि** ॥१॥ **गायत्रीछंद से नमः, मुखे** ॥२॥ **धरात्मजभौमदेवतायै नमः, हृदि** ॥३॥ **हां बीजाय नमः, गुह्ये** ॥४॥ **हंसः शक्तये नमः, पादयोः**॥५॥ **विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे** ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥

करन्यासः- **ॐ भौमाय अंगुष्ठाभ्यां नमः** ॥१॥ **ॐ हां भौमाय तर्जनीभ्यां**

नमः ॥२॥ ॐ हं भौमाय मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ सः भौमाय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ खं भौमाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ खः भौमाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादि षडंगन्यास- ॐ भौमाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ हां भौमाय शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ हं भौमाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ सः भौमाय कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ खः भौमाय अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादि षडंगन्यासः।

देहन्यास - ॐ मंगलाय नमः अंघ्रोः ॥१॥ ॐ भूमिपुत्राय नमः जानुनोः ॥२॥ ॐ ऋणहर्त्रे नमः ऊर्वोः ॥३॥ ॐ धनप्रदाय नमः कट्याम् ॥४॥ ॐ स्थिरासनाय नमः गुह्ये ॥५॥ ॐ महाकायाय नमः उरसि ॥६॥ ॐ सर्वकामविरोधकाय नमः वामबाहौ ॥७॥ ॐ लोहिताय नमः दक्षिणबाहौ ॥८॥ ॐ लोहिताक्षाय नमः गले ॥९॥ ॐ सामगानां कृपाकराय नमः वदने ॥१०॥ ॐ धरात्मजाय नमः अंसयोः ॥११॥ ॐ कुजाय नमः नेत्रयोः ॥१२॥ ॐ भौमाय नमः ललाटे ॥१३॥ ॐ भूतिदाय नमः भ्रुवोः ॥१४॥ ॐ भूमिनंदनाय नमः मस्तके ॥१५॥ ॐ अंगारकाय नमः शिखायाम् ॥१६॥ ॐ यमाय नमः सर्वांगे ॥१७॥ ॐ सर्वरोगप्रहारिणे नमः मूर्धादिहस्तांतम् ॥१८॥ ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः मूर्धादिपादांतम् ॥१९॥ ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः पादादिमूर्धान्तम् ॥२०॥ ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः दशदिक्षु च ॥२१॥ ॐ अंगारकाय नमः नाभौ ॥२२॥ ॐ वक्राय नमः वक्षसि ॥२३॥ ॐ भूमि नंदनाय नमः मूर्ध्नि ॥२४॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।

अथ ध्यानम्-

जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदाशूलशक्ती करे धारयंतम् ।
अवंतीसमुत्थं सुमेषासनस्थं धरानंदनं रक्तवस्त्रं समीडे ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ताम्रार्घ्यपद्धतिमार्गेण संस्थाप्य पीठपूजादिकं कुर्यात् ॥

तद्यथा - पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले लिंगतोभद्रमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांत-

पीठदेवताभ्यो नमः'' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥

तद्यथा- पूर्वादिक्रमेण- **ॐ वामायै नमः ॥१ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥२ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥४ ॥ ॐ कलविकरण्यै नमः ॥५ ॥ ॐ बलविकरण्यै नमः ॥६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥८ ॥** मध्ये- **ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ १ ॥** इति पूजयेत्।

॥ अथ भौम यंत्र पूजनम्॥

ततः स्वर्णपात्रे ताम्रपात्रे वा एकविंशतित्रिकोणात्मकं यंत्रं रक्तचंदननिर्मितां प्रतिमां वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छ वस्त्रेण संशोष्यं।

''**ॐ नमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्ताय भुमिपुत्राय योगपीठात्मने नमः**''। इति मंत्रेण पुष्पाद्यासानं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणस्थापनं कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य ''**ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्**'' इति भौमगायत्र्या आवाहना
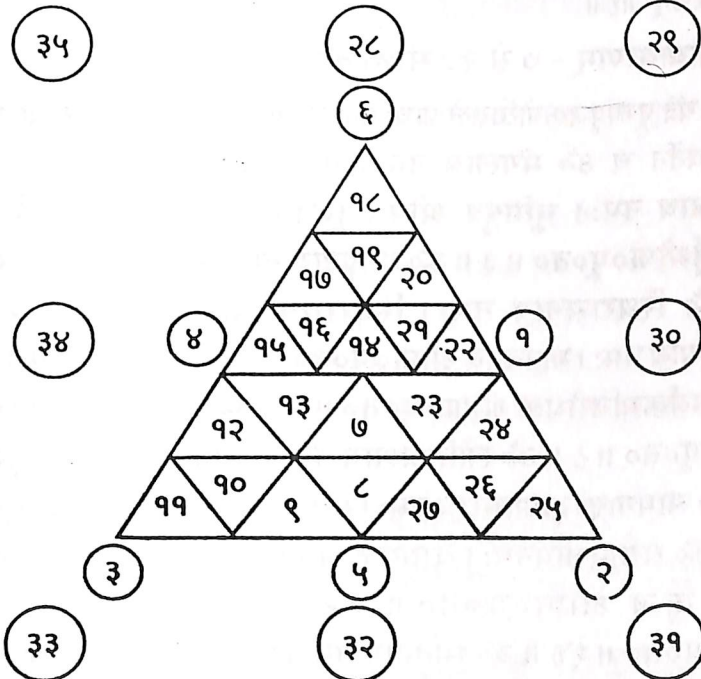
भौम पूजन यंत्रम्

दिरक्तगंधाक्षत रक्तपुष्पां तैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥

प्रथमावरणम् - तद्यथा- **यंत्रे अग्न्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ॐ भौमाय हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** इति सर्वत्र ॥१ ॥

ॐ हाँ भौमाय शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा०पू०त० ॥ २ ॥ ॐ हं भौमाय शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा०पू०त० ॥ ३ ॥ ॐ सः भौमाय कवचाय हुम्। कवच श्रीपा०पू०त० ॥ ४ ॥ ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपा०पू०त० ॥ ५ ॥ ॐ खं भौमाय अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा०पू०त० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत्।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा **पूजितास्तर्पिताः संतु** इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१ ॥

द्वितीयावरणम् - ७ से २७ संख्या तक यंत्र में अर्चन करें।

ततो यंत्रे पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च **ॐ मंगलाय नमः। मंगल श्रीपा० पू० त० ॥१ ॥ ॐ भूमिपुत्राय नमः। भूमिपुत्र श्रीपा०पू०त० ॥ २ ॥ ॐ ऋणहर्त्रे नमः। ऋणहर्तृश्रीपा०पू०त० ॥ ३ ॥ ॐ धनप्रदाय नमः। धनप्रद श्रीपा०पू०त० ॥ ४ ॥ ॐ स्थिरासनाय नमः। स्थिरासन श्रीपा०पू०त० ॥ ५ ॥ ॐ महाकायाय नमः। महाकाय श्रीपा०पू०त० ॥ ६ ॥ ॐ सर्वकर्मावरोधकाय नमः। सर्वकर्मावरोधक श्रीपा०पू०त० ॥ ७ ॥ ॐ लोहिताय नमः। लोहित श्रीपा०पू०त० ॥ ८ ॥ ॐ लोहिताक्षाय नमः। लोहिताक्ष श्रीपा०पू०त० ॥** ९ ॥ ॐ सामगानां कृपाकराय नमः। सामगानां कृपाकर श्रीपा०पू०त० ॥ १० ॥ ॐ धरात्मजायनमः। धरात्मज श्रीपा०पू०त० ॥ ११ ॥ ॐ कुजाय नमः। कुज श्रीपा०पू०त० ॥ १२ ॥ ॐ भौमाय नमः। भौम श्रीपा०पू०त० ॥ १३ ॥ ॐ भूतिदाय नमः। भूतिद श्रीपा०पू०त० ॥ १४ ॥ ॐ भूमिनन्दनाय नमः। भूमिनंदन श्रीपा०पू०त० ॥ १५ ॥ ॐ अंगारकाय

नमः। अंगारक श्रीपा०पू०त० ॥१६॥ ॐ यमाय नमः। यम श्रीपा०पू० त० ॥१७॥ ॐ सर्वरोगप्रहारिणे नमः। सर्वरोग प्रहारिश्रीपा०पू० त० ॥१८॥ ॐ सर्ववृष्टिकर्त्रे नमः। सर्ववृष्टिकर्तृ श्रीपा० ॥१९॥ ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः। वृष्टिहर्तृ श्रीपा०पू०त० ॥२०॥ ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः। सर्वरोगा - पहारक श्रीपा०पू०त० ॥२१॥

ॐ इत्येकविंशतिनामभिः प्रत्येककोष्ठे पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

तृतीयावरणम् - २८ से ३५ संख्यानुसार यंत्र में पूजन करें।

ततो यंत्रे पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु - **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मी श्रीपा०पू०त० ॥१॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा०पू०त० ॥२॥ ॐ कौमार्य्यै नमः। कौमारीश्रीपादुकां०पू०त० ॥३॥ ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवी श्रीपा०पू०त० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा०पू०त० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीश्रीपा०पू०त० ॥६॥ ॐ चामुंडायै नमः। चामुंडा श्रीपा०पू०त० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा०पू०त० ॥८॥**

ॐ इत्यष्टौ मातृकाः संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्।

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि...........तृतीयावरणार्चनम्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥

चतुर्थावरणम्- ततो यंत्रे पूर्वादिक्रमेण- **ॐ लं इंद्राय नमः ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः। ॥२॥ ॐ मं यमाय नमः। ॥३॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॥४॥ ॐ वं वरुणाय नमः। ॥५॥ ॐ यं वायवे नमः। ॥६॥ ॐ कुं कुबेरायनमः। ॥७॥ ॐ हं ईशानाय नमः। ॥८॥** ॐ पूर्वेशानयोर्मध्ये- **ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥९॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः। ॥१०॥**

इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि..........चतुर्थावरणार्चनम्। इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

पंचमावरणम्- ततः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिसमीषे **ॐ वं वज्राय नमः। ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः। ॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं**

खड्गाय नमः ॥४॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥८॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥९॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥१०॥

इत्यस्त्राणि संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्॥

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि..........पंचमावरणार्चनम्। इति पंचमावरणम् ॥५॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपदीप गोधूमान्न नैवेद्य तांबूल दक्षिणा नीराजनादिभिः संपूज्य अर्घ्यं दद्यात्।

तद्यथा-जलपूर्णे ताम्रपात्रे गंधपुष्पाक्षत् फलानि च निक्षिप्य जानुभ्यामवनीं गत्वा-

ॐ भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः ।
सुतार्थिनी प्रपन्ना त्वां गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥१॥
रक्तप्रवालसंकाश जपाकुसुमसन्निभ ।
महीसुत महाबाहो गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥

॥ अथ मंगलनामावलिस्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य गर्गऋषिः। मंगलो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्-

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखोमेघगदो गदाधृक् ।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः ॥१॥
ॐ मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः ॥२॥
लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥३॥
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥४॥
एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥५॥

अंगारको ऽतिवलवानपि यो ग्रहाणां
स्वेदोद्भवस्त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः ।
आरक्तचन्दनसुशीतलवारिणा योऽप्यभ्यर्चितोऽथ
विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ॥६ ॥

भो भो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्यां
दुःखापहो दुरितशोकसमस्तहर्ता ।
नृणामृणं हरति तान्धनिनः प्रकुर्याद्यः
पूजितः सकलमंगलवासरेषु ॥७ ॥

एकेन हस्तेन गदां विभर्ति त्रिशूलमन्येन ऋजुक्रमेण ।
शक्तिं सदान्येन वरं ददाति चतुर्भुजो मंगलमादधातु ॥८ ॥

यो मंगलो मंगलमाद-धाति मध्य ग्रहो
यच्छति वाञ्छितार्थम् ।
धर्मार्थ कामादिसुखं प्रभुत्वं कलत्रपुत्रैर्न कदा वियोगः ॥९ ॥

कनकमयशरीरस्तेजसा दुर्निरीक्ष्यो
हुतवहसमकांतिर्मालवे लब्धजन्मा ।
अवनिजतनयेषु श्रूयते यः पुराणो दिशतु
मम विभूतिं भूमिजः सप्रभावः ॥१० ॥

॥ इति वसिष्ठसंहितायां भौमस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ मंगल कवचम् ॥

मंगल देवता सभी कष्टों का निवारण करने वाले एवं सर्व-सिद्धि दायक है। यहाँ पर मंगल कवच, विनियोग, एवं ध्यान दिये जा रहे है।

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री अंगारक कवच स्तोत्र मंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अंगारको देवता, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ध्यानम्-

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत् ।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ॥

॥ कवचम् ॥

अंगारकः शिरोरक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः ।
श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः ॥
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः ।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा ॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु लोहितः ।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः ॥
जानुजंघे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा ।
सर्वाण्यन्यानि चांगानि रक्षेन्मे मेषवांहनः ॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ।
भूत प्रेत पिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम् ॥
सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम् ।
भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम् ॥
रोगबंध-विमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः ॥

मंगल का यह दिव्य कवच समस्त शत्रुओं को नष्ट करता है एवं ऋण-बाधा, चोट-दुर्घटना, से रक्षा करता है यह कवच भोग व मोक्ष देने वाला है। यह भूत प्रेत पिशाचादि व सभी रोगो का नाश करने वाला एवं कारागार से छुडाने वाला है।

॥ मंगल शान्ति प्रयोग ॥

रोग लक्षण-

मंगल ग्रह के प्रभाव से सभी प्रकार के तीव्र ज्वर, सूजन आदि शिकायतें चेचक, छाले, घाव, बवासीर, भगन्दर, फोडे-फुन्सी गठिया, कण्ठमाला, घेघा, गर्भपात आदि लक्षण एवं दुर्घटना योग होते है।

उपचार-

१. मंगल यंत्र को मंगलवार या मृगशिरा या चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र के दिन अष्टगंध से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर ताम्बे की ताबीज में प्राणप्रतिष्ठा कर उसका पूजनादि कर धारण करना चाहियें।

२. नागजिह्वा (अनन्तमूल) की जड़ मंगलवार को लाल डोरे में मंगल मंत्र से अभिमंत्रित कर बाँधने से मंगल बाधा की शान्ति होती है।

३. सोंठ, सौंफ, लालचन्दन, सिंगरफ, मालकाँगनी और मौलीश्री के फूल को जल में डालकर स्नान करने से भी मंगल बाधा शान्त होती है।

४. मसूर की दाल, गेंहू, गुड, केसर, कस्तूरी, लालचन्दन, लालपुष्प, लालवस्त्र, मूँगा, सोना, ताँबा, लालबैल इत्यादि का दान करने से मंगल बाधा शान्त होती है।

ध्यान नित्य हाथ जोडकर मंगल का ध्यान इस प्रकार करें।

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत् ।
धरासुतो शक्तिधृतश्च शूली सदायभष्मद्वरद प्रसन्नः ॥

मंत्र- निम्न मंत्रो में से किसी एक मंत्र का नित्य जप करें। यथा-

१. ॐ अङ्गारकाय नमः।

२. ॐ हुं श्रीं मङ्गलाय नमः।

३. ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

४. ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

(जप संख्या-४०हजार प्रत्येक मंत्र की)

आराधना - शिव, हनुमान या सुब्रह्मण्य की स्तुति करें।

॥ श्री मङ्गल अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ मं महीसुताय नमः।
ॐ मं महाभागाय नमः।
ॐ मं मङ्गलाय नमः।
ॐ मं मङ्गलप्रदाय नमः।
ॐ मं महावीराय नमः।
ॐ मं महाशूराय नमः।
ॐ मं महाबलपराक्रमाय नमः।
ॐ मं महारौद्राय नमः।
ॐ मं महाभद्राय नमः।
ॐ मं माननीयाय नमः।
ॐ मं दयाकराय नमः।
ॐ मं मानदाय नमः।
ॐ मं अमर्षणाय नमः।
ॐ मं क्रूराय नमः।

ॐ मं तापपापविवर्जिताय नमः।
ॐ मं सुप्रतीपाय नमः।
ॐ मं सुताम्राक्षाय नमः।
ॐ मं सुब्रह्मण्याय नमः।
ॐ मं धर्मात्मजाय नमः।
ॐ मं वक्तृसभादिगमनाय नमः।
ॐ मं वरेण्याय नमः।
ॐ मं वरदाय नमः।
ॐ मं सुखिने नमः।
ॐ मं वीरभद्राय नमः।
ॐ मं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ मं विदूरस्थाय नमः।
ॐ मं विभावसवे नमः।
ॐ मं नक्षत्रचक्रसञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नक्षत्ररूपाय नमः।
ॐ मं क्षात्रवर्जिताय नमः।
ॐ मं क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ताय नमः।
ॐ मं क्षमायुक्ताय नमः।
ॐ मं विचक्षणाय नमः।
ॐ मं अक्षीणफलदाय नमः।
ॐ मं चक्षुर्गोचराय नमः।
ॐ मं शुभ लक्षणाय नमः।
ॐ मं वीतरागाय नमः।
ॐ मं वीतभयाय नमः।
ॐ मं वीचिविरावाय नमः।
ॐ मं विश्वकारणाय नमः।
ॐ मं नक्षत्रराशिसञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नानाभय निकृन्तनाय नमः।
ॐ मं कमनीयाय नमः।
ॐ मं दयासाराय नमः।
ॐ मं कनत्कनकभूषणाय नमः।
ॐ मं भयत्राणाय नमः।
ॐ मं भव्यफलदाय नमः।
ॐ मं भक्ताभयवरप्रदाय नमः।
ॐ मं शत्रुहन्त्रे नमः।
ॐ मं शमोपेताय नमः।
ॐ मं शरणागतपोषणाय नमः।
ॐ मं साहसिने नमः।
ॐ मं सद्गुणाध्यक्षाय नमः।
ॐ मं साधवे नमः।
ॐ मं समरदुर्जयाय नमः।
ॐ मं दुष्टदूराय नमः।
ॐ मं शिष्टपूज्याय नमः।
ॐ मं सर्वकष्टनिवारणाय नमः।
ॐ मं दुश्चेष्टावारकाय नमः।
ॐ मं दुःखभञ्जनाय नमः।
ॐ मं दुर्धर्षाय नमः।
ॐ मं हरये नमः।
ॐ मं दुःस्वप्नहन्त्रे नमः।
ॐ मं दुर्धराय नमः।

ॐ मं दुष्टगर्वविमोचनाय नमः।
ॐ मं भरद्वाजकुलोद्भूताय नमः।
ॐ मं भूसुताय नमः।
ॐ मं भव्यभूषणाय नमः।
ॐ मं रक्ताम्बराय नमः।
ॐ मं रक्तवपुषे नमः।
ॐ मं भक्तपालनतत्पराय नमः।
ॐ मं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ मं गदाधारिणे नमः।
ॐ मं मेषवाहनाय नमः।
ॐ मं अमिताशनाय नमः।
ॐ मं शक्तिशूलधराय नमः।
ॐ मं शक्ताय नमः।
ॐ मं शस्त्रविद्याविशारदाय नमः।
ॐ मं तार्किकाय नमः।
ॐ मं तामसाधाराय नमः।
ॐ मं तपस्विने नमः।
ॐ मं ताम्रलोचनाय नमः।
ॐ मं तप्तकाञ्चनसङ्काशाय नमः।
ॐ मं रक्तकिंजुल्कसन्निभाय नमः।
ॐ मं गोत्राधिदेवाय नमः।
ॐ मं गोमध्यचराय नमः।
ॐ मं गुणविभूषणाय नमः।
ॐ मं असृजे नमः।
ॐ मं अङ्गारकाय नमः।
ॐ मं अवन्तिदेशाधीशाय नमः।
ॐ मं जनार्दनाय नमः।
ॐ मं सूर्ययाम्यप्रदेशस्थाय नमः।
ॐ मं यौवनाय नमः।
ॐ मं याम्यदिङ्-मुखाय नमः।
ॐ मं लोहिताङ्गाय नमः।
ॐ मं त्रिदशाधिप सन्नुताय नमः।
ॐ मं शुचये नमः।
ॐ मं शुचिकराय नमः।
ॐ मं शूराय नमः।
ॐ मं शुचिवश्याय नमः।
ॐ मं शुभावहाय नमः।
ॐ मं मेषवृश्चिकराशीशाय नमः।
ॐ मं मेधाविने नमः।
ॐ मं मित-भाषणाय नमः।
ॐ मं सुखप्रदाय नमः।
ॐ मं सुरूपाक्षाय नमः।
ॐ मं सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।
ॐ मं सर्वरोगापहारकाय नमः।

॥ इति श्री मङ्गल अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ ऋणमोचन मंगल प्रयोगः॥

खेर (कत्था) की लकड़ी के कोयले से तीन आड़ी रेखायें भूमि पर खीचें। फिर नीचे लिखें मन्त्रों को पढ़ते हुये बायें पैर की एडी से मिटा दें।

मन्त्र -

दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसंतान हेतवे ।
कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमाज्मर्यहम् ॥१ ॥

ऋण दुख विनाशाय मनोभीष्टार्थ सिद्धये ।
मार्जयाम्या सिता रेखातिस्त्रो जन्मत्रयोदयभवा ॥२ ॥

इतना कर लेने के बाद मंगल के चरण कमलों का ध्यान करते हुये स्तुति करें-

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगल प्रणमाम्यहम् ॥१ ॥

ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने ।
नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥२ ॥

देव दानव गंधर्व यक्ष राक्षसपन्नगा ।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे ॥३ ॥

यो वक्रगति मायन्त्रो नृणां विघ्नं प्रयच्छति ।
पूजितः सुखसौभाग्य तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥४ ॥

प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद ।
मंगल मेषवाहन रुद्रात्मन। पुत्रान् देहि धनं यश ॥५ ॥

विधानम् - प्रतिदिन या केवल मंगलवार को ही यह विधान करने से शीघ्र ऋण मुक्ति होवें।

॥ ऋणहर-धनप्रद मंगल स्तोत्रम्॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री भौम-स्तोत्रस्य श्रीगर्ग ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। मंगलो देवता। ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ श्रीगर्ग-ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः

मुखे। मंगल देवतायै नमः हृदि। ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यानम्—

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगदो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्त्ता धनप्रदः।
स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः॥१॥
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमिनन्दनः॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्त्ताऽपहर्त्ता च सर्वकाम फलप्रदः॥३॥

॥ फलश्रुति ॥

एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोति असंशयः॥४॥
अङ्गारकोऽति बलवानपि यो ग्रहाणां
स्वेदोद्भवः त्रि-नयनस्य पिनाकपाणेः।
आरक्त-चन्दन-सुशीतलवारिणा यः।
अभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम्॥५॥

॥ पुष्पाञ्जलि ॥

ॐ धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥१॥
ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने।
नभसि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे॥२॥
देव-दानव-गंधर्व यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमः धरणिसूनवे॥३॥
यो वक्रगतिमापन्नो नृणां दुःखं प्रयच्छति।
पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः॥४॥

प्रसादं कुरु मे नाथ! मङ्गलप्रद मङ्गल !
मेषवाहन रुद्रात्मन्! सुखं देहि धनं यशः ॥५॥
स्तोत्रमङ्गारक स्येतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्त वत्सलं ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादि दारिद्रयं ये चान्ये ह्यल्पमृत्यु
भयक्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्रदुराध्य भोगमुक्तजितात्मनः ।
दुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरिञ्च शक्र विष्णुनां मनुष्याणां तु स्त्रिस्तथा ।
तेन सर्वसहजेन ग्रहराजो महाबलः ॥१०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वमामि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्य दुःखश्च शत्रुणां तु व्यपोहतो ॥११॥

॥ अभिषेक के २१ मंत्र ॥

१.ॐ मङ्गलाय नमः। २.ॐ भूमिपुत्राय नमः। ३.ॐ ऋणहर्त्रे नमः। ४.ॐ धनप्रदाय नमः। ५.ॐ स्थिरात्मजाय नमः। ६.ॐ महाकायाय नमः। ७.ॐ सर्वकामार्थ साधकाय नमः। ८.ॐ लोहिताङ्गाय नमः। ९.ॐ लोहिताक्षाय नमः। १०. ॐ सामगानां कृपाकराय नमः। ११.ॐ धरात्मजाय नमः। १२.ॐ कुजाय नमः। १३.ॐभौमाय नमः। १४.ॐ भूमिदाय नमः। १५.ॐ भूमिनन्दनाय नमः। १६.ॐ अङ्गारकाय नमः। १७.ॐ यमाय नमः। १८.ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः। १९.ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः। २०.ॐ वृष्ट्यपहर्त्रे नमः। २१.ॐ सर्वकाम-फलप्रदाय नमः।

॥ श्री बुधतन्त्रम् ॥

॥ अथ बुधमंत्रप्रयोग: ॥

मंत्र:- ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्नेप्प्रति जागृहित्वमिष्टा पूर्तेसठ. सृजेथा मयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥१ ॥ इति मन्त्र।

विनियोग:- ॐ उद्‌बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषि:। बृहतीछंद:। बुधो देवता। त्वमिष्टापूर्तेसमिति बीजम्। बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ॥

ऋष्यादि न्यास:- ॐ परमेष्ठी ऋषये नम: शिरसि ॥१ ॥ ॐ बृहती छंदसे नम:मुखे ॥२ ॥ ॐ बुधदेवतायै नम: हृदये ॥३ ॥ ॐ त्वमिष्टापूर्तेसमिति बीजाय नम: गुह्ये ॥४ ॥ ॐ बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ॥५ ॥ इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहि अंगुष्ठाभ्यां नम: ॥१ ॥ ॐ त्वमिष्टापूर्तेसं तर्जनीभ्यां नम: ॥२ ॥ ॐ सृजेथामयं च मध्यमाभ्यां नम: ॥३ ॥ ॐ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नम: ॥४ ॥ ॐ विश्वेदेवा कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥५ ॥ ॐ यजमानश्चसीदत करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: ॥६ ॥ इति करन्यास:।

हृदयादि न्यास:- ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहि हृदयाय नम: ॥१ ॥ ॐत्वमिष्टापूर्तेसं शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ सृजेथामयं च शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्कवचाय हुं ॥४ ॥ ॐ विश्वेदेवा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ यजमानश्चसीदत अस्त्राय फट् ॥६ ॥ ॐ इति हृदयादिन्यास:।

मन्त्रन्यास - ॐ उद्‌बुध्यस्व शिरसि ॥१ ॥ ॐ अग्नेप्रति ललाटे ॥२ ॥ ॐ जागृहित्वं मुखे ॥३ ॥ ॐ इष्टापूर्ते सं हृदये ॥४ ॥ ॐ सृजेथामयं च नाभौ ॥५ ॥ ॐ अस्मिन्त्सधस्थे कट्याम् ॥६ ॥ ॐ अध्युत्तरस्मिन्नूर्वो: ॥७ ॥

ॐ विश्वदेवा जानुनोः ॥८॥ ॐ यजमानश्च पादयोः ॥९॥ ॐ सीदत सर्वाङ्गे ॥१०॥

इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्-

पीतांबरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दंडधरश्च हारी ।
चर्मासिधृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

बुधे चाष्टसहस्त्रकमिति जपसंख्या ८००० जपान्ते अपामार्गसमि त्तिल पायसघृतैर्दशांशहोमः॥अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

अथ दानद्रव्याणि - चैल च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुण्यम्॥ दासी च दन्तो द्विरदस्य नूनं वदंति दानं विधुनंदनाय।

॥ इति बुधमंत्रप्रयोगः ॥

॥ बुध तांत्रिक मंत्राः॥

सप्ताक्षर मंत्र- ॐ बुं बुधाय नमः।

इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। देवता बुध। **बं बीजं। आपः शक्तिं। इस प्रकार समझना चाहिए।**

मंत्र कोष में - "**बं बुधाय नमः** " लिखा है।

ध्यानम्-

वन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बर-सुभूषणम् ।
ज्ञानुस्थ वामहस्ताढ्यं सभयेतर-पाणिकम ॥

षडंगन्यासः- बां हृदयाय नमः। बीं शिरसे स्वाहा। बूं शिखायै वषट्। बैं कवचाय हुं। बौं नेत्रत्रयाय वौषट्। बः अस्त्राय फट्।

दशाक्षर मंत्रः- ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं सः बुधाय नमः।

मंत्र कोष में- "**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं सं बुधाय नमः**" लिखा है।

यंत्रार्चनम्- षटकोण एवं भूपूर युक्त बनायें। मध्य में ध्यान पूर्वक ग्रह का आवाहन करें।
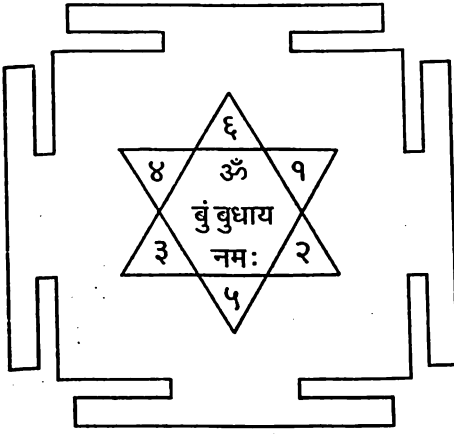
षटकोण में- ॐ ब्रां हृदयाय नमः। ब्रीं शिरसे स्वाहा। ब्रूं शिखायै वषट्। ब्रैं कवचाय हुं। ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ब्रः अस्त्राय फट्।

भूपूर में इन्द्रादि देवता व उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

|| अथ बुधशान्तिस्तोत्रम् ||

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवदुःखापहर्ता ।
धर्मस्य धृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥१ ॥

ॐ प्रियंगुकलिकश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं नमामि शशिनन्दनम् ॥२ ॥

सोमसूनुर्बुधश्चैव सौम्यः सौम्यगुणान्वितः ।
सदा शांतः सदा क्षेमो नमामि शशिनन्दनम् ॥३ ॥

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः ॥४ ॥

शिरीषपुष्पसंकाशः कपिशीलो युवा पुनः ।
सोमपुत्रो बुधश्चैव सदा शांतिं प्रयच्छतु ॥५ ॥

श्यामः शिरालश्चकलाविधिज्ञः कौतूहली कोमलवाग्विलासी ।
रजोऽधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥६ ॥

अहो चन्द्रसुत श्रीमान् मगधेषु समुद्भवन् ।
अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहुः खड्गखेटकधारकः ॥७ ॥

गदाधरो नृसिंहस्थः स्वर्णनाभसमन्वितः ।
केतकीद्रुमपत्राभ इन्द्रविष्णुप्रपूजितः ॥८ ॥

ज्ञेयो बुधः पंडितश्च रौहिणेयश्च सोमज ।
कुमारो राजपुत्रश्च सुसेव्यः शशिनन्दनः ॥९॥
गुरुपुत्रश्च तारेयो विबुधो बोधनस्तथा ।
सौम्यः सौम्यगुणोपेतो रत्नदानफलप्रदः ॥१०॥
एतानि बुधनामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ।
बुद्धिर्विवृद्धितां याति बुधपीडा न जायते ॥११॥

॥ इति बुधस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ बुध पञ्चविंशति नामावली स्तोत्रम् ॥

विनियोग:- अस्य श्री बुधपञ्चविंशत्रिनाम स्तोत्र मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बुधो देवता, बुधपीडानिवारणार्थे जपे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः ।
प्रियङ्कलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः ॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः ।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः ॥
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः ।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः ।
पञ्चविंशति नामानि बुधस्यै तानि यः पठेत् ॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडाः सर्वा विनश्यति ।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोंगतम् ॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बुध कवचम् ॥

विनियोग:- अस्य श्री बुध कवचस्तोत्र मंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, बुधो देवता, बुधपीड़ाशमनार्थ जपे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः ।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः ॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा ।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोते पातु निशाप्रियः ॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम ।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजा पुस्तकभूषणः।
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं रोहिणीसुतः ॥
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः ।
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जंघेऽखिलप्रदः ॥
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः ।
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःख निवारणम् ।
आयुरारोग्यधनदे पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

॥ इति श्री ब्रह्मवैवर्तक पुराणे बुधकवचं संपूर्णम् ॥

॥ बुध शान्ति प्रयोगः॥

रोग लक्षण-

बुध ग्रह के प्रभाव से हिस्टीरिया, पागलपन, मानसिक विकृतियाँ, कान के रोग, बहरापन, पक्षाघात, पेट का घाव(अलसर), स्मरण शक्ति का ह्रास, हकलाना, सिरदर्द, अनिद्रा, मुर्छावस्था के दौरे, फेफडो में कष्ट, हृदयादि रोग होते है।

उपचार-

१. बुध यंत्र को बुधवार अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्र के दिन अष्टगंध से अनार

की कलम से भोजपत्र पर लिखकर सोने के ताबीज में प्राणप्रतिष्ठा कर एवं पूजन कर धारण करें।

२. वृद्धदारु (विधारा) की जड़ बुधवार को हरे रंग के डोरे में लपेटकर उसे बुध मंत्र से अभिमंत्रत करके बाँधने से बुध बाधा की शान्ति होती है।

३. हरड़, बहेड़ा, गोमय, अक्षत्, गोरोचन, स्वर्ण, आँवला और मधु को जल में डालकर स्नान करने से बुध बाधा की शान्ति होती है।

४. मूँग, खाण्ड, हरा वस्त्र, पन्ना, स्वर्ण, फल, कर्पूर, घी का दान करने से बुध बाधा की शान्ति होती है।

आराधना - गणेश उपासना करें।

व्रत - अमावस्या का व्रत करें।

नित्य हाथ जोडकर बुध का ध्यान इस प्रकार करें-

ध्यानम् –

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी ।
चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढ़ो वरदो बुधश्च ॥

मंत्र- निम्न मंत्रो में से किसी एक मंत्र का नित्य जप करें-

१. ॐ बुं बुधाय नमः।

२. ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

३. ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

४. ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

॥ श्रीबुध अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ बुं बुधाय नमः।
ॐ बुं बुधार्चिताय नमः।
ॐ बुं सौम्याय नमः।
ॐ बुं दृढफलाय नमः।
ॐ बुं श्रुतिजालप्रबोधकाय नमः।
ॐ बुं सत्यवासाय नमः।
ॐ बुं सत्यवचसे नमः।
ॐ बुं श्रेयसां पतये नमः।
ॐ बुं अव्ययाय नमः।
ॐ बुं शशिसुताय नमः।
ॐ बुं सोमजाय नमः।
ॐ बुं सुखदाय नमः।

ॐ बुं श्रीमते नमः।

ॐ बुं सोमवंशप्रदीपकाय नमः।

ॐ बुं वेदविदे नमः।

ॐ बुं वेदतत्त्वज्ञाय नमः।

ॐ बुं वेदान्तज्ञानभास्वराय नमः।

ॐ बुं विद्याविचक्षणविभवे नमः।

ॐ बुं विद्वत्पतिकराय नमः।

ॐ बुं ऋजवे नमः।

ॐ बुं विश्वानुकूलसञ्चारिणे नमः।

ॐ बुं विशेषविनयान्विताय नमः।

ॐ बुं विविधागमसारज्ञाय नमः।

ॐ बुं वीर्यवते नमः।

ॐ बुं विगतज्वराय नमः।

ॐ बुं त्रिवर्गफलदाय नमः।

ॐ बुं अनन्ताय नमः।

ॐ बुं त्रिदशाधिपपूजिताय नमः।

ॐ बुं बुद्धिमते नमः।

ॐ बुं बहुशास्त्रज्ञाय नमः।

ॐ बुं बलिने नमः।

ॐ बुं बन्धविमोचनाय नमः।

ॐ बुं बोधनाय नमः।

ॐ बुं वक्रातिवक्रगमनाय नमः।

ॐ बुं वासवाय नमः।

ॐ बुं वसुधाधिपाय नमः।

ॐ बुं प्रसादवदनाय नमः।

ॐ बुं वन्द्याय नमः।

ॐ बुं वरेण्याय नमः।

ॐ बुं वाग्-विलक्षणाय नमः।

ॐ बुं सत्यवते नमः।

ॐ बुं सत्यसन्धाय नमः।

ॐ बुं सत्यसङ्कल्पाय नमः।

ॐ बुं सदाधाराय नमः।

ॐ बुं सर्वरोगप्रशमनाय नमः।

ॐ बुं सर्वमृत्युनिवारकाय नमः।

ॐ बुं वाणिज्यनिपुणाय नमः।

ॐ बुं वश्याय नमः।

ॐ बुं वाताङ्गिने नमः।

ॐ बुं वातरोगहृते नमः।

ॐ बुं स्थूलाय नमः।

ॐ बुं स्थैर्यगुणाध्यक्षाय नमः।

ॐ बुं स्थूलसूक्ष्मादिकारणाय नमः।

ॐ बुं अप्रकाशाय नमः।

ॐ बुं प्रकाशात्मने नमः।

ॐ बुं धनाय नमः।

ॐ बुं गगनभूषणाय नमः।

ॐ बुं विधिस्तुताय नमः।

ॐ बुं विशालाक्षाय नमः।

ॐ बुं विद्वज्जनमनोहराय नमः।

ॐ बुं चारुशीलाय नमः।

ॐ बुं स्वप्रकाशाय नमः।
ॐ बुं चपलाय नमः।
ॐ बुं जितेन्द्रियाय नमः।
ॐ बुं उदङ्-मुखाय नमः।
ॐ बुं मखासक्ताय नमः।
ॐ बुं मगधाधिपतये नमः।
ॐ बुं हरये नमः।
ॐ बुं सौम्यवत्सरसञ्जाताय नमः।
ॐ बुं सोमप्रियकराय नमः।
ॐ बुं सुफलप्रदाय नमः।
ॐ बुं सुखिने नमः।
ॐ बुं सिंहादिरूढाय नमः।
ॐ बुं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ बुं शिखिवर्णाय नमः।
ॐ बुं शिवङ्कराय नमः।
ॐ बुं पीताम्बराय नमः।
ॐ बुं पीतवपुषे नमः।
ॐ बुं खड्गचर्मधराय नमः।
ॐ बुं कार्यकर्त्रे नमः।
ॐ बुं कलुषहराय नमः।
ॐ बुं आत्रेयगोत्रजाय नमः।
ॐ बुं अत्यन्तविनयाय नमः।
ॐ बुं विश्वपावनाय नमः।
ॐ बुं चाम्पेयपुष्प सङ्काशाय नमः।
ॐ बुं चारणाय नमः।
ॐ बुं चारु भूषणाय नमः।
ॐ बुं वीतरागाय नमः।
ॐ बुं वीतभयाय नमः।
ॐ बुं विशुद्धाय नमः।
ॐ बुं कनकप्रभाय नमः।
ॐ बुं बन्धुप्रियाय नमः।
ॐ बुं बन्धमुक्ताय नमः।
ॐ बुं बाणमण्डल संश्रिताय नमः।
ॐ बुं अर्केशाननिवासस्थाय नमः।
ॐ बुं तर्कशास्त्रविशारदाय नमः।
ॐ बुं प्रशान्ताय नमः।
ॐ बुं प्रीतिसंयुक्ताय नमः।
ॐ बुं प्रियकृते नमः।
ॐ बुं प्रियभाषणाय नमः।
ॐ बुं मेधाविने नमः।
ॐ बुं माधवासक्ताय नमः।
ॐ बुं मिथुनाधिपतये नमः।
ॐ बुं सुधिये नमः।
ॐ बुं कन्याराशिप्रियाय नमः।
ॐ बुं कामप्रदाय नमः।
ॐ बुं धनफलाशाय नमः।
ॐ बुं रोहिणेयाय नमः।

॥ श्री बृहस्पति तन्त्रम् ॥

॥ अथ बृहस्पतिमन्त्रप्रयोग:॥

मंत्र-

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजात तदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥५॥

विनियोग:- ॐ बृहस्पते इति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषि:। त्रिष्टुप् छन्द:। बृहस्पतिर्देवता॥ बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:॥

ऋष्यादि न्यास:- ॐ गृत्समद ऋषये नम: शिरसि॥१॥ ॐ त्रिष्टुप् छन्दसे नम: मुखे॥२॥ ॐ बृहस्पतिदेवतायै नम: हृदये॥ ॥३॥ विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्य्यो इत्यंगुष्ठाभ्यां नम:॥१॥ ॐ अर्हाद्युमदिति तर्जनीभ्यां नम:॥२॥ ॐ विभाति क्रतुमदिति मध्यमाभ्यां नम:॥३॥ ॐ जनेषु अनामिकाभ्यां नम:॥४॥ ॐ यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्प्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नम:॥५॥ ॐ द्रविणंधेहि चित्रमिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:॥५॥ इति करन्यास:।

हृदयादिन्यास:- ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्यो हृदयाय नम:॥१॥ ॐ अर्हाद्युमदिति शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ विभाति क्रतुमदिति शिखायै वषट्॥३॥ ॐ जनेषु कवचाय हुं॥४॥ ॐ यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजा ततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐ द्रविणंधेहिचित्रमित्यस्त्राय फट्॥६॥ ॐ इति हृदयादिन्यास:।

मंत्रन्यास- ॐ बृहस्पते इति शिरसि॥१॥ ॐ अतियदर्यो ललाटे॥२॥ ॐ अर्हाद्युमन्मुखे॥३॥ ॐ विभाति क्रतुमज्जनेषु नाभौ॥४॥ ॐ यद्दीदयत्कट्याम् ॥५॥ ॐ शवसऽऋतप्रजा ऊर्वो:॥६॥ ॐ

ततदस्मासुद्रविणं जानुनोः ॥७॥ ॐ धेहि चित्रं पादयोः ॥८॥ इति मंत्रन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥

अथ ध्यानम्–

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः ।
दधाति दंडं च कमण्डलुं च तथाक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात् ।

एकोनविंशतिर्जीवे सहस्राणि १९००० विदुर्बुधाः इति जपसंख्या। जपांते अश्वत्थसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्॥

अथ दानद्रव्याणि–

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतांबरम् ।
पुष्पराजलवणे च कांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥१॥

॥ ॐ इति गुरु मंत्र जप प्रयोगः ॥

॥ गुरु तांत्रिक मंत्राः॥

अष्टाक्षर (रत्नमंजूषायाम्)– ब्रूं बृहस्पतये नमः।

(मंत्र महौदधौ)– बृं बृहस्पते नमः।

ध्यानम्–

रत्नस्वर्णांशुकादीन् निजकरकमलाद् दक्षिणादथिन्तरम् ।
वासो-राशौ निधायापरममरगुरुं पीतवस्त्रादि भूषणम् ॥

नवाक्षर मंत्रः– **ॐ बृं बृहस्पतये नमः।**

तजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघ स्तुतपादपंकजम् ।
मेघा-निधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस-पंकजेहम् ॥

दशाक्षर मंत्रः– ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

द्वादशाक्षर मंत्रः– ॐ जां जीं जूं सं बृहस्पतये स्वाहा।

अथ अष्टाक्षर मंत्र विधानम्– (बृं बृहस्पतये नमः)

अस्य विधानम्–

विनियोग:- ॐ अस्य बृहस्पति मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सुराचार्यो देवता। बृं बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास:- ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ सुराचार्यो देवतायै नमः हृदि ॥३॥ बृं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ नमः शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥६॥

करन्यास:- ॐ ब्रां अंगुष्ठाभ्या नमः। ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ब्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादि षडंगन्यास:-ॐ ब्रां हृदयाय नमः। ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ब्रूं शिखायै वषट्। ॐ ब्रैं कवचाय हुं। ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरन्तं करादासीनं
विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम्।
पीतालेपन पुष्पवस्त्रमखिलालङ्कार संभूषितं
विद्यासागरपारगं सुरगुरुवन्दे सुवर्णप्रभम् ॥

॥ गुरु यंत्रार्चनम् ॥

यंत्र मे पीठ देवताओं का पूजन करें यथा–

पूर्वादि चार. दिशाओं में- ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। आग्नेयादि चारों कोणो में- ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः।

प्रथमावरणार्चनम्-(षटकोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा दिशा में)- ॐ ब्रां हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० पू० त० ॥२॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट् शिखा श्रीपा० पू० त० ॥३॥ ॐ ब्रैं कवचाय हुं। कवच श्रीपा० पू० त० ॥४॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

नेत्रत्रय श्रीपा० पू० त० ॥५॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपा० पू० त० ॥६॥
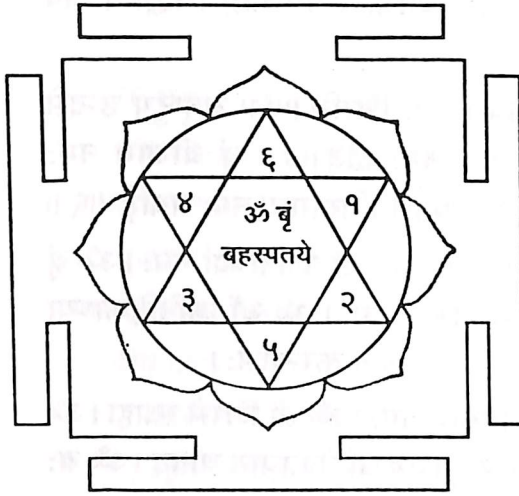
बृहस्पति पूजन यंत्रम्

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) **देवाचार्याय नमः। वेदसिद्धान्त पारगाय नमः। पीड़ाहराय नमः। वाचस्पतये नमः। लम्बकूर्चाय नमः। प्रहृष्टनेत्राय नमः।** विप्राणांपतये नमः। विपन्न हितकारकाय नमः।

तृतीयावरणम् - (भूपुरे) - पूर्वादिक्रम से - **इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करें।**

चतुर्थावरणम् - (भूपुरे) - पूर्वादिक्रम से - **इन्द्रादि दश दिक्पालों के अस्त्रों का पूजन करें।**

इसके बाद षडंगो की पूजा करें। इसके बाद पुष्पांजलि निम्न मंत्र से देवें।

अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

यह मंत्र कहकर पुष्पांजलि देकर **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** कहें।

॥ अथ बृहस्पतिमंत्र प्रयोगः॥

मंत्रो यथा- "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" (मंत्रमहोदधौ) इत्यष्टाक्षरो मंत्रः॥ ॐ लगाने से **नवाक्षर मन्त्र** हो जाता है।

अस्य विधानम्-

विनियोगः- **अस्य बृहस्पतिमंत्रस्य ब्रह्मात्रृषिः। अनुष्टुप् छंदः। सुराचार्यो देवता। बृं बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥**

ऋष्यादि न्यासः- **ॐ ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः, मुखे ॥२॥ सुराचार्यदेवतायै नमः, हृदि ॥३॥ बृं बीजाय नमः, गुह्ये ॥४॥ नमः शक्तये नमः, पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥६॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- **ॐ ब्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ब्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥** इति करन्यासः।

षडंगन्यास- **ॐ ब्रां हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ब्रैं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥**

इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥

अथ ध्यानम्-

रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरन्तं करादासीनं ।
विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम् ॥
पीतालेपनपुष्पवस्त्रमखिलालंकार संभूषितं ।
विद्यासागरपारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्णप्रभम् ॥१॥

॥ यंत्रपूजनम्॥

इति ध्यात्वासर्वतोभद्रमंडले धर्माधर्मादिपीठांत पीठदेवताः संस्थापयेत्॥

अत्र पीठशक्तयो न संति॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात्।

प्रथमावरणार्चनम्-तद्यथा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च-**ॐ ब्रां हृदयाय नमः। हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा शिरः श्रीपा०पू०त० ॥२॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट्। शिखा श्रीपा०पू०त० ॥३॥ ॐब्रैं कवचाय हुम्। कवच श्रीपा०पू०त ० ॥४॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपा०पू०त०**

॥५ ॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपा०पू०त० ॥६ ॥ ॐ इति षडंगानि पूजयेत्॥

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य-

अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥
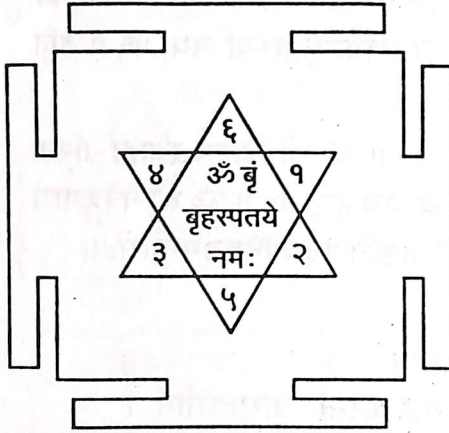
इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इति प्रथमावरणम्॥१ ॥

ततो भूपूरे पूर्वादिक्रमेण इंद्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात्॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात्॥ अस्य पुरश्चरणमशीतिसहस्त्रजपः॥ तद्दशांशतो घृतहोमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धोभवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्।

तथा च-

जपित्वाशीतिसाहस्त्रं हुत्वा तेन घृतेन वा ।
धर्माधर्मादिपीठे तं पूजयेदंगदिग्भवैः ॥१ ॥
सिद्धे मनौ प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ।
हरिद्राकुसुमैर्हुत्वा घृताक्तैर्दिवसत्रयम् ॥२ ॥
सविंशतिशतं मंत्री वासांसि लभते मणीन् ।
शत्रुरोगादिपीडासु स्वजने कलहोद्भवे ॥३ ॥
जुहुयात्पिप्पलोत्थाभिः समिद्भिस्तन्निवृत्तये ॥४ ॥

॥ इत्यष्टाक्षरबृहस्पतिमंत्रप्रयोगः ॥

॥ श्री बृहस्पति नामावलिस्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबृहस्पति स्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबृहस्पतिः देवता, श्रीबृहस्पति प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि गृत्समद ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीबृहस्पति देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीबृहस्पति प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

॥ मूल स्तोत्र पाठ ॥

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीड़ापहारकः ।
दयाकरः सौम्य मूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः ॥
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चांगिरसो वेद वैध पितामहः ॥

॥ फलश्रुति ॥

भक्त्या वृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान स भवेन्नरः ॥
जीवेद् वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति तत्क्षणात् ।
यः पूजयेद् गुरु दिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीड़ा शान्तिर्भवेद् गुरोः ॥

॥ श्री स्कन्द पुराणे वृहस्पति स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीबृहस्पति कवचम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबृहस्पति कवचस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, देवगुरु श्रीबृहस्पतिः देवता, गं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं बृहस्पति पीड़ा शमनार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- शिरसि ईश्वर ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीबृहस्पति देवतायै नमः। गुह्ये गं बीजाय नमः। पादयोः श्रीं शक्तये नमः। नाभौ क्लीं कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे बृहस्पति पीड़ा शमनार्थे पाठे विनियोगाय।

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
गाँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
गीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
गूँ	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
गैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
गः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

अभीष्ट फलदं देवं सर्वज्ञं सुर पूजितम् ।
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम् ॥

॥ कवचपाठ ॥

बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः ।
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः ॥
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः ।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवता गुरुः ॥
भुजावाङ्गिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः ।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः ॥
नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वन्द्यः ऊरू मे पातु वाक्पतिः ॥
जानु जङ्घे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा ।
अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षेन् मे सर्वतोगुरुः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

॥ इतिश्रीब्रह्मयामले बृहस्पति कवचम् ॥

॥ अथ बृहस्पतिस्तोत्रा: ॥

(१)

क्रौं शकादिदेवैः परिपूजितोऽसि त्वं जीवभूतो जगतो हिताय ।
ददाति यो निर्मलशास्त्रबुद्धिं स वाक्पतिर्मे वितनोतु लक्ष्मीम् ॥१ ॥
पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशांतः ।
दधाति दण्डं च कमण्डलुं च तथाक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम् ॥२ ॥
बृहस्पतिः सुराचार्य्यो दयावाञ्छुभलक्षणः ।
लोकत्रयगुरुः श्रीमान्सर्वज्ञः सर्वतो विभुः ॥३ ॥
सर्वेशः सर्वदा तुष्टः श्रेयस्कृत्सर्वपूजितः ।
अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता महाबलः ॥४ ॥
विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः ।
भूर्भुवो धनदाता च भर्ता जीवो जगत्पतिः ॥५ ॥
पंचविंशतिनामानि पुण्यानि शुभदानि च ।
नन्दगोपालपुत्राय भगवत्कीर्तितानि च ॥६ ॥
प्रातरुत्थाय यो नित्यं कीर्तियेत्तु समाहितः ।
विप्रस्तस्यापि भगवान् प्रीतः स च न संशयः ॥७ ॥

(२)

(तंत्रांतरेऽपि)—

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥१ ॥
अमराणां बुद्धिदाता वाग्मी यः करुणाकरः ।
यावंतो ये च मुनयः पुरुषाकारपीतभाः ॥२ ॥
बृहस्पतिः सुराचार्य्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ।
जीव आंगिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥३ ॥
सकलसुरविनेता ब्रह्मतुल्यप्रभाव
स्त्रिदशपतिकरैर्यो घृष्टपादारविंदः ।

विमलमतिविकासी सर्वमांगल्यहेतुर्दिशतु
मम विभूर्तिं वाक्पतिः सुप्रभावः ॥४॥

बृहस्पतिमहं नौमि गुरुं देवेन्द्रपूजितम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं सर्वकामफलप्रदम् ॥५॥

सर्वसंशयच्छेत्तारं वेत्तारं सर्वकर्मणाम् ।
परब्रह्ममयं नित्यं परमानंदरूपिणम् ॥६॥

सर्वसिद्धिप्रदं देवं शरण्यं भक्तवत्सलम् ।
वरेण्यं वरदं शान्तं त्रिदशार्तिहरं परम् ॥७॥

लंबकूर्च सुवर्णाभं स्वर्णयज्ञोपवीतिनम् ।
पीतवस्त्रपरीधानं मार्तण्डतिलकान्वितम् ॥८॥

चन्दनागुरु कर्पूरैः सुगंधैः शतपत्रकैः ।
संपूज्य ध्यायते यस्तु भवत्या सुदृढया नरैः ॥९॥

धनं धान्यं जयं सौख्यं सौभाग्यं नृपमान्यता ।
भवंति सर्वदा तेषां त्वत्प्रसादात्सुरैश्वर ॥१०॥

रोगाग्निसर्पचौराद्यास्तेषां न प्रभवंति हि ।
सुस्थानस्थोऽधि देशे च ध्यानात्सर्वार्थसाधकः ॥११॥

(३)

पुनः (तंत्रांतरेऽपि)

नमः सुरेन्द्रवंद्याय देवाचार्याय ते नमः ।
नमोऽत्वनंतसामर्थ्य वेदसिद्धान्त पारग ॥१॥

सदानंद नमस्तेऽस्तु नमः पीडाहराय च ।
नमो वाचस्पते तुभ्यं नमस्ते पतिवाससे ॥२॥

नमोऽद्वितीयरूपाय लंबकूर्चाय ते नमः ।
नमः प्रहृष्टनेत्राय विप्राणां पतये नमः ॥३॥

नमो भार्गवशिष्याय विपन्नहितकारक ।
नमस्ते सुरसैन्याय विपन्नत्राणहेतवे ॥४॥

विषमस्थस्तथा नृणां सर्वकष्टप्रणाशनम् ।

प्रत्यहं तु पठेद्यो वै तस्य कामफलप्रदम् ॥५॥

बृहस्पतिमंत्रो- यथा **"ॐ नमोऽस्तु बृहस्पतये पीतवस्त्राभरणाय यज्ञोपवीत मालाधराय ममार्चनं गृहाण कुरु कुरु स्वाहा"।** इति चत्वारिंशदशक्षर मंत्र:

॥ इति बृहस्पति स्तोत्राः समाप्तम् ॥

॥ बृहस्पति शान्ति प्रयोग: ॥

रोगलक्षण -

हृदय रोग, यकृत रोग, पीलिया, फेफड़े के रोग, टाइफाइड, अजीर्ण, मोतियाबिन्द, पेट के अल्सर, रक्त कैंसर , रक्तवाहिनी शिराओं में पीड़ा ॥

उपचार -

१. उक्त बृहस्पति यन्त्र को बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के दिन अष्टगन्ध से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर सोने के ताबीज में प्राण प्रतिष्ठा कर पूजन कर धारण करें।

२. केले की जड़ बृहस्पतिवार को पीले डोरे में बृहस्पति मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बाँधने से बृहस्पति बाधा की शान्ति होती है।

३. मदयन्ती के पत्ते, मुलैठी, सफेद सरसों और मालती के फूल को जल में ड़ालकर स्नान करने से बृहस्पति बाधा की शान्ति होती है।

४. चने की दाल, हल्दी, शर्करा, पीला अन्न, पीला वस्त्र, पीले पुष्प, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, स्वर्ण, छत्र आदि का दान करने से बृहस्पति बाधा की शान्ति होती है ।

ध्यानम् - नित्य हाथ जोड़कर बृहस्पति का ध्यान इस प्रकार करें -

पीताम्बर: पीतवर्णः किरीटी, चतुर्भुजो देवगुरु : प्रशान्तः ।
तथाऽक्ष सूत्रं च कमण्डलुञ्च, दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

मंत्र - निम्न मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नित्य जप करें।

यथा - **१ ॐ बृं बृहस्पतये नमः। २ ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः । ३ ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः । ४ ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।**

(जप संख्या ७६ हजार , प्रत्येक)

॥ श्रीगुरु कवचम् ॥

शास्त्रों में लिखा है कि बृहस्पति दोपशान्ति हेतु गुरु एवं ब्राह्मणों की सेवा वन्दना करें। अतः आप अपने गुरु का स्त्रीगुरु या पुरुषगुरु हो उनके हेतु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

गुरुदेव ध्यानम्–

सहस्त्रदल पङ्कजे सकलशीत रश्मिप्रभम् ।
वराभय कराम्बुजं विमलगंधपुष्पाम्बरम् ॥
प्रसन्नवदनेक्षणं सकल - देवतारूपिणम् ।
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं गुरुम् ॥

ध्यान करने के बाद पादुका मंत्र का उच्चारण कर सम्प्रदाय परम्परा से गुरुदेव के नाम का उच्चारण कर पूजा करें।

पादुका मंत्र- **ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह स क्ष म ल व र यूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं हसौः श्रीअमुकानन्दनाथ श्रीअमुकीदेव्याम्बा श्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः।**

उक्त पादुकामंत्र से पूजन और जप करने के बाद वाग्भववीज "ऐं" से प्राणायामत्रय कर कुलगुरुओं का स्मरण करें-यथा-

॥ कुलगुरु स्मरणम् ॥

प्रह्लादानन्दनाथाख्यं सनकानन्दनाथकम् ।
कुमारानन्दनाथाख्यं वशिष्ठानन्दनाथकम् ॥
क्रोधानन्द सुखानन्दौ ध्यानानन्दं ततः परम् ।
बोधानान्दं ततश्चैव ध्यायेत् कुलमुखोपरि ॥
महारस रसोल्लास-हृदयाघूर्णलोचनाः ।
कुलालिङ्गन - सम्भिन्नचूर्णिताशेष - तामसाः ॥
कुलशिष्यैः परिवृताः पूर्णान्तः करणोद्यताः ।
वराभयकराः सर्वे कुलतन्त्रार्थवादिनः ॥

इसके बाद गुरुमंत्र वाग्भव वीज ऐं का १०८ बार जप करें। तदन्तर गुरुस्तोत्र और कवच का पाठ कर संयतचित्त होकर गुरुदेव को नमस्कार करें।

॥ कवच पाठः ॥

॥ देव्युवाच ॥

भूतनाथ महादेव! कवचं तस्य मे वद ।
गुरुदेवस्य देवेश! साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणः ॥

॥ इश्वरोवाच ॥

अथातः कथयामीशे कवचं मोक्षदायकम् ।
यस्य ज्ञानं विना देवि! न सिद्धिर्न च सद्गतिः ॥
ब्रह्मादयोऽपि गिरिजे सर्वत्र याजिनः स्मृताः ।
अस्य प्रसादात् सकला वेदागमपुरः सराः ॥
कवचस्यास्य देवेशि! ऋषिर्विष्णुरुदाहृतः ।
छन्दो विराड् देवता च गुरुदेवः स्वयं शिवः ॥
चतुर्वर्गज्ञानमार्गे विनियोगः प्रकीर्तितः ।
सहस्त्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः ॥
वामोरुस्थित-शक्तिर्यः सर्वत्र परिरक्षतु ।
परमाख्यो गुरुः पातु शिरसं मम वल्लभे! ॥
परापराख्यो नासां मे परमेष्ठी मुखं सदा ।
कण्ठं मम सदा पातु प्रह्लादानन्द नाथकः ॥
बाहू द्वौ सनकानन्दः कुमारानन्दनाथकः ।
वशिष्ठानन्दनाथश्च हृदयं पातु सर्वदा ॥
क्रोधानन्दः कटिं पातु सुखानन्दः पदं मम ।
ध्यानानन्दश्च सर्वाङ्गं बोधानन्दश्च कानने ॥
सर्वत्र गुरवः पातु सर्व ईश्वररूपिणः ।
इति ते कथितं भद्रे! कवचं परमं शिवे ॥
भक्तिहीने दुराचारे दत्वैतं मृत्युमाप्नुयात् ।
अस्यैव पठनाद् देवि! धारणात् श्रवणात् प्रिये! ॥
जायते मंत्रसिद्धिश्च किमन्यत् कथयामि ते ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ शिखायां वीरवन्दिते! ॥

धारणान्नाशयेत् पापं गङ्गायां कल्मषं यथा ।
इदं कवचमज्ञात्वा यदि मंत्र जपेत् प्रिये! ॥
तत् सर्वं निष्फलं कृत्वा गुरुर्याति सुनिश्चतम् ।
शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन ॥

॥ इति कङ्कालमालिनी तंत्रे गुरु कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीगुरु स्तोत्रम् ॥

॥ ॐ नमः श्रीनाथाय ॥

॥ श्रीमहादेव्युवाच ॥

गुरोरर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा ।
विशेषस्तु महादेव! तद् वदस्व दयानिधे ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम् ।
उत्कलकाशीगङ्गामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१ ॥
प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम् ।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥२ ॥
वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम् ।
साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥३ ॥
विष्णो भक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरि भक्तिम् ।
विष्णोरिव पितृसेवनयोगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥४ ॥
प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं प्राणायां न्यासविधानम् ।
इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥५ ॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा ।
श्रीमातङ्गी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥६ ॥
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम् ।
नरनारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥७ ॥

श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम् ।
अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥८॥

गङ्गा काशी काञ्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा ।
यमुना रेवा पुष्करतीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥९॥

गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावन-मधुपुर-रटनम् ।
एतत् सर्वं सुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१०॥

तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गङ्गासागर-सङ्गममुक्तिः ।
किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥११॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१२॥

॥ वृहद्विज्ञान परमेश्वरतंत्रे त्रिपुराशिवसंवादे श्रीगुरोःस्तोत्रम् ॥

॥ स्त्रीगुरु कवचम् ॥

॥ शिव उवाच ॥

स्तोत्रं समाप्तं देवेशि! कवचं शृणु सादरम् ।
यस्य स्मरण मात्रेण वागीश समतां व्रजेत् ॥

स्त्रीगुरु कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।
तवाख्या देवता ख्याता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥

क्लीं बीजं चक्षुषोर्मध्ये सर्वाङ्गे मे सदाऽवतु ।
ऐं बीजं मे मुखं पातु ह्रीं जिह्वां परिरक्षतु ॥

श्रीं बीजं स्कन्धदेशं मे हसखफ्रें भुजद्वयम् ।
हकारः कण्ठ देशं मे सकारः षोडशं दलम् ॥

क्ष-वर्णस्तदधः पातु लकारो हृदयं मम ।
वकारः पृष्ठदेशं च रकारो दक्षपार्श्वकम् ॥

युङ्कारो वामपार्श्वं च सकारो मेरुमेव च ।
हकरो मे दक्षभुजं क्षकारो वामहस्तकम् ॥

मकारश्चांगुलि पातु लकारो मे नखं वतु ।
वकारो मे नितम्बं च रकारो जठरं वतु ॥
यीङ्कारः पाद युगलं हसौः सर्वाङ्गमेव च ।
हसौर्लिङ्गं च लोमानि केशं च परिरक्षतु ॥
ऐं वीजं पातु पूर्वे मे ह्रीं वीजं दक्षिणे वतु ।
श्री वीजं पश्चिमे पातु उत्तरे भूतसम्भवम् ॥
श्रीं पातु अग्निकोणे च वेदाख्या नैर्ऋते वतु ।
देव्यम्बा पातु वायव्यां शम्भौ श्रीपादुका तथा ॥
पूजयामि तथा चोर्ध्वं नमश्चाधः सदाऽवतु ।
इति ते कथितं कान्ते! कवचं परमाद्भुतम् ॥
गुरुमन्त्रं जपित्वा तु कवचं प्रपठेद् यदि ।
स सिद्धः सगणः सोऽपि शिव न संशयः ॥
पूजा काले पठेद् यस्तु कवचं मंत्रविग्रहं ।
पूजाफलं भवेत् तस्य सत्यं सत्यं सुरेश्वरि ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् देवि स सिद्धौ नात्र संशयः ।
भुर्जे विलिखितं चैव स्वर्णस्थं धारयेद् यदि ॥
तस्य दर्शन मात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः ।
विवादे जयमाप्नोति रणे च निर्ऋतेः समः ॥
सभायां जयमाप्नोति मम तुल्यो न संशयः ।
सहस्त्रारे भावयन् तां त्रिसंध्यं प्रपठेद् यदि ॥
स एव सिद्धो लोकेषु निर्वाणं पदमीयते ।
समस्त मंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।
देयं शिष्याय शान्ताय चान्यथा पतनं भवेत् ॥
अभक्तेभ्यश्च देवेशि! पुत्रेभ्योऽपि न दर्शयेत् ।
इदं कवचमज्ञात्वा दशविद्यां च यो जपेत् ॥
स नाप्नोति फलं तस्य चान्ते च नरकं व्रजेत् ।

॥ इति मातृकाभेद तंत्रे स्त्रीगुरु कवचम् ॥

॥ स्त्रीगुरु स्तोत्रम् ॥

नमस्ते देव-देवेशि! नमस्ते हरपूजिते! ।
ब्रह्मविद्यास्वरूपायै तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया ।
यया चक्षुरुन्मीलितं तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
भवबंधन पाशस्य तारिणी जननी परा ।
ज्ञानदा मोक्षदा नित्या तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
श्रीनाथवामभागस्था सदया सुरपूजिता ।
सदाविज्ञानदात्री च तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
सहस्त्रारे महापद्मे सदाऽऽनन्दस्वरूपिणी ।
महामोक्षप्रदा देवि तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
ब्रह्माविष्णुस्वरूपा च महारुद्रस्वरूपिणी ।
त्रिगुणात्मस्वरूपा च सदा घूर्णितलोचना ।
स्व-नाथं च समालिङ्ग्य तस्यै नित्यं नमो नमः ॥
ब्रह्मविष्णुशिवत्वादि - जीवन्मुक्तिप्रदायिनी ।
ज्ञानविज्ञानदात्री च तस्यै श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्रीमातृकाभेदतन्त्रे हरपार्वती संवादे स्त्रीगुरोः स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीबृहस्पति अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ वृं गुरवे नमः ।
ॐ वृं गुणवराय नमः ।
ॐ वृं गोप्त्रे नमः ।
ॐ वृं गोचराय नमः ।
ॐ वृं गो-पतिप्रियाय नमः ।
ॐ वृं गुणिने नमः ।
ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः ।
ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः ।
ॐ वृं अव्ययाय नमः ।
ॐ वृं जेत्रे नमः ।
ॐ वृं जयन्ताय नमः ।
ॐ वृं जयदाय नमः ।

ॐ वृं जीवाय नमः।
ॐ वृं अनन्ताय नमः।
ॐ वृं जयावहाय नमः।
ॐ वृं आङ्गीरसाय नमः।
ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः।
ॐ वृं विविक्ताय नमः।
ॐ वृं अध्वरकृत्पराय नमः।
ॐ वृं वाचस्पतये नमः।
ॐ वृं वशिने नमः।
ॐ वृं वश्याय नमः।
ॐ वृं वरिष्ठाय नमः।
ॐ वृं वाग्विचक्षणाय नमः।
ॐ वृं चित्तशुद्धिकराय नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं चैत्राय नमः।
ॐ वृं चित्रशिखण्डिजाय नमः।
ॐ वृं बृहद्रथाय नमः।
ॐ वृं बृहद्भानवे नमः।
ॐ वृं वृहस्पतये नमः।
ॐ वृं अभीष्टदाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं सुरकार्यहितकराय नमः।
ॐ वृं गीर्वाणपोषकाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।

ॐ वृं गीष्पतये नमः।
ॐ वृं गिरीशाय नमः।
ॐ वृं अनघाय नमः।
ॐ वृं धीवराय नमः।
ॐ वृं दिव्यभूषणाय नमः।
ॐ वृं देवपूजिताय नमः।
ॐ वृं धनुर्धराय नमः।
ॐ वृं दैत्यहन्त्रे नमः।
ॐ वृं दयासाराय नमः।
ॐ वृं दयाकराय नमः।
ॐ वृं दारिद्र्यविनाशनाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।
ॐ वृं धिषणाय नमः।
ॐ वृं दक्षिणायनसम्भवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः।
ॐ वृं देवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्बाणधराय नमः।
ॐ वृं हरये नमः।
ॐ वृं अङ्गीरसाब्दसञ्जाताय नमः।
ॐ वृं अंगिरसकुलोद्धवाय नमः।
ॐ वृं सिन्धुदेशाधिपाय नमः।
ॐ वृं धीमते नमः।
ॐ वृं स्वर्णकायाय नमः।
ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ वृं हेमाङ्गदाय नमः।

ॐ वृं हेमवपुषे नमः।
ॐ वृं हेमभूषणभूषिताय नमः।
ॐ वृं पुष्यनाथाय नमः।
ॐ वृं पुष्यरागमणि मण्डनमण्डिताय नमः।
ॐ वृं काशपुष्पसमानाभाय नमः।
ॐ वृं कलिदोषनिवारकाय नमः।
ॐ वृं इन्द्रादिदेवदेवेशाय नमः।
ॐ वृं देवताऽभीष्टदायकाय नमः।
ॐ वृं असमानबलाय नमः।
ॐ वृं सत्त्वगुणसम्पद्विभावसवे नमः।
ॐ वृं भूसुराभीष्टफलदाय नमः।
ॐ वृं भूरियशसे नमः।
ॐ वृं पुण्यविवर्धनाय नमः।
ॐ वृं धर्मरूपाय नमः।
ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं धनदाय नमः।
ॐ वृं धर्मपालनाय नमः।
ॐ वृं सर्वदेवतार्थतत्त्वज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्वापद्विनिवारकाय नमः।
ॐ वृं सर्वपापप्रशमनाय नमः।
ॐ वृं स्वमतानुगतामराय नमः।
ॐ वृं ऋग्वेदपारगाय नमः।

ॐ वृं सदानन्दाय नमः।
ॐ वृं सत्यसन्धाय नमः।
ॐ वृं सत्यसङ्कल्प मानसाय नमः।
ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्ववेदान्तविदुषे नमः।
ॐ वृं ब्रह्मपुत्राय नमः।
ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः।
ॐ वृं ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः।
ॐ वृं समानाधिक निर्मुक्ताय नमः।
ॐ वृं सर्वलोक वशंकराय नमः।
ॐ वृं सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः।
ॐ वृं सत्यभाषणाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं दयावते नमः।
ॐ वृं शुभलक्षणाय नमः।
ॐ वृं लोकत्रयगुरवे नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्वतोविभवे नमः।
ॐ वृं सर्वेशाय नमः।
ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्वपूजिताय नमः।

॥ श्रीशुक्रतन्त्रम् ॥

॥ अथ शुक्रवैदिकमंत्र प्रयोगः॥

मंत्रः-

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिबत्
क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ।
ऋतेनसत्यमिंद्रियंव्विपानठं. शुक्रमन्धस
ऽइंद्रस्येंद्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ॥१ ॥

विनियोगः- ॐ अन्नात्परिस्त्रुत इति मन्त्रस्य पराशर ऋषिः। शक्वरी छन्दः। शुक्रो देवता। रसं ब्रह्मणा इति बीजम्। शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

हृदयादि न्यासः- ॐ पराशर ऋषये नमः शिरसि ॥१ ॥ ॐ शक्वरीछन्दसे नमः मुखे ॥२ ॥ ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये ॥३ ॥ ॐ रसंब्रह्मणा इति बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥५ ॥

करन्यासः- ॐ अन्नात्परिस्त्रुत इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥१ ॥ ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत् इति तर्जनीभ्यां नमः ॥२ ॥ ॐ क्षत्रंपय इति मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ सोमं प्रजापतिरित्यनामिकाभ्यां नमः ॥४ ॥ ॐ ऋतेनसत्यमिंद्रियंव्विपानठं.शुक्रमंधसः कनिष्ठि काभ्यां नमः ॥५ ॥ ॐ इंद्रस्येंद्रियमिदंपयोमृतंमधु इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिन्यासः- ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत् शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ क्षत्रंपयः शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ सोमं प्रजापतिरिति कवचाय हुं ॥४ ॥ ॐ ऋतेनसत्यमिंद्रियंव्विपानठं.शुक्रमंधसो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ इन्द्रस्येंद्रियमिदंपयोमृतम्मधु इत्यस्त्राय फट् ॥६ ॥ इति हृदयादिन्यासः।

मन्त्रन्यासः - ॐ अन्नात्परिस्त्रुत इति शिरसि ॥१॥ ॐ रसंब्रह्मणा ललाटे ।।२॥ ॐ व्यपिबत्क्षत्रं मुखे ॥३॥ॐ पयः सोमं हृदये ॥४॥ ॐ प्रजापतिर्नाभौ ॥५॥ ॐ ऋतेनसत्यं कट्याम् ॥६॥ ॐ इंद्रियंविपानम् गुदे ॥७॥ ॐ शुक्रं वृषणयोः ॥८॥ ॐ अन्धस ऊर्वोः ॥९॥ ॐ इन्द्रस्येंद्रियमिदम्पयो जानुनोः ॥१०॥ ॐ अमृतं पादयोः ॥११॥ ॐ मधु सर्वशरीरे च ॥१२॥ न्यसेत् ॥

इति मन्त्रन्यासः। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्—

श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशांतः ।
तथाक्षसूत्रं च कमंडलुं च दण्डं च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्य्यात् ।

शुक्रे एकादशैव तु इति जपसंख्या ११०००।

अथ दानद्रव्याणि—

चित्रांबरं शुभ्रतुरङ्गमश्च धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ।
सुतंडुलानुत्तमगंधयुक्तान् वदंति दानं भृगुनन्दनाय ॥३॥

॥ इति शुक्रमन्त्रजपप्रयोगः ॥

॥ शुक्र तांत्रिक मंत्राः॥

१ सप्ताक्षरी मंत्रः- ॐ शुं शुक्राय नमः।

२ नवाक्षरी मंत्रः- ॐ शुं शुक्राय नमः स्वाहा।

इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। देवता शुक्र। बीज- शुं। तथा शक्ति स्वाहा है।

ध्यानम्—

सन्तप्त कांचननिभं द्विभुजं दयालुं
पीताम्बरं धृत सरोरुह केशयुग्मम् ।
क्रौञ्चासनं असुर सेवितं पादपद्मं शुक्रं
भजे द्विनयनं हृदि पङ्कजेऽहम् ॥

दशाक्षर मंत्रः- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

अन्यच्च- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सं शुक्राय स्वाहा।

अन्य मंत्रः- ब वस्त्रं मे देहि शुक्र स्वाहा।

ध्यानम्—

वासो रत्नादि कार्तस्वरमपि सततं साधकाय प्रयच्छन्।
व्याख्यानमुद्रा कलितकर वर स्वपाणालिन्द-संस्थः॥

एकादशाक्षरी मंत्रः (मंत्रमहौदधौ)- ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा।

अस्य विधानम्—

विनियोगः- **ॐ अस्य शुक्रमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। विराट् छन्दः। दैत्य पूज्यः शुक्रो देवता। ॐ बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि॥१॥ विराट् छन्दसे नमः मुखे॥२॥ दैत्यपूज्य शुक्र देवतायै नमः हृदि॥३॥ ॐ बीजाय नमः गुह्ये॥४॥ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥६॥**

हृदयादि षडंगन्यासः- **ॐ हृदयाय नमः। वस्त्रं शिरसे स्वाहा। मे शिखायै वषट्। देहि कवचाय हुं। शुक्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

इसी प्रकार कराङ्गन्यास करें। इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करें-

ध्यानम्—

श्वेतांभोजनिषण्णमापणतटे श्वेतांबरालेपनं नित्यं -
भक्तजनाय संप्रददतं वासो मणीन् हाटकम्।
वामेनैव करेण दक्षिणकरे व्याख्यानमुद्रांकितं
शुक्रं दैत्यवरार्चितं स्मितमुखं वंदे सितांगं प्रभुम्॥१॥

॥ यंत्रपूजनम्॥

इस प्रकार ध्यान करे। यंत्र मध्य धर्मादिपीठ देवताओं का पूजन करें-

पूर्वादि चारों दिशाओं में- **ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः।** आग्नेयादि चारों कोणो में- **ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः।**

षट्कोण में हृदयादिन्यास मन्त्रों से आवाहन करें अथवा निम्न विधि से करें-

शुक्र पूजन यंत्रम्
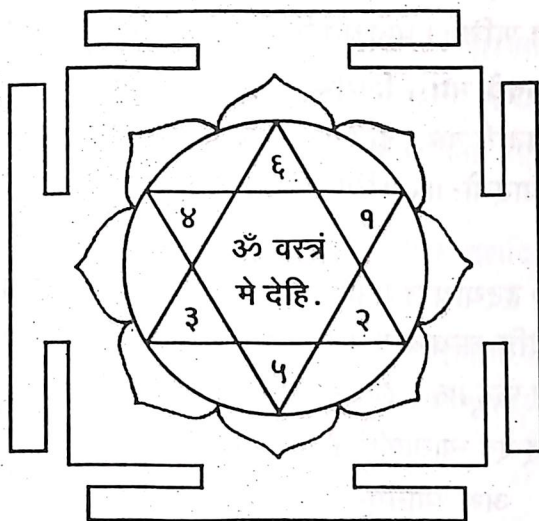
प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)- **ॐ शां हृदयाय नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ शीं शिरशक्त्यै नमः। ॐ शूं शिखाशक्त्यै नमः श्रीपा०। ॐ शें कवचशक्त्यै नमः श्रीपा०। ॐ शौं नेत्रत्रयशक्त्यै नमः श्रीपा०। ॐ शः अस्त्रशक्त्यै नमः श्रीपा०।**

द्वितीयावरणम्-(अष्टदले)पूर्वादिक्रमेण- **ॐ भार्गव श्रेष्ठाय नमः। ॐ दानव पूजिताय नमः। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः। ॐ वेदवेदाङ्ग पारगाय नमः। ॐ लोकशङ्कराय नमः। ॐ मंगलरूपाय नमः। ॐ कविनन्दनाय नमः। ॐ गीर्वाणवंदिताय नमः।**

तृतीयावरणम् में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन भूपूर में करें।

चतुर्थावरणम्- भूपूर में दिक्पालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

पुष्पाञ्जलि मंत्र-

अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

जप करके श्वेत पुष्पो से शुक्रवार को होम करें। अभीष्ट सिद्धि होवें।

॥ अथ शुक्रअन्यमंत्रप्रयोगः॥

(मंत्रमहोदद्यौ) मंत्रो यथा- **''ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा''** । इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥

विनियोगः- **अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। विराट् छन्दः। दैत्यपूज्यः शुक्रो देवता॥ ॐ बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि न्यासः- **ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि॥१॥ विराट्छंदसे नमः, मुखे॥२॥ दैत्यपूज्यशुक्रदेवतायै नमः, हृदि॥३॥ ॐ बीजाय नमः, गुह्ये॥४॥ स्वाहा शक्तये नमः, पादयोः॥५॥ विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे॥६॥** इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादि षडंगन्यास- **ॐ हृदयाय नमः॥१॥ वस्त्रं शिरसे स्वाहा॥२॥ मे शिखायै वषट्॥३॥ देहि कवचाय हुम्॥४॥ शुक्राय नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ स्वाहा अस्त्राय फट्॥६॥** इति हृदयादि षडंगन्यासः॥

एवमेव करांग न्यासं कुर्यात् एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्—

श्वेतांभोजनिषण्णमापणतटे श्वेतांबरालेपनं नित्यं
भक्तजनाय संप्रददतं वासो मणीन् हाटकम्।
वामेनैव करेण दक्षिणकरे व्याख्यानमुद्रांकितं
शुक्रं दैत्यवरार्चितं स्मितमुखं वंदे सितांगं प्रभुम्॥१॥
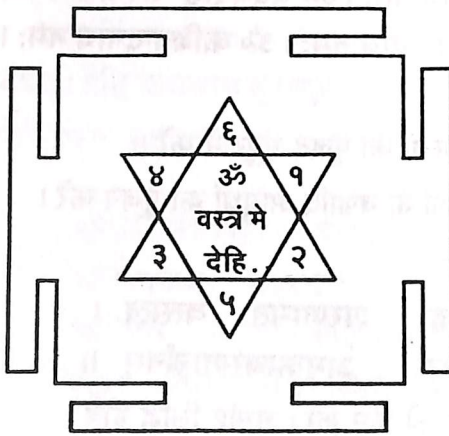
इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य सर्वतोभद्रमंडले धर्मादिपरतत्त्वांत पीठदेवताः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्यपुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्य्यात्।

प्रथमावरणम् - षट्कोणकेसरेषु- **आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्येदिक्षु च पूर्वोक्तषडंगन्यास मंत्रेण षडंगानि पूजयेत्॥**

जो हृदयादिन्यास दिये गये हैं उनके मन्त्रों से षट्कोण में पूजा करें।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य-

अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजिताः सर्पिताः सन्तु इति वदेत्॥ इति प्रथमावरणार्चनम्॥

द्वितीयावरणम् - ततो भूपूरे इन्द्रादि दशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य जपं कुर्यात्।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तद्दशांशतो घृतहोमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धोभवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्।

तथा च-

अयुतंप्रजपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः ।
सिद्धे मंत्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥१॥
सुगंधैः श्वेतकुसुमैर्जुहुयाच्छुभवासरे ।
एकविंशतिवारं यो लभते सोंऽशुकं मणीन् ॥२॥

(इत्येकादशाक्षरशुक्रमंत्रप्रयोगः)

॥ श्री शुक्र स्तवराज स्तोत्रम्॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री शुक्रस्तवराज स्तोत्रस्य प्रजापतिः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **शिरसि प्रजापति ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीशुक्रदेवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशुक्र-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।**

॥ स्तोत्र पाठ ॥

नमस्ते भार्गव श्रेष्ठः दैत्य दानव पूजितः ।
वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमो नमः ॥
देवयानि पितस्तुभ्यं वेद वेदाङ्ग पारगः ।

परेण तपसा शुद्धः शंकरो लोकसुन्दरः ॥
प्राप्तौ विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः ।
नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे ॥
तारामण्डलमध्यस्थः स्व-भासामिताम्बरः ।
यस्योदये जगत् सर्वं मङ्गलार्हं भवेदिह ॥
अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात् तस्मै मङ्गलरूपिणे ।
त्रिपुरा वासिनो दैत्यान् शिवबाण प्रपीडितान् ॥
विद्ययाऽजीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगुनन्दनः ।
ययाति-गुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दनः ॥
बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः ।
भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वगीर्वाणवन्दितः ॥
जीव पुत्राय यो विद्यां प्रदात् तस्मै नमो नमः ।
नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि ॥
नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने ।

॥ फलश्रुति ॥

स्तवराजमिमं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः ।
यः पठेच्छृणुयाद् वापि लभते वाञ्छितं फलम् ॥
पुत्रकामो लभेत् पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियम् ।
राज्यकामो लभेद् राज्यं स्त्रीकामोस्त्रियमुत्तमाम् ॥
भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः ।
अन्यवारे तु होरायां पूजयेत् भृगुनन्दनम् ॥
रोगार्तो मुच्यते रोगात् भयार्तो मुच्यते भयात् ।
यद्यत् प्रार्थयते जन्तुस्तत्तत् प्राप्नोति सर्वदा ॥
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नतः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधिम् ॥

॥ इति श्री ब्रह्मयामले श्रीशुक्र स्तवराज स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीशुक्र नामावलिस्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री शुक्र स्तोत्रस्य भरद्वाज ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र-पीड़ा-परिहारार्थे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि भरद्वाज ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदि श्रीशुक्र-देवतायै नमः। सर्वाङ्गे शुक्र पीड़ा-परिहारार्थे विनियोगाय नमः।

॥ स्तोत्र पाठ ॥

शुक्रः काव्यः शुक्र रेता शुक्लाम्बरधरः सुधीः ।
हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः ॥
नीतिज्ञो नीतिकृन्नीति मार्गगामी ग्रहाधिपः ।
उशना वेद वेदाङ्ग पारगः कविरात्म-वित् ॥
भार्गवः करुणा सिन्धुर्ज्ञान गम्यः सुतप्रदः ।

॥ फलश्रुति ॥

शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत् ।
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीं वसतिमुत्तमाम् ॥
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति च ॥

॥ श्रीस्कंद पुराणे श्रीशुक्र स्तोत्रम् ॥

॥ श्री शुक्र कवचम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री शुक्र कवचस्य भरद्वाज ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशुक्रः देवता, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि भरद्वाज ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीशुक्रदेवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

ध्यानम्-

मृणाल कुन्देन्दु-पयोज सुप्रभं
पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम् ।

समस्त शास्त्रार्थनिधिं महान्तं
ध्यायेत् कविं वाञ्छितमर्थ सिद्धये ॥

॥ कवच पाठ ॥

शिरो मे भार्गवः पातु भालं पातु ग्रहाधिपः ।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः ॥
पातु मे नासिकां काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः ।
जिह्वां मे चोशना पातु कण्ठं श्रीकण्ठ-भक्तिमान् ॥
भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनोव्रजः ।
नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः ॥
कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरू मे सुरपूजितः ।
जानू जाड्यहरः पातु जङ्घे ज्ञानवतां बरः ॥
गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वरां वरः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु स्वर्णमालापरिष्कृतः ॥

॥ फलश्रुति ॥

य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयाऽन्वितः ।
न तस्य जायते पीड़ा भार्गवस्य प्रसादतः ॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्रीशुक्र कवचम् ॥

॥ शुक्रशान्ति प्रयोगः ॥

रोगलक्षण -

त्वचा रोग, त्वचा पर छाले , नीलें- काले धब्बे, एग्जिमा, डिम्बाशय रोग, गुप्त रोग, मधुमेह, नेत्र रोग, मोतियाबिन्द, रक्ताल्पता।

उपचार -

१. उक्त शुक्रयन्त्र को शुक्रवार या भरणी पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के दिन अष्टगन्ध से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर चाँदी के ताबीज में प्राणप्रतिष्ठा एवं पूजन कर धारण करें।

२. सिंह पुच्छ अथवा सरपोंखा को [illegible]

से अभिमन्त्रित करके बाँधने से शुक्र बाधा की शान्ति होती है।

३. मूल सहित हरड़, बहेड़ा, आँवला, इलायची, केशर और मैनसिल को जल में डालकर स्नान करने से शुक्र बाधा की शान्ति होती है।

४. चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, श्वेत पुष्प, श्वेतवस्त्र, श्वेतचन्दन, दही, सुगन्धित वस्तुऐं, हीरा, श्वेतगाय, श्वेतघोड़ा आदि का दान करने से शुक्र बाधा की शान्ति होती है ।

ध्यान नित्य हाथ जोड़कर शुक्र का ध्यान इस प्रकार करें –

श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरु : प्रशान्तः ।
तथाऽक्ष सूत्रञ्च कमण्डलुं च, दण्डं च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम् ॥

निम्न मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नित्य जप करें।

विविध मन्त्राः – १ ॐ शुं शुक्राय नमः । २ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः । ३ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

शुक्रगायत्री – ४ ॐ भृगु वंश जाताय विद्महे श्वेत वाहनाय धीमहि तन्नो कविः प्रचोदयात् ।

(जप – संख्या – ६४ हजार, प्रत्येक)

॥ श्रीशुक्र अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ शुं शुक्राय नमः।
ॐ शुं शुचये नमः।
ॐ शुं शुभगुणाय नमः।
ॐ शुं शुभदाय नमः।
ॐ शुं शुभलक्षणाय नमः।
ॐ शुं शोभनाक्षाय नमः।
ॐ शुं शुभग्रहाय नमः।
ॐ शुं शुभ्रवाहाय नमः।
ॐ शुं शुद्धस्फटिकभास्वराय नमः।
ॐ शुं दीनार्तिहराय नमः।
ॐ शुं दैत्यगुरवे नमः।
ॐ शुं देवाभिनन्दिताय नमः।
ॐ शुं काव्यासक्ताय नमः।
ॐ शुं कामपालाय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं कल्याणदायकाय नमः।
ॐ शुं भद्रमूर्तये नमः।
ॐ शुं भद्रगुणाय नमः।

ॐ शुं भार्गवाय नमः।
ॐ शुं भक्तपालनाय नमः।
ॐ शुं भोगदाय नमः।
ॐ शुं भुवनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं चारुशीलाय नमः।
ॐ शुं चारुचन्द्र
-निभाननाय नमः।
ॐ शुं निधये नमः।
ॐ शुं निखिलशास्त्रज्ञाय नमः।
ॐ शुं नीतिविद्याधुरन्धराय नमः।
ॐ शुं सर्वलक्षणसम्पन्नाय नमः।
ॐ शुं सर्वपूजिताय नमः।
ॐ शुं सर्वावगुण वर्जिताय नमः।
ॐ शुं समानाधिक निर्मुक्ताय नमः।
ॐ शुं सकलागम पारगाय नमः।
ॐ शुं भृगवे नमः।
ॐ शुं भोगकराय नमः।
ॐ शुं भूसुरपालन तत्पराय नमः।
ॐ शुं मनस्विने नमः।
ॐ शुं मानदाय नमः।
ॐ शुं मान्याय नमः।
ॐ शुं मायातीताय नमः।
ॐ शुं महाशयाय नमः।
ॐ शुं बलिप्रसन्नाय नमः।
ॐ शुं अभयदाय नमः।

ॐ शुं बलिने नमः।
ॐ शुं बलपराक्रमाय नमः।
ॐ शुं भवपाशपरित्यागाय नमः।
ॐ शुं बलिबन्धविमोचनाय नमः।
ॐ शुं धनाशयाय नमः।
ॐ शुं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं कम्बुग्रीवाय नमः।
ॐ शुं कलाधराय नमः।
ॐ शुं कारुण्यरसपूर्णाय नमः।
ॐ शुं कल्याणगुणवर्धनाय नमः।
ॐ शुं श्वेताम्बराय नमः।
ॐ शुं श्वेतवपुषे नमः।
ॐ शुं चतुर्भुज समन्विताय नमः।
ॐ शुं अक्षमालाधराय नमः।
ॐ शुं अचिन्त्याय नमः।
ॐ शुं अक्षीणगुणभासुराय नमः।
ॐ शुं नक्षत्रगणसञ्चाराय नमः।
ॐ शुं नयदाय नमः।
ॐ शुं नीतिमार्गदाय नमः।
ॐ शुं वर्षप्रदाय नमः।
ॐ शुं हृषीकेशाय नमः।
ॐ शुं क्लेशनाशकराय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं चिन्तितार्थप्रदाय नमः।
ॐ शुं शान्तिमते नमः।

ॐ शुं चित्तसमाधिकृते नमः।
ॐ शुं आधिव्याधिहराय नमः।
ॐ शुं भूरिविक्रमाय नमः।
ॐ शुं पुण्यदायकाय नमः।
ॐ शुं पुराणपुरुषाय नमः।
ॐ शुं पूज्याय नमः।
ॐ शुं पुरुहूतादिसन्नुताय नमः।
ॐ शुं अजेयाय नमः।
ॐ शुं विजितारातये नमः।
ॐ शुं विविधाभरणोज्ज्वलाय नमः।
ॐ शुं कुन्दपुष्पप्रतीकाशाय नमः।
ॐ शुं मन्दहासाय नमः।
ॐ शुं महामनसे नमः।
ॐ शुं मुक्ताफल समानाभाय नमः।
ॐ शुं मुक्तिदाय नमः।
ॐ शुं मुनिसन्नुताय नमः।
ॐ शुं रत्नसिंहासनारूढाय नमः।
ॐ शुं रथस्थाय नमः।
ॐ शुं रजतप्रभाय नमः।
ॐ शुं सूर्यप्राग्-देशसञ्चाराय नमः।
ॐ शुं सुरशत्रुसुहृदे नमः।
ॐ शुं कशये नमः।
ॐ शुं तुलावृषभराशीशाय नमः।
ॐ शुं दुर्धराय नमः।
ॐ शुं धर्मपालनाय नमः।
ॐ शुं भाग्यदाय नमः।
ॐ शुं भव्यचारित्राय नमः।
ॐ शुं भवबन्धविमोचनाय नमः।
ॐ शुं गौडदेशेश्वराय नमः।
ॐ शुं गोप्त्रे नमः।
ॐ शुं गुणिने नमः।
ॐ शुं गुणविभूषणाय नमः।
ॐ शुं ज्येष्ठानक्षत्रसम्भूताय नमः।
ॐ शुं ज्येष्ठाय नमः।
ॐ शुं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शुं शुचिस्थिताय नमः।
ॐ शुं अपवर्गप्रदाय नमः।
ॐ शुं अनन्ताय नमः।
ॐ शुं सन्तानफल दायकाय नमः।
ॐ शुं सर्वैश्वर्यप्रदायकाय नमः।
ॐ शुं सर्वगीर्वाणसन्नुताय नमः।

॥ इति श्रीशुक्र अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ श्री शनितन्त्रम् ॥

॥ अथ शनैश्चरवैदिक मन्त्रप्रयोगः॥

मंत्रः-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः।

विनियोगः- ॐ शन्नोदेवीरिति मंत्रस्य दध्यङ्ङथर्वण ऋषिः। गायत्री छन्दः। शनिर्देवता। आपो बीजम्। वर्तमान इति शक्तिः। शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादि न्यासः- ॐ दध्यङ्ङथर्वणऋषये नमः शिरसि॥१॥ ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे॥२॥ ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः हृदये॥३॥ ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये॥४॥ ॐ वर्त्तमानशक्तये नमः पादयोः॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- ॐ शन्नोदेवीरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥१॥ ॐ अभिष्टये तर्जनीभ्यां नमः॥२॥ ॐ आपोभवंतु मध्यमाभ्यां नमः॥३॥ ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः॥४॥ ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥५॥ ॐ अभिस्त्रवंतुनः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादि न्यासः- ॐ शन्नोदेवीरिति हृदयाय नमः॥१॥ ॐ अभिष्टये शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ आपो भवंतु शिखायै वषट्॥३॥ ॐ पीतये कवचाय हुं॥४॥ ॐ शंय्योरिति नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐ अभिस्त्रवंतुनः अस्त्राय फट्॥६॥ इति हृदयादिन्यासः।

मंत्रन्यासः- ॐ शन्न इति शिरसि॥१॥ ॐ देवीरिति ललाटे॥२॥ ॐ अभिष्टये मुखे॥३॥ ॐ आपो हृदये॥४॥ ॐ भवन्तु नाभौ॥५॥ ॐ

पीतये कट्याम् ॥६ ॥ ॐ शंय्योरूर्वो: ॥७ ॥ ओं अभिस्त्रवन्तु जानुनो: ॥८ ॥ ॐ न: पादयो: ॥९ ॥ इति मन्त्रन्यास:।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्–

नीलद्युति: शूलधर: किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुज: सूर्यसुत: प्रशांत: सदास्तु मह्यं वरदो महात्मा ॥१० ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारै: संपूज्य जपं कुर्य्यात्।

त्रयोविंशतिर्मन्दे चेति जपसंख्या २३००० ॥ जपांते शमीसमित्तिलपायस घृतैर्दशांशहोम:। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

अथ दानद्रव्याणि–

माषांश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिला: कुलित्था महिषी च लोहम् ।
कृष्णा च धेनु: प्रवदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनंदनाय ॥१ ॥

॥ इति शनैश्चरमंत्रप्रयोग: ॥

॥ अथ शनैश्चर तान्त्रिक मंत्रा: ॥

अष्टाक्षर मंत्र– ॐ शनैश्चराय नम:।

ध्यानम्–

वन्दे शनैश्चर वक्रदंष्ट्रं नीलविभूषणम् ।
वामानुजस्थितं वामकरं दक्षे वरं दधत् ॥

नवाक्षर मंत्र– ॐ शं शनैश्चराय नम:।

इसके ऋषि ब्रह्मा। छन्द गायत्री। देवता शनैश्चर। शं बीजं तथा "आप" शक्ति है।

नीलञ्जनाभं मिहिरस्यपुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम् ।
सुराऽसुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानसपङ्कजेऽहम् ॥

दशाक्षर मंत्र– ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:।

द्वादशाक्षर मंत्र– ॐ प्रां प्रीं प्रौं सं शनैश्चराय नम:।

॥ श्रीशनि यंत्र पूजनम् ॥

यंत्र मध्य पीठ पूजा करें। **ॐ सर्वात्मने शनि योगपीठाय नमः।** आसन पीठ पूजा करें। **ॐ स्वर्ण पीठाय नमः। ॐ रौप्य पीठाय नमः। ॐ ताम्रपीठाय नमः। ॐ लोहपीठाय नमः। ॐ काँस्यपीठाय नमः। ॐ पीत्तलासनाय नमः। ॐ कत्तीरासनाय नमः। ॐ रत्नपीठाय नमः।**

ॐ प्रां प्रीं प्रूं सः शनवे नमः से शनि का आवाहन करें।
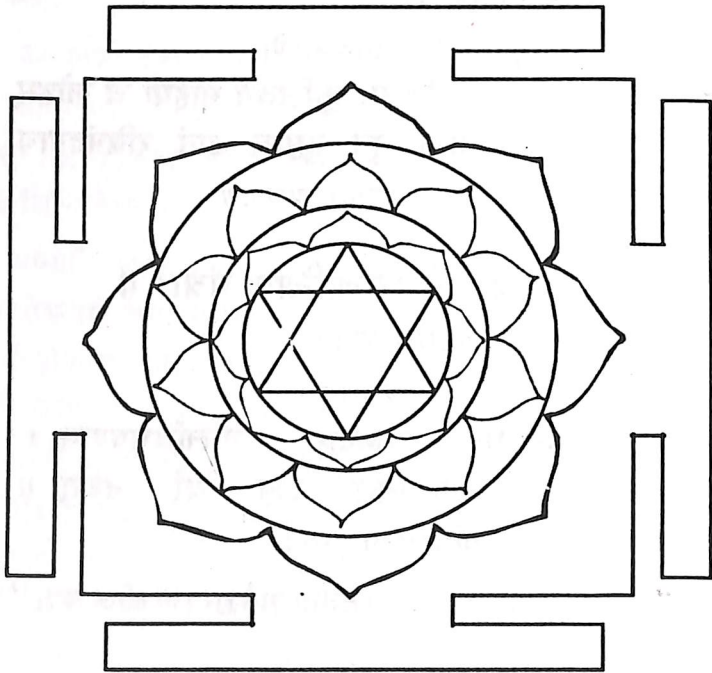
शनि पूजन यंत्रम्

प्रथमावरणम्-(षट्कोणे)- ॐ हृदयशक्त्यै नमः। ॐ प्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ प्रूं शिखायै वौषट्। ॐ प्रें कवचाय हुं। ॐ प्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रः अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम्-(अष्टदले)- **ॐ ध्वाजिन्यै नमः। ॐ धामिन्यै नमः। ॐ कंकाल्यै नमः। ॐ कलहप्रियायै नमः। ॐ कलह्यै नमः। ॐ कण्टक्यै नमः। ॐ अजायै नमः। ॐ तुरङ्गमायै नमः।** मध्ये- **ॐ महिष्यै नमः।**

तृतीयावरणम्-(दशदले)-शनि के नामों से पूजन करें। **ॐ कोणसंस्थाय नमः। ॐ पिङ्गलाय नमः। ॐ बभ्रुरूपाय नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ रौद्रदेहाय नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ सौरये नमः। ॐ मंदाय नमः। ॐ क्रोडाय नमः।**

चतुर्थावरणम्-(अष्टदले) पूर्वादिक्रम से ग्रहों का पूजन करें। **ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ भृगवे नमः। ॐ गुरवे नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ सूर्याय नमः।**

पंचमावरणम्-(भूपूरे प्रथम रेखायाम्)- पूर्वादि १० दिशाओं में शनि वाहनों का आवाहन करें। **ॐ गंर्धवाय नमः। ॐ अश्वाय नमः। ॐ गजाय नमः। ॐ अजाय नमः। ॐ जंबूकाय नमः। ॐ सिंहाय नमः। ॐ कागाय नमः। ॐ मृगाय नमः।**

पूर्व ईशानयोर्मध्ये- **ॐ मयूराय नमः।** नैऋत्य पश्चिमायोर्मध्ये- **ॐ महिषाय नमः।**

षष्टमावरणम्-(भूपूरे-द्वितीय रेखायाम्) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ आग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैऋत्यै नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। पूर्व ईशानयोर्मध्ये- ॐ ब्रह्मणे नमः। नैऋत्यपश्चिमेयोर्मध्ये- ॐ अनन्ताय नमः।**

सप्तावरणम्- (भूपूरे तृतीय रेखायाम्)- पूर्वादि क्रमेण- **ॐ व्रजाय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

इस तरह पूजा कर शनि के तांत्रिक या वैदिक मंत्र का जप करें।

॥ नराकार शनि यंत्रम् ॥

इस यंत्र का काले घोडे की नाल अथवा नाव की कील के पत्र पर लिखें। इनके अभाव में ताम्रपत्र या भोजपत्र पर काले आसन पर पूर्व की ओर मुँह करके लिखें।
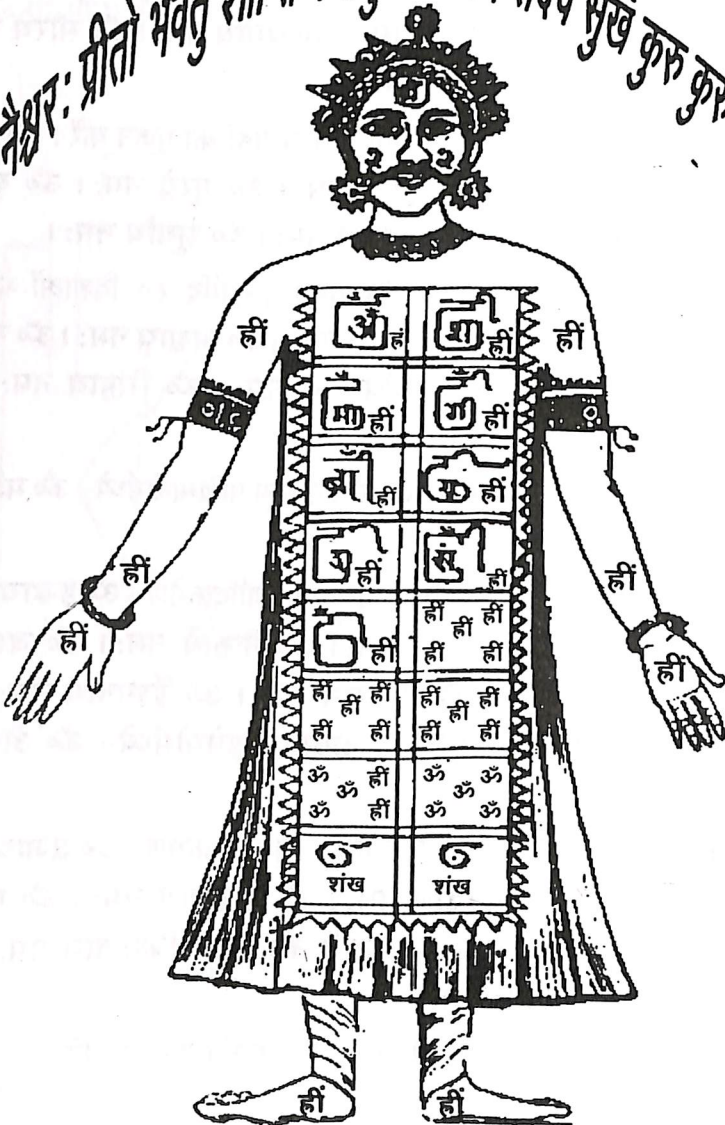
अष्टगंध अथवा गुलाब जल में काली स्याही मिलाकर लिखें। लोह के पत्र पर भी यंत्र खुदवा कर बना सकते है ।

मूल मंत्र- ॐ नमो भगवते शनैश्चराय सूर्यपुत्राय नमः।

इस मंत्र के जप करें। कम से कम २३ हजार जप करें। चौगुना करने से विशिष्ट लाभ होवें। तेल का दीपक जलाकर षोडशोपचार पूजन करें।

भोजपत्र पर लिखे यंत्र को पीड़ित व्यक्ति हाथ के बाँधे तो शनि प्रसन्न होकर पीड़ा दूर करें।

मंत्र पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान करें।

॥ शनिस्तोत्रम् ॥

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्र मन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, सौरिदेवता, शं बीजं, निः शक्ति, कृष्णवर्णोति कीलकम् धर्मार्थ काम-मोक्षात्मक चतुर्विदपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।**

॥ अथ न्यासः ॥

मन्त्र	करन्यास	हृदयादिन्यास
शनैश्चरायं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
मन्दगतये	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
अधोक्षजाय	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
कृष्णाङ्गाय	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
शुष्कोदराय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
छायात्मजाय	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्त सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी ॥

प्रणाम मन्त्र :-

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रहनिवारणम् ।
शनैश्चर प्रसादार्थं चिन्तयामास पार्थिव ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः ॥
नमो निर्मांसदेहाय दीर्घशमश्रुजटाय च ।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदर भयाकृते ॥
नमः पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः ।
नमो दीर्घायशुष्काय कालदष्ट्रं नमोऽस्तुते ॥
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ॥
नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुखनमोऽस्तुते ।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥
अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तुते ।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते ॥
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च ।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः ॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्यारोरगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशंयान्ति समूलतः ।
प्रसांद कुरु मे देव वरार्होऽहमुपागतः ।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ॥

(पद्मपुराणे)

॥ अथ दशरथकृत शनिस्तोत्रम्॥

(१)

॥श्री गणेशाय नमः॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री शनि स्तोत्र मंत्रस्य, कश्यप ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, सौरिः देवता, रां बीजम्, निः शक्तिः,कृष्णवर्णेति कीलकम्, धमार्थ काम मोक्षात्मक चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

विनियोग पश्चात् न्यासादि करें यथा-

करन्यासः- शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णांगाय अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः- शनैश्चराय नमः हृदये। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। कृष्णांगाय कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

दिग्बंधनम्- ॐ भुर्भुवः स्वः इति दिग्बंधनम्। इस मंत्र को पाँच बार पढकर दिग्बंधन करना चाहिए।

ध्यानम्—

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम् ॥१॥

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रह निवारणम्।
शनैश्चर प्रसादार्थं चिन्तयामास पार्थिवः ॥२॥

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुराः।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः सप्तद्वीपाधिपोऽभवत् ॥३॥

कृतिकान्ते शनिंर्ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणी भेदयित्वातु शनिर्यास्थिति साम्प्रतम्।
शकट मेधमित्युक्तं सुराऽसुरभयंकरम्।
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं भविष्यति सुदारुणम् ॥४॥

एतच्छ्रुत्वातुतद्वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिवः।

व्याकुलं च जगद् दृष्ट्वा पौर जानपदादिकम् ॥५॥
ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च भयमेतत्समागतम् ।
देशाश्च नगरग्रामाः भयभीताः समागताः ॥६॥
पप्रच्छ प्रयतोराजा वसिष्ठप्रमुखां द्विजान् ।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूतमे द्विजसत्तमाः ॥७॥

॥ वशिष्ठ उवाच ॥

प्रजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्नेकुतः प्रजाः ।
अयं योगोध्यसाध्यश्च ब्रह्मा शक्रादिभिः सुरैः ॥८॥
तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुध समन्वितम् ॥९॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम् ।
त्रिलक्षयोजनं स्थानं चन्द्रस्योपरिसंस्थितम् ॥१०॥
रोहिणीपृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः ।
रथकेतुकञ्चने च दिव्ये मणिविभूषिते ॥११॥
हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छ्रिते ।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्वलैः ॥१२॥
विराजत तदाकाशै द्वितीय इव भास्करः ।
आकर्णचापमाकृष्य सहशस्त्रं नियोजितम् ॥१३॥
कृणिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्रविशतांच रोहिणीम् ।
दृष्ट्वा दशरथंचाग्रे तस्थौच भृकुटामुखः ॥१४॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुराऽसुरनिषूदनम् ।
प्रहस्य चमयात् सौरिरिदं वचनं ब्रवीत् ॥१५॥

॥ शनिरुवाच ॥

पौरुषं तव राजेन्द्र! मया दृष्टं न कस्यचित् ।
देवासुरामनुष्याश्च सिद्ध विद्याधरोरगाः ॥१६॥
मयाविलोकिताः सर्वेभयं गच्छन्ति तत्क्षणात् ।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसा पौरुषेण च ।

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन ॥१७॥

॥ दशरथ उवाच ॥

प्रसन्नो यदि मे सौरे! एकश्चास्तु वरः परः,
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन ।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रर्कमेदिनी ॥
यपितु तु महासौरे! नाऽन्यमिच्छाम्यहं परम् ।
एवमस्तु शनि प्रौक्तं वरंलब्ध्वा तु शाश्वतम् ॥
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा ।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुब्रत ॥
प्रार्थयामास दृष्टात्मा वरमन्यं शनिस्तदा ।
न भेतव्यं न भेतव्यं त्वया भास्करनन्दन ॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन ।
कीर्तिरेषामदीया च त्रैलोक्ये स्थापय प्रभो ॥
एवं वरं तु संप्राप्य हृष्टरोमा स प्रार्थिवः ।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वा चैव कृताञ्जलिः ॥
ध्यात्वां सरस्वतीं देवो गणनाथं विनायकम् ।
राजा दशरथं स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत् ॥

॥ दशरथ उवाच ॥

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।
नमः सुरूपगात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः ॥
नमो नित्यं क्षुधार्त्ताय अतृप्ताय च वै नमः ।
नमः कालाग्निरूपाय कृष्णांगाय च वै नमः ॥
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः ।
नमोऽस्तु कोटराक्षाय दुर्भिक्षाय कपालिने ॥
नमो घौराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ।
नमो मन्दमते! रौद्रं भानुजे! भयदायिने ॥
अधोदृष्टे! नमस्तेऽस्तु संवर्तकमयाय च ।

तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च ॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेषु कश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टोहरसि तत्क्षणात् ॥
सूर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः ।
देवाऽसुर मनुष्याश्च पशुपक्षिसरीसृपाः ॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैनामाशुव्रजन्ति ते ।
ब्रह्माशक्रोहरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येतेत्वया दृष्ट्यावलोकिताः ।
देशाश्चनगरग्रामाः द्वीपाश्चैव तथाद्रुमाः ॥
त्वयालोकिता सर्वे विनश्यन्ति समूलतः ।
प्रसादं कुरु हे सौरे! वरदो भव भानुजः ॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिग्रहराजो महाबलः ।
अब्रवीच शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः ॥
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत ।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते ॥

॥ दशरथ उवाच ॥

प्रसन्नो यदि मे सौरे! वरं देहि ममेप्सितम् ।
अद्य प्रभृतिपिंगाक्ष! पीडादेया न कस्यचित् ॥
प्रसादं कुरु मे सौरे! वरोऽयं मे ममेप्सितः ।

॥ शनिरुवाच ॥

अदेयऽस्तु वरोऽस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते ।
त्वयाप्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः ॥
देवासुर मनुष्याश्चसिद्ध विद्याधरोरगाः ।
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन ॥
मृत्युस्थान चतुर्थेता जन्मव्यय द्वितीयगे ।
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च ॥
यः पठेद् द्वित्रिसन्ध्यां वा शुचिर्भूत्वासमाहितः ।

न तस्य जायते पीडा कृता वै मम निश्चितम् ॥
प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम् ।
वरदां च धनुः शूलं बाणांकितकरां शुभाम् ॥
अयुतं मेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः ।
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्घृतं च नीलपंकजेः ॥
पायसं शर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत् ।
ब्राह्मणाम्भोजयेतत्र स्वशक्त्या घृत पायसैः ॥
तैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं च यथाविधिः ।
पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यं च लेपयेत् ॥
नील्या वा कृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः ।
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णवस्त्रादिकं शुभम् ॥
धेनुं वा वृषभंवाऽपि सवत्सां च पयस्विनीम् ।
एवं विशेष पूजां च मे द्वारे कुरुते नृप ॥
मन्त्रोद्धारां विशेषे च स्तोत्रेणानेन पूज्येत् ।
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः ॥
तस्य पीडा न चैवाहं करिष्यामि कदाचन ।
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्य च ॥
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत् ।
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा ॥
मत्वा कृतार्थमात्मनं नमस्कृत्य शनैश्चरं ।
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारूह्य वीर्यवान् ॥
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभवत्तदा ।
स्वार्थसिद्धिमवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत् ॥
कोणस्थः पिंगलोवभ्रुः कृष्णौरौद्रान्तकोयमः ।
सौरिः शनैश्चरौ मन्दः पिप्पलाश्रयं संस्थितः ॥
एतानि शनि नामानि जपेदश्वत्थ सन्निधौ ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाऽपि भविष्यति ॥

अल्पमृत्यु विनाशाय दुःखस्योद्धारणाय च ।
दातव्यं तिलतैलेन धान्य माषादिकं तथा ॥
लौहं देयं च विप्राय सौवर्णेन समन्वितम् ।
शनिस्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयाद्वा समाहितः ॥
विजयांचार्थ कामंचारोग्यं सुखमवाप्नुयात् ॥

॥ इति श्रीशनि स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ दशरथकृत शनिस्तोत्रम् द्वितीयम् ॥

॥ दशराथ उवाच ॥

नमः कृष्णाय नीलाय शिति कण्ठ निभाय च ।
नमो नील मयूखाय नीलोत्पल निभाय च ॥१॥
नमो निर्मांस देहाय दीर्घश्मश्रु जटाय च ।
नमो विशाल नेत्राय स्थूल रोम्णे नमो नमः ॥२॥
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तुते ।
नमस्ते कोटरस्थाय दुर्निरीक्ष्याय ते नमः ॥३॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालिने ।
नमस्ते सर्व भक्ष्याय बली मुख नमोऽस्तुते ॥४॥
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु सर्वातक्र्य नमोऽस्तुते ।
नमः कालाग्नि रुद्राय कृतान्ताय च वै नमः ॥५॥
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमो नमः ।
तपसा दग्ध देहाय नित्यं योगरताय च ॥६॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज सूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टौ वै हरसि क्षणात् ॥७॥
देवासुर मनुष्याश्च सिद्ध विद्याधरोरगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु व्रजन्ति ते ॥८॥
ब्रह्मा शक्रो मनुश्चैव ऋषयः सप्त तारकाः ।
भ्रष्टराज्याः पतन्त्येते तव दृष्ट्यावलोकिता: ॥९॥

देशाश्च नगरग्रामा दिशश्चैव द्रुमास्तथा ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः ॥१०॥
प्रसादं कुरु मे सौरे वरार्थे तव संस्थितः ।
एवं स्तुत स्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ॥११॥
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्ट रोमा स पार्थिवम् ।

॥ शनिरुवाच ॥

तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र स्तवेनानेन मानद ।
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन ॥१२॥

॥ दशरथ उवाच ॥

प्रसन्नस्त्वं यदा सौरे वरं देहि ममेप्सितम् ।
अद्य प्रभृति सौरे ते पीड़ा कार्या न कस्यचित् ॥१३॥
देवासुर मनुष्याणां पशु पक्षि शरीरिणाम् ।

॥ शनिरुवाच ॥

ग्रहाणां स ग्रहो ज्ञेयो यस्तु पीड़ाकरः स्मृतः ।
अदेयो हि वरो यस्तु तुभ्यं चैव ददामि तम् ॥१४॥
त्वया प्रोक्तं च मे स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः ।
एककालं द्विकालं वा पीड़ां मुञ्चामि तस्य वै ॥१५॥
देवासुर मनुष्याणां सिद्ध विद्याधर रक्षसाम् ।
मृत्युस्थान स्थितो वापि जन्मस्थानगतोपि वा ॥१६॥
यः पुनः श्रद्धया युक्तः शुचिः स्नातः समाहितः ।
भक्त्योपचारैः संपूज्य प्रतिमां लोहजां मम ॥१७॥
मद्दिने तु विशेषेण स्तोत्रेणानेन पूजयेत् ।
पूजयित्वा जपः स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः ॥१८॥
माषौदनं तिलैर्मिश्र दद्याल्होहं च दक्षिणाम् ।
कृष्णांगां वृषभं वापि दद्याद् विप्राय धीमते ॥१९॥
तस्य पीड़ा न चैवाहं करिष्यामि कदाचन ।
गोचरे जन्मलग्ने वा दशास्वन्तर्दशासु च ॥२०॥

रक्षामि सततं तस्य पीड़ा मन्यग्रहैः कृताम् ।
अनेनैव विधानेन पीड़ामुक्तं जगद् भवेत् ॥२१।
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथ स्तदा ।
स्वस्थानं च ततो गत्वा प्राप्त कामोऽभवन्नृपः ॥२२॥

॥ इति स्कन्द पुराणे दशरथ कृतं शनिस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीशनि रक्षास्तवम् ॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम् ॥

॥ मूल पाठ ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीशनैश्चर स्तव राजस्य सिन्धुद्वीपः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीशनैश्चरः देवता, श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि सिन्धुद्वीप ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदि श्रीशनैश्चर देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ध्यानम् :-

शिरो मे भास्करिः पातु भालं छाया सुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुति ॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजो मे भयदोऽवतु ॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतः रविनन्दनः ॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः ।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नाम बलैर्युतम् ।
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ॥

॥ श्रीशनि वज्रपञ्जर कवचम् ॥

॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनि पीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥
कवचं देवतावासं वज्र पञ्जर संज्ञकम् ।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्व सौभाग्य दायकम् ॥

॥ मूल पाठ ॥

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीशनैश्चर वज्र पञ्जर कवचस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशनैश्चरः देवता, श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः– शिरसि कश्यप ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीशनैश्चरः देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

ध्यानम् :–

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितः त्रासकः धनुष्करो ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्यात् वरदः प्रशान्तः ॥

॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥

शृणुध्वगृषय सर्वे शनिपीड़ाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिद मनुत्तमम ॥१॥
कवचं देवतावासं वज्रपञ्जर अंशकम् ।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥२॥
शिरः शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्य नन्दनः ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥३॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा ।
स्निग्ध कण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ॥४॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥५॥

नाभिं ग्रह पतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा ।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानु युगं तथा ॥६॥
पादौ मन्द गतिः पातु सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेत् मे सूर्यनन्दनः ॥७॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥१॥
व्यय जन्म द्वितीयस्थो मृत्युस्थान गतोऽपि वा ।
कालस्थ गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥२॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्म द्वितीयगे ।
कवचं पठतो नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥३॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
द्वादशाष्टम जन्मस्थ दोषान्नाशयते सदा
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान् नाशयते प्रभु ॥४॥

॥ श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्रीशनिवज्र पञ्जर कवचं ॥

॥ श्रीशनि अष्टोत्तरशतनामावलि स्तोत्रम् ॥

सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः ।
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः ॥१॥
शितिकण्ठ निभो नीलश्छाया - हृदयनन्दनः ।
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावली मुखः ॥२॥
दीर्घो निर्मांस-गात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ।
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः ॥३॥
मन्दोमन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः ।
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी ॥४॥
कुजो बुधो गुरुः काव्यो, भानुजः सिंहिका सुतः ।

केतुर्देव पतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ॥५॥
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशानः सुरः आत्मभूः ।
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः कामो ईश्वरः ॥६॥
कर्त्ता हर्त्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायकः ।
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्त्ता धनप्रदः ॥७॥
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ।
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ॥८॥
ग्रहपीडा हरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ।
स्थिरासनः स्थिरगतिः महाकायो महाबलः ॥९॥
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ।
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्य - नन्दनः ॥१०॥
शतभिद्रुक्ष - दायिने त्रयोदशी तिथि प्रियः ।
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगण नायकः ॥११॥
योग राशिर्मुहूर्त्तात्मा कर्त्ता दिनपतिः प्रभुः ।
शमीपुष्पप्रियः श्यामः त्रैलोक्य भयदायकः ॥१२॥
नीलवासाः क्रियासिन्धुः नीलाञ्जन च यच्छविः ।
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगण स्तुतः ॥१३॥

॥ फलश्रुति ॥

अष्टोत्तर शतंनाम्नां सौरेश्छाया सुतस्य यः ।
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ॥१॥
कृत्वा पूजां पठेन् मर्त्यो भक्तिमान् यो स्तव राजम् ।
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति ॥२॥
जन्म लग्ने स्थितिर्वाऽपि गोचरे क्रूरराशिगे ।
दशासु च गते सौरे तदा स्तवमिमं पठेत् ॥३॥
पूजयेद् यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ।
विधाय लौहप्रतिमां नरो दुःखात् विमुच्यते ॥४॥

बाधा याऽन्य ग्रहाणां च यः पठेत् तस्य नश्यति ।
भीतो भयात् विमुच्येत् बद्धो मुच्येत् बन्धनात् ।
रोगी रोगात् विमुच्येत् नरः स्तवमिमं पठेत् ॥५॥

॥ शनि अष्टकस्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री शनैश्चर स्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः, श्री शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप् छन्दः, शनैश्चर प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

॥ दशरथ उवाच ॥

कोणान्तगो रौद्र यमोऽथ बभ्रूः कृष्णः शनिः पिङ्गल मन्दसौरिः ।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीड़ां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किं पुरुषा गजेन्द्रा गन्धर्व विद्याधर पन्नगाश्च ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थिते च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥२॥
नरा नरेन्द्राः पशवो गजेन्द्राः सरीसृपाः कीट पतङ्ग भृङ्गाः ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थिते च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानि येन ग्रामाश्च देशाः पुर पत्तनानि ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थिते च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥४॥
स्त्रष्टा स्वयं भूर्भुवन त्रयस्य त्राणे हरिः संहरणे महेशः ।
एक-स्त्रिधा ऋग् यजु साम मूर्ति स्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥५॥
प्रयागकूले यमुना तटे च सरस्वती पुण्य जले गुहायाम् ।
यो योगिभिर्ध्येय शरीरसूक्ष्म-स्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥६॥
अन्यत्र देशात् स्वगृहं प्रविष्टा यदीय वारे सुखिनो नराः स्युः ।
गृहाद् गता ये न पुनः प्रयान्ति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥७॥
तिलैर्यवै र्माष गुडान्नदानै-र्लोहेन नीलाम्बर दानतो वा ।
प्रीणाति मन्त्रैर्निज वासरेण तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥८॥
शन्यष्टकं यः पठति प्रभाते नित्यं स सूतैः पशु बान्धवैश्च ।
करोति राज्यं भुवि भूरि सौख्यं प्राप्नोति निर्वाणपदं तथाऽन्ते ॥९॥

॥ शनैश्चर स्तवराजः॥

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम् ॥१॥
शिरो मे भास्करिः पातु भालं छाया सुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठ निभः श्रुती ॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः ॥४॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः ।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नाम बलैर्युताम् ॥५॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ।
ॐ सौरीः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः ।
शितिकण्ठनिभो नीलश्छाया हृदयनन्दनः ॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमा बलीमुखः ।
दीर्घोनिर्मांस-गात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घ श्मश्रुर्जटाधरः ।
मन्दो मन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः ॥९॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो-रविः शशी ।
कुजोबुधोगुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥१०॥
केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
शशीमरुत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः ॥११॥

विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ।
कर्ताहर्ता पालयिता राज्यभुग् राज्यदायकः ॥१२॥
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीड़ाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥१५॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिरुक्ष दयितः त्रयोदशतिथिप्रियः ॥१६॥
तिथ्यात्मातिथिगणो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशि-र्मुहुर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥१७॥
शमीपुष्पप्रियः श्याम स्त्रैलोक्याभावदायकः ।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जन च यच्छविः ॥१८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगण स्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छाया सुतस्य यः ॥१९॥
पठेन्नित्यं तस्य पीड़ा समस्ता नश्यन्ति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् यः स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीड़ा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥
विधायलोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
बाधात्वन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ॥२४॥

पुत्रवान्धनवान् श्रीमान् जायते नात्र संशयः ।

॥ नारद उवाच ॥

स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः ।
दत्त्वा राज्ञे वरं कार्मं शनिश्चान्तर्दधे तदा ॥२६॥

॥ इति श्रीभविष्य पुराणे शनैश्चरस्तवराजः समाप्तः ॥

॥ पिप्पलादऋषिकृत शनिस्तोत्रम् ॥

यः पुरा नष्टराज्याय नलाय प्रददौ किल ।
स्वप्ने तस्मै निजं राज्यं स मे सौरिः प्रसीद तु ॥१॥

केशनीलाञ्जन प्रख्यं मनश्चेष्टा प्रसारिणम् ।
छाया मार्तण्ड संभूतं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥२॥

नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहार वर्णाञ्जनमेचकाय ।
श्रुत्वा रहस्यं भव कामदश्च फलप्रदो मे भव सूर्य पुत्र ॥३॥

नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्णदेहाय वै नमः ।
शनैश्चराय ते तद्व शुद्धबुद्धि प्रदायिने ॥४॥

य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो ददात्य सौ ।
तदीयं तु भयं तस्यस्वप्नेपि न भविष्यति ॥५॥

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रूः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः प्रीयतां मे ग्रहोत्तमः ॥६॥

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तुते ।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते ॥७॥

नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते बालकाय च ।
नमस्ते यज्ञ संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥८॥

नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते ।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥९॥

॥ श्रीशनि नाम स्तुतिम् ॥

॥ श्रीशन्युवाच ॥

क्रोडं नीलाञ्जनप्रख्यं नीलवर्ण समस्त्रजं ।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
नमोऽर्क पुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय ।
श्रुत्वा रहस्यं भव कामदश्च फलप्रदो मे भव सूर्यपुत्र ॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्णदेहाय वै नमः ।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने ॥

॥ फलश्रुति ॥

य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो भवाम्यहं ।
मदीयं तु भयं तस्य स्वप्नेऽपि न भविष्यति ॥

॥ इति श्री भविष्य पुराणे श्रीशनि नाम स्तुतिम् ॥

॥ श्रीशनि एवं शनिभार्या स्तोत्रम् ॥

यः पुरा राज्यभ्रष्टाय नलाय प्रददो किल ।
स्वप्ने शौरिः स्वयं मन्त्रं सर्वकामफलप्रदम् ॥
क्रोडं नीलाञ्जनप्रख्यं नीलजीमूत सन्निभम् ।
छायामार्तण्ड-संभूतं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥२॥
ॐ नमोऽर्कपुत्रायशनैश्चराय नीहार वर्णाञ्जननीलकाय ।
स्मृत्वा रहस्यं भुवि मानुषत्वे फलप्रदो मे भव सूर्य पुत्र ॥३॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्ण वर्णाय ते नमः ।
शनैश्चराय क्रूराय सिद्धि बुद्धि प्रदायिने ॥४॥
य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो भवाम्यहम् ।
मामकानां भयं तस्य स्वप्नेष्वपि न जायते ॥५॥
गार्गेय कौशिकस्यापि पिप्पलादो महामुनिः ।
शनैश्चर कृता पीड़ा न भवति कदाचन ॥६॥

क्रोडस्तु पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
शौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संयुतः ॥७॥
एतानि शनि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
तस्य शौरेः कृता पीड़ा न भवति कदाचन ॥८॥

॥ शनिभार्या नामानि ॥

ध्वजनी धामनी चैव कङ्काली कलहप्रिया ।
कलही कण्टकी चापि अजा महिषी तुरङ्गमा ॥९॥
नामानि शनि-भार्यायाः नित्यं जपति यः पुमान् ।
तस्य दुःखाः विनश्यन्ति सुखसौभाग्यं वर्द्धते ॥१०॥

॥ शनिमृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

नीलाद्रि शोभांचित दिव्य मूर्तिः
खड्गी त्रिदण्डी शर चाप हस्तः ।
शम्भूर्महाकाल शनि पुरारि
जयत्यशेषासुर नाशकारी ॥
मेरुपृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम् ।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छतिस्म जगद्धितम् ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

भगवन्! देवदेवेश! भक्तानुग्रहकारक !
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्व सूचितम् ॥
तदेव त्वं महाबाहो! लोकानां हितकारकम् ।
तव मूर्ति प्रभेदस्य! महाकालस्य साम्प्रतम् ॥
शनैर्मृर्त्यजयस्तोत्रं ब्रूहि मे नेत्रजन्मनः ।
अकाल - मृत्युहरणमपमृत्यु - निवारणम् ॥
शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्तवं शुभम् ।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमोऽस्तु मनुनायुतम् ॥

॥ श्री ईश्वरोवाच ॥

नित्य प्रियतमे गौरि सर्वलोकहितेरते ।
गुह्याद् गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकहितेरते ॥
शनि मृत्युंजयस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवाऽधुना ।
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वशत्रु विमर्दनम् ॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम् ।
शरीरारोग्य - करणमायुर्वृद्धिकरं नृणाम् ॥
यदि भक्तासि मे गौरि गोपनीयं प्रयत्नतः ।
गोपितं सर्वतंत्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरि ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीमहाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महाकालशनिर्देवता, शां बीजं, आयसी शक्तिः, कालपुरुषायेति कीलकं ममाऽकालमृत्युनिवारणार्थे जपे पाठे विनियोगः।

ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत् ।
महोग्रं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत् ॥
हृदिन्यसेत् महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत् ।
जान्वोस्तूरूचरं न्यस्य पादयोस्तु शनैश्चरम् ।
गले तु विन्यसेन्मन्दं बाह्वोर्महाग्रहं न्यसेत् ।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनेः ॥
न्यास ध्यानं प्रवक्ष्यामि ततौ ध्यात्वा पठेन्नरः ।
कल्पादियुगभेदांश्च कराङ्गन्यासरूपणिः ॥
कालात्मनो न्यसेद् गात्रे मृत्युंजय! नमोऽस्तुते ।
मन्वतराणि सर्वांगे महाकालस्वरूपिणः ।
भावयेत्प्राप्ति प्रत्यंगं महाकालस्य ते नमः ॥
भावयेत्प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः ।
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः ।
सौरये च नमस्तेऽस्तु गण्डयोर्विन्यसेत् ततः ॥
नमो वै दुर्निरीक्ष्याय चाश्विनं विन्यसेन्मुखे ।

नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत् ॥
मार्गशीर्षं न्यसेद् बाह्वोर्महारौद्राय ते नमः ।
उद्ध्र्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत् ॥
नमः कालप्रबोधाय माघं वै चोदरेन्यसेत् ।
मन्दगाय नमो मेढ्रं न्यसेद्वै फाल्गुनं तथा ॥
ऊर्वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोत्क्रषाय च ।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवर्त्तकाय च ॥
जंघयोभौ न्यसेज्ज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा ।
आषाढं पादयोश्चैव शनये च नमस्तथा ॥
कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपाद मस्तके ।
न्यसेदाशीर्ष पादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च ॥
न्यसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः ।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वांगुलौ न्यसेत् ॥
न्यसेद् गुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च ।
विष्णवयं भावयेज्जंघोभये शिष्टतमाय ते ॥
जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णारुचे नमः ।
पूर्वाभाद्रं तथाग्रे च करालाय नमस्तथा ।
उरूद्वये च वरुणो न्यसेत् कालभृते नमः ।
पृष्ठउत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा ।
रेवतीं च न्यसेन्नाभौ नमो मन्दचराय च ।
गर्भदेशे न्यसेदाभो नमो श्यामतराय च ॥
नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत् ।
न्यसेत्कृत्तिका हृदये नमस्तैलप्रियाय च ॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारिणे ।
पुनर्वसुमूर्ध्वभागे नमो वै बाणधारिणे ।
मृगंन्यसेत् द्वामहस्ते त्रिदण्डोल्लासिताय च ।
दक्षोद्ध्र्वे भावयेद्रौद्रं नमो वै बाणधारिणे ॥

तिष्यं न्यसेद्दक्षबाहौं नमस्ते हर मन्यवे ।
सार्पं न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः ॥
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे ।
मुखे न्यसेद्भगर्चं च नमः क्रूरग्रहाय च ॥
भावेद्दक्षनासायामर्यमाणञ्च योगिने ।
भावेद्वामनासायां हस्तञ्च धारिणे नमः ॥
त्वाष्ट्रं न्येसद्दक्षकर्णे नमोऽस्तु ब्राह्मणाय ते ।
विशाखां च दक्षनेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये ॥
विष्कुंभ भावयेच्छीर्षसन्धौ कालाय ते नमः ।
प्रीतियोगं भ्रुवोः संधौ महामन्द! नमोऽस्तुते ।
नेत्रयोः संधावायुष्मेऽधोगं भीष्माय ते नमः ॥
सौभाग्यं भावयेन्नासासन्धौ फलाशनाय च ।
शोभनं भावयेत्कर्णौ सन्धौ पुष्यात्मने नमः ।
नमः कृष्णायातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत् ॥
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे ।
धृतिं न्यसेद्देहवातौ पृष्ठे छायासुताय च ॥
तन्मूलसन्धौ शूलं च न्यसेदग्राय ते नमः ।
तत्कपूरे न्यसद्गण्डे नित्यानन्दाय ते नमः ॥
हर्षणं तन्मूलसन्धौ भूतसन्तापिने नमः ।
तत्कपूरे न्येसद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धिं तन्मणिबन्धे च न्यसेत् कालाग्नये नमः ।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत्कालकृते नमः ॥
वरीयांसं दक्षपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः ।
परिघं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोस्तु ते ॥
न्यसेद्दक्षोरुसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे ।
तज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेहाय ते नमः ॥

साध्यं न्यसेच्च तद्गुल्फसन्धौ घोराय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः ॥
न्यसेद्वामोरुसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः ।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेत्सद्योगिने नमः ॥
ऐन्द्रं तद्गुल्फसन्धौ च योगोर्वीशाय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ नमो भव्याय वैधृतिम् ॥
चर्मणि बवकरणं च भावयेद्यज्वने नमः ।
वालवं भावयेद्रक्ते नमो भव्याय वैधृतिः ॥
कौलवं भावयेदस्थि नमस्ते सर्वभक्षिणे ।
तैतिलं भावयेन्मांसे आममांसप्रियाय ते ॥
गरं न्यसेद्वसायां च सर्वग्रासाय ते नमः ।
न्यसेद्वणिज्यं मज्जायां सर्वान्तक नमोऽस्तुते ॥
वीर्ये च भावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे ।
रुद्रमित्रं पितृवसुवारीयेतांश्च पञ्च च ॥
मुहूर्तांश्च दक्षपादनखेषु भावयेन्नमः ।
पुरूहूर्त्तांश्च वामपादनखेषु भावयेन्नमः ॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यसत्याय ते नमः ।
सिद्धेश्वर! नमस्तुभ्यं योगेश्वर! नमोऽस्तुते ॥
बाघनक्तंचरांश्चैव वरुणार्यमयोनिकान् ।
मुहूर्तांश्च दक्षहस्तनखेषु भावयेन्नमः ॥
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिणे दक्षदृष्टये ।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वामदृष्टये ॥
वामहस्तनखेष्वन्तर्यवर्णेशाय ते नमः ।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषाजपष्च्छस्त्रांश्च भावयेत् ॥
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमणकारिणे ।
राशिनाथाय राशीनां फलदात्रे नमोऽस्तुते ॥

यमाग्निचन्द्रादितिकविधातृंश्च विभायेत् ।
ऊर्ध्वहस्तदक्षनखेष्वन्यत्कालाय ते नमः ॥
तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्रकुम्भगृहाय च ।
समीरत्वष्टजीवांश विष्णु तिग्मद्युतिन्न्यसेत् ॥
ऊर्ध्ववामहस्तेष्वन्यग्रह दोष निवारणे ।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च ॥
रविवारं ललाटे च न्यसेद्भीमदृशे नमः ।
सोमवारं न्यसेत्वान्त्रे नमो जीवस्वरूपिणे ॥
भौमवारं न्यसेत् वान्ते नमो मृतप्रियाय च ।
मेढ्रे न्यसेत्सौम्यवारं नमो जीवस्वरूपिणे ॥
वृषणे गुरुवारे च नमो मंत्रस्वरूपिणे ।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलयकारिणे ॥
पादयोः शनिवारं च निर्मांसाय नमोऽस्तुते ।
घटिकां न्यसेत्केशेषु नमस्ते सूक्ष्मरूपिणे ॥
कालरूपिन्नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशक ।
त्रिपुरस्य वधार्थाय शम्भू जाताय ते नमः ॥
नमः कालशरीराय कालनेत्राय ते नमः ।
कालहेतो! नमस्तुभ्यं कालात्मजाय ते नमः ॥
अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः ।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः ॥
निमेषादिमहाकल्पकालरूपं च भैरवम् ।
मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कर्त्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम् ।
मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
इतरं ग्रहजातानां फलानामधिकारिणाम् ।

मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तिमव्ययम् ।
मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कारणं सुखदुःखानां भावाऽभावस्वरूपिणम् ।
मृत्यञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
अकालमृत्युहारिणमपमृत्यु निवारणम् ।
मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कालरूपेण संसारं भक्षयन्तं महाग्रहम् ।
मृत्युंजय महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
दुर्निरीक्ष्यं स्थूल रोमं भीषणं दीर्घलोचनम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः ।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम् ।
कालादेव जगत्सर्वं काले एव विलीयते ।
कालरूपः स्वयं शम्भूः कालात्मा ग्रह देवता ॥
चण्डीशो रुद्रडाकिन्याक्रान्त चण्डीश उच्यते ।
विद्युदाकलितो नद्यां समारूढ़ो रसाधिपः ॥
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिह्वया ललित पुनः ।
चित्तजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युतायुतः ॥
नमोऽन्तो मनुरित्येष शन्नितुष्टिकरः शिवे ।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेन जपेन्नरः ॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि ध्यात्त्वा सम्पूज्य भक्तितः ।
तस्य मृत्युर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये ॥
ज्वराः सर्वे विनश्यंति दद्रु-विस्फोटकाच्छुभा ।
दिवा सौरिं स्मरेत् रात्रौ महाकालं यजन् पठेत् ॥
जन्मर्क्षे च यदा सौरिर्जपेदेतत्सहस्त्रकम् ।
वेधगे वामवेधे वा जपेद्वर्षसहस्त्रकम् ॥

द्वितीये द्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टगेऽपि वा ।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दिनावधि ॥
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपञ्चमे ।
गोचरे जन्मलग्नेशो दशास्वन्तर्दशासु च ॥
गुरुलाघवज्ञानेन पठेत्तावद्दिनावधि ।
शतमेकं त्रयं वाऽयं शतयुग्मं कदाचन ॥
आपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि न जयं भवेत् ।
महाकालालये पीठे ह्यथवा जलसन्निधौ ॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतो ग्रहे ।
नियमेवैकमत्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना ॥
श्रौतव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम् ।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयाभिधम् ॥
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रम समन्वितम् ।
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा पूजायां च निशामुखे ॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितो भयम् ।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा ॥
नाऽकाले मरणं तेषां नाऽपमृत्युभयं भवेत् ।
आयुर्वर्षशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविनः ॥
नाऽतः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत् ।
शान्तिकं शीघ्रशाफल्यं स्तोत्रमेतन्मयोदितम् ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ।
कथनीयं महादेवि! नैवाभक्तस्य कस्यवित् ॥

॥ इति मार्तण्डभैरव तंत्रे शनिमृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

॥ अथ कीड़ी नगरा साधना ॥

ॐ योजन गंधा जोगिनी, ऋद्धि सिद्धि में भरपूर
मैं आयो तोय जाचणे, करजो कारज जरूर ॥

विधानम् - गेहूँ का आटा सवा सेर, घी ढ़ाई पाव, चीनी ढ़ाई पाव, इनका कंसार भूनकर तैयार कर लेवें। शनिवार को सूर्योदय से पहिले जंगल में जाकर कीड़ी नगरा (चींटा-चींटी के बिलों) में थोड़ा-थोड़ा कंसार गिराते जावे और ऊपर लिखे मंत्र का उच्चारण करते जावे। इस तरह दिन भर जंगल में खूब फिरे थकने पर किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करें। उसी समय निद्रावस्था प्राप्त होने से एकाकी पुरुष या स्त्री सामने आकर खड़े हो जायेगी और साधक के मनोप्सित कार्य को अच्छे स्पष्ट वचनों से बतावेगा। उसकी बात सब साधक को अच्छी तरह सुनायी देवेगी। यह चार पहर का प्रयोग निराहार व्रत करके करना योग्य है। यह पहले ही दिन प्रश्न का उत्तर दे देता है इसमें कुछ सन्देह नहीं। कई दिनों तक करने से तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। रात्रि को घर में आकर भोजन करना चाहिये। इस प्रयोग से शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण करते है तथा योजन गंधा योगिनी के रूप में उत्तर देते है।

॥ शनिशान्ति प्रयोग: ॥

रोगलक्षण -

ऋण, दु:ख, पैरों की तकलीफ, मंदाग्नि, वातवमन, शरीर में कंपन, अकस्मात् चोट दुर्घटना, दीर्घकालीन बिमारियां, शारीरिक दुर्बलता, कदछोटा होना अपयश, मुकदमेबाजी, चोरी, सट्टा एवं नशे की आदत, अकारण शत्रुता, अपयश आदि।

उपचार -

१. शनिवार को शनिनक्षत्र - पुष्य, अनुराधा, उ.भाद्रपद में से किसी नक्षत्र में चन्द्रबल देखकर यंत्र धारण करें।

२. नराकार शनियंत्र पर तैलाभिषेक करायें या शनिमूर्ति पर तैलाभिषेक शनि मन्त्रों से करायें।

३. बिच्छुकांटा की जड़ या हत्थाजोड़ी की महादुर्गा या महाकाली के नाममन्त्रों से पूजन कर धारण करें, अपने पास रखें। हत्थाजोड़ी की पूजा करें सिन्दूर

चढ़ावें, लोबान का धूप देवें।

मन्त्र - ॐ किलि किलि स्वाहा।

४. कालेतिल, लोध्रपुष्प, शतपुष्पी, लाजा, उड़द, लौंग, सुगन्धित पुष्प आदि सब के जल से स्नान करने से शनि पीड़ा दूर होवे।

५. **दान** - कालेतिल, उड़द, भैंस, लोहा, तैल, कालावस्त्र, ऊन, नीलम, कुलथी, कालीगौ, कालेपुष्प, जूता, कस्तूरी एवं स्वर्णादि के दान से शनिपीड़ा दूर होवे।

६. **रत्न** - नीलम, कटैला या लाजवर्त्त धारण करें।

॥ श्रीशनि अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः।
ॐ शं शान्ताय नमः।
ॐ शं सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः।
ॐ शं शरण्याय नमः।
ॐ शं वरेण्याय नमः।
ॐ शं सर्वेशाय नमः।
ॐ शं सैन्याय नमः।
ॐ शं सुर वन्द्याय नमः।
ॐ शं सुरलोक विहारिणे नमः।
ॐ शं सुखासनोपविष्टाय नमः।
ॐ शं सुन्दराय नमः।
ॐ शं घनाय नमः।
ॐ शं घनरूपाय नमः।
ॐ शं घनाभरणधारिणे नमः।
ॐ शं खद्योताय नमः।
ॐ शं मन्दाय नमः।
ॐ शं मन्दचेष्टाय नमः।
ॐ शं महनीयगुणात्मने नमः।
ॐ शं मर्त्यपावनपादाय नमः।
ॐ शं महेशाय नमः।
ॐ शं छायापुत्राय नमः।
ॐ शं शर्वाय नमः।
ॐ शं शततूणीर धारिणे नमः।
ॐ शं शुष्काय नमः।
ॐ शं चरस्थिरस्वभावाय नमः।
ॐ शं चञ्चलाय नमः।
ॐ शं नीलवर्णाय नमः।
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं नीलाञ्जननिभाय नमः।
ॐ शं नीलाम्बरविभूषाय नमः।
ॐ शं निश्चलाय नमः।
ॐ शं वेद्याय नमः।
ॐ शं विधिरूपाय नमः।
ॐ शं विरोधाधारभूमये नमः।

ॐ शं वेदास्वादस्वभावाय नमः।
ॐ शं वज्रदेहाय नमः।
ॐ शं वैराग्यदाय नमः।
ॐ शं वीराय नमः।
ॐ शं वीतरोगभयाय नमः।
ॐ शं विपत्परं परेशाय नमः।
ॐ शं विश्ववन्द्याय नमः।
ॐ शं गृध्रवाहनाय नमः।
ॐ शं गूढाय नमः।
ॐ शं कर्माङ्गाय नमः।
ॐ शं कुरूपिणे नमः।
ॐ शं कुत्सिताय नमः।
ॐ शं गुणाढ्याय नमः।
ॐ शं गोचराय नमः।
ॐ शं अविद्यामूलनाशनाय नमः।
ॐ शं विद्याऽविद्यास्वरूपिणे नमः।
ॐ शं आयुष्यकारणाय नमः।
ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः।
ॐ शं विष्णुभक्ताय नमः।
ॐ शं वशिने नमः।
ॐ शं विविधागमवेदिने नमः।
ॐ शं विधिस्तुत्याय नमः।
ॐ शं वन्द्याय नमः।
ॐ शं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ शं वरिष्ठाय नमः।

ॐ शं गरिष्ठाय नमः।
ॐ शं वज्रांकुशधराय नमः।
ॐ शं वरदाय नमः।
ॐ शं अभयहस्ताय नमः।
ॐ शं वामनाय नमः।
ॐ शं ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः।
ॐ शं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शं मितभाषिणे नमः।
ॐ शं कष्टौघनाशिने नमः।
ॐ शं आर्यपुष्टिदाय नमः।
ॐ शं स्तुत्याय नमः।
ॐ शं स्तोत्रकामाय नमः।
ॐ शं भक्तिवश्याय नमः।
ॐ शं भानवे नमः।
ॐ शं भानुपुत्राय नमः।
ॐ शं भव्याय नमः।
ॐ शं पावनाय नमः।
ॐ शं धनुर्मण्डलसंस्थिताय नमः।
ॐ शं धनदाय नमः।
ॐ शं धनुष्मते नमः।
ॐ शं तनुप्रकाशदेहाय नमः।
ॐ शं तामसाय नमः।
ॐ शं अशेषजनवन्द्याय नमः।
ॐ शं विशेषफलदायिने नमः।
ॐ शं वशीकृतजनेशाय नमः।

ॐ शं पशूनां पतये नमः।
ॐ शं खेचराय नमः।
ॐ शं घननीलाम्बराय नमः।
ॐ शं काठिन्यमानसाय नमः।
ॐ शं आर्यगणस्तुताय नमः।
ॐ शं नीलच्छत्राय नमः।
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं निर्गुणाय नमः।
ॐ शं गुणात्मने नमः।
ॐ शं निरामयाय नमः।
ॐ शं निन्द्याय नमः।
ॐ शं वन्दनीयाय नमः।
ॐ शं धीराय नमः।
ॐ शं दिव्यदेहाय नमः।
ॐ शं दीनार्तिहरणाय नमः।
ॐ शं दैन्यनाशनाय नमः।
ॐ शं आर्यजनगण्याय नमः।
ॐ शं क्रूराय नमः।
ॐ शं क्रूरचेष्टाय नमः।
ॐ शं कामक्रोधकराय नमः।
ॐ शं कलत्रपुत्रशत्रुत्व कारणाय नमः।
ॐ शं परितोषितभक्ताय नमः।
ॐ शं परभीतिहराय नमः।
ॐ शं भक्तसङ्घमनोभीष्टफलदाय नमः।

॥ इति श्रीशनि अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ श्री राहुतन्त्रम् ॥

॥ अथ राहुवैदिकमन्त्रप्रयोगः॥

राहुमंत्रः- ॐ कयां नश्चित्रऽआभुवदूतीसदाव्वृधःसखा कयाशचिष्ठ यावृता ॥८ ॥

विनियोगः- ॐ कयान इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्रीछन्दः। राहुर्देवता। कयान इति बीजम्। शचिरिति शक्तिः। राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादि न्यासः- ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि ॥१ ॥ ओं गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२ ॥ ओं राहुदेवतायै नमः हृदये ॥३ ॥ ओं कयान इति बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ ओं शचिरिति शक्तये नमः पादयोः ॥५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- ओं कयान इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥१ ॥ ओं चित्र इति तर्जनीभ्यां नमः ॥२ ॥ ओं आभुव इति मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ दूतीसदावृध इत्यनामिकाभ्यां नमः ॥४ ॥ ॐ सखाकया इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५ ॥ ॐ शचिष्ठयावृता इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादि न्यास- ॐ कयान इति हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ चित्र इति शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ आभुव इति शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ दूतीसदावृध इति कवचाय हुं ॥४॥ ॐ सखाकया इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ शचिष्ठयावृता इत्यस्त्राय फट् ॥६ ॥

मंत्रन्यास- ॐ कया शिरसि ॥१ ॥ ॐ न इति ललाटे ॥२ ॥ ॐ चित्र मुखे ॥३ ॥ ॐ आभुव दूती नाभौ ॥४॥ ॐ सदावृधः कट्याम् ॥५ ॥ ॐ सखा ऊर्वोः ॥६ ॥ ॐ कया जानुनोः ॥७ ॥ ॐ शचिष्ठया गुल्फयोः ॥८ ॥ ॐ वृता पादयोः ॥९ ॥ इति मन्त्रन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्–

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी करालवाक्त्रः करवलशूली ।
चतुर्भुजश्चर्मधरश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोस्तु मह्यम् ॥१ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्य्यात्।

राहोरष्टादशैव तु १८००० इति दूर्वासमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

अथ दानद्रव्याणि–

गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलाममलकंबलं च ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ॥१ ॥

॥ इति राहुमन्त्रजपप्रयोगः ॥

॥ राहु तांत्रिक मंत्राः ॥

१ षडक्षर मंत्रः– रां राहवे नमः।

इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा। छन्द गायत्री। देवता राहु। है।

२ सप्ताक्षर मंत्रः– ॐ गं राहवे नमः।

ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। देवता राहु। बीज रां। शक्ति त्वेशः।

ध्यानम्–

वन्दे राहुं धूम्रवर्ण अर्धकायं कृताञ्जलिम् ।
विकृत्यास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ॥

दशाक्षर मंत्र– ॐ सां सीं सौं रां राहवे स्वाहा।

अन्यच्च– ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

यंत्रार्चनम्– षटकोण एवं भूपूर युक्त यंत्र बनाये।

प्रथमावरणम्– ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। ॐ रूं शिखायै वषट्। ॐ रैं कवचाय हुं। ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रः अस्त्राय फट्।
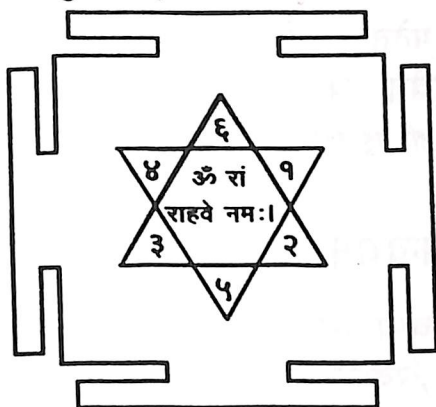
द्वितीवारणम्- भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का एवं **तृतीयावरणम्** में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

मंत्र का पुरश्चरण करके दूर्वा से होम करें।

॥ श्रीराहु पञ्चविंशति नाम स्तोत्रम्॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री राहु पंचविंशन्नाम-स्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री राहुर्देवता, श्री राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः - शिरसि वामदेव ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि श्रीराहुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

राहुर्दानवमंत्री च सिंहिका चित्त नंदनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्य-विमर्दनः॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रितः।
विधुन्तुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः॥
ग्रहपीड़ाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।

॥ फलश्रुति ॥

पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥
यः पठेन् महतीं पीडां तस्य नश्यति निश्चितम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥

ददाति राहुस्तस्मै यः पठेत् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
सततं पठते यस्तु जीवेत् वर्ष शतं नरः ॥

॥ श्री स्कन्द पुराणे श्री राहु स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीराहु कवचम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीराहु कवचस्य चन्द्रमा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीराहुर्देवता, राँ बीजं, नमः शक्तिः, स्वाहा कीलकं, श्रीराहु प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि चन्द्रमा ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीराहु देवतायै नमः। गुह्ये राँ बीजाय नमः। पादयोः नमः शक्तये नमः। नाभौ स्वाहा कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहु प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

मन्त्रः	करन्यास	षडङ्गन्यास
राँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
रीँ	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
रूँ	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम् ।
सैंहिकेयं करालास्यं लोकानामभयङ्करम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

नीलाम्बरः शिरः पातु ललाटं लोक वन्दितः ।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्द्धशरीरवान् ॥
नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम ।
जिह्वा मे सिंहिकासूनुः कण्ठं मे कंठिनाङ्घ्रिकः ॥

भुजङ्गेशो भुजौ पातु नील माल्याम्बरः करौ ।
पातु वक्षस्थलं मन्त्री पातु कुक्षिं विधुन्तुदः ॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मे सुरपूजितः ।
स्वभानुर्जानुनी पातु जङ्घे मे पातु जाड्यहा ॥
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु नीलश्चन्दन भूषणः ॥

॥ फलश्रुति ॥

राहोरिदं कवचमृद्धिदं वस्तुदं यो भक्त्या
पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन् ।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्य-
मात्मविजयं च हि तत् प्रसादात् ॥

॥ इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वे श्रीराहुकवचम् ॥

॥ राहुशान्ति प्रयोगः॥

रोगलक्षण -

वातरोग, हिचकी, शिर:शूल, अतिसार, प्रदर, अम्लीय विकार, मूर्छा, मन्दबुद्धि, आलस्य, अविवेक, हकलाना, हाथ पैरों में कमजोरी, नशे की आदत, जुआ सट्टा प्रवृत्ति, राजनैतिक असफलता, चरित्रहीनता, धोखा, चोरी, अपयश, व अनेक विघ्न राहु के कारण होते हैं।

उपचार -

१. राहुयंत्र को बुधवार या शनिवार को एवं आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा नक्षत्रों में पूजन कर धारण करें।

२. श्वेतचन्दन की माला धारण करें। श्वेतचन्दन का प्रयोग करें। स्फटिक के शिवलिङ्ग का पूजन शुभ रहे।

३. लोध्रफूल, भुजेहुये तिल, मोती, गजमद, कस्तूरी, इत्यादि के स्नान से राहु पीड़ा दूर होवे।

गुग्गल, हींग, हरताल, मन:शिला, बिनौला, को लोहपात्र में भिगायें, महिषशृंग या लौहपात्र से स्नान करने से राहुपीड़ा दूर होवे।

४. **दान** - अभ्रक, लोहा, सीसाकत्तीर, कांस्य, तिल, नीलावस्त्र, ऊन, छाग, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, कालापुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा एवं खड्ग के दान से राहु पीड़ा दूर होवे।

५. **रत्न** - गोमेद, एपीटाइट स्टोन को धारण करना शुभ रहें।

॥ श्रीराहु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ रां राहवे नमः।
ॐ रां सैंहिकेयाय नमः।
ॐ रां विदुतुन्दाय नमः।
ॐ रां सुरशत्रवे नमः।
ॐ रां तमसे नमः।
ॐ रां प्रणये नमः।
ॐ रां गार्ग्याननाय नमः।
ॐ रां सुरागवे नमः।
ॐ रां नीलजीमूतसङ्काशाय नमः।
ॐ रां चतुर्भुजाय नमः।
ॐ रां खड्गखेटकधारिणे नमः।
ॐ रां वरदायकहस्ताय नमः।
ॐ रां शूलायुधाय नमः।
ॐ रां मेघवर्णाय नमः।
ॐ रां कृष्णध्वजपताकवते नमः।
ॐ रां दक्षिणाशामुखस्थाय नमः।
ॐ रां तीक्ष्णदंष्ट्राकराय नमः।
ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः।
ॐ रां गोमेदाभरणप्रियाय नमः।
ॐ रां माषप्रियाय नमः।
ॐ रां काश्यपर्षिनन्दनाय नमः।
ॐ रां भुजगेश्वराय नमः।
ॐ रां उल्कापातयित्रे नमः।
ॐ रां शूलनिधिपाय नमः।
ॐ रां कृष्णसर्पराज्ञे नमः।
ॐ रां वृषत्वराव्रतास्याय नमः।
ॐ रां अर्धशरीराय नमः।
ॐ रां जाड्यप्रदाय नमः।
ॐ रां रवीन्दुभीकराय नमः।
ॐ रां छायास्वरूपिणे नमः।
ॐ रां कठिनाङ्गाय नमः।
ॐ रां द्विषचक्रभेदकाय नमः।
ॐ रां करालास्याय नमः।
ॐ रां भयङ्कराय नमः।
ॐ रां क्रूरकर्मणे नमः।
ॐ रां तमोरूपाय नमः।
ॐ रां श्यामात्मने नमः।
ॐ रां नीललोहिताय नमः।

ॐ रां किरीटिने नमः।
ॐ रां नीलवसनाय नमः।
ॐ रां शनिसामन्त वर्त्मगाय नमः।
ॐ रां चाण्डालवर्णाय नमः।
ॐ रां आत्मर्क्षभवाय नमः।
ॐ रां मेषभवाय नमः।
ॐ रां शनिवत् फलदाय नमः।
ॐ रां शूलाय नमः।
ॐ रां अपसव्यगतये नमः।
ॐ रां उपरागकराय नमः।
ॐ रां सूर्येन्दुच्छविह्लादकराय नमः।
ॐ रां नीलपुष्पविहाराय नमः।
ॐ रां ग्रहश्रेष्ठायनमः।
ॐ रां अष्टमग्रहाय नमः।
ॐ रां कबन्धमात्रदेहाय नमः।
ॐ रां यातुधानकुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां गोविन्दवरपात्राय नमः।
ॐ रां देवजातिप्रविष्टकाय नमः।
ॐ रां क्रूराय नमः।
ॐ रां घोराय नमः।
ॐ रां शनेर्मित्राय नमः।
ॐ रां शुक्रमित्राय नमः।
ॐ रां अगोचराय नमः।
ॐ रां मौनये नमः।
ॐ रां गङ्गास्नानदात्रे नमः।

ॐ रां स्वगृहे भूबलाद्याय नमः।
ॐ रां स्वगृहेऽन्येबलहते नमः।
ॐ रां मातामहकारकाय नमः।
ॐ रां चन्द्रयुतचाण्डाल-
जन्मसूचकाय नमः।
ॐ रां जन्मसिंहाय नमः।
ॐ रां राज्यदात्रे नमः।
ॐ रां महाकायाय नमः।
ॐ रां जन्मकर्त्रे नमः।
ॐ रां राज्यधात्रे नमः।
ॐ रां मत्तकाज्ञानदाय नमः।
ॐ रां जन्मकान्याराज्यदात्रे नमः।
ॐ रां जन्महानिदाय नमः।
ॐ रां नवमे पित्ररोगाय नमः।
ॐ रां पञ्चमेशोकदायकाय नमः।
ॐ रां द्यूने कलत्रहन्त्रे नमः।
ॐ रां सप्तमे कलहप्रदाय नमः।
ॐ रां षष्ठे वित्तदात्रे नमः।
ॐ रां चतुर्थे वैरदात्रे नमः।
ॐ रां नवमे पापदात्रे नमः।
ॐ रां दशमेशोकदात्रे नमः।
ॐ रां आदौ यशः प्रदात्रे नमः।
ॐ रां अन्ते वैरप्रदात्रे नमः।
ॐ रां कलात्मने नमः।
ॐ रां गोचराचराय नमः।

ॐ रां धने ककुत्प्रदाय नमः।

ॐ रां पञ्चमे दृषद् श्रृङ्गदाय नमः।

ॐ रां स्वर्भानवे नमः।

ॐ रां बलिने नमः।

ॐ रां महासौख्यप्रदात्रे नमः।

ॐ रां चन्द्रवैरिणे नमः।

ॐ रां शाश्वताय नमः।

ॐ रां सूरशत्रवे नमः।

ॐ रां पापग्रहाय नमः।

ॐ रां पूज्यकाय नमः।

ॐ रां पाठीरपुरनाथाय नमः।

ॐ रां पैठीनसकुलोद्भवाय नमः।

ॐ रां भक्तरक्षाय नमः।

ॐ रां राहुमूर्तये नमः।

ॐ रां सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।

ॐ रां दीर्घाय नमः।

ॐ रां कृष्णाय नमः।

ॐ रां अशिरसे नमः।

ॐ रां विष्णुनेत्रारये नमः।

ॐ रां देवाय नमः।

ॐ रां दानवाय नमः।

॥ इति श्रीराहु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ श्री केतुतन्त्रम् ॥

॥ अथ केतु वैदिकमंत्रप्रयोग:॥

मंत्र:-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथा ॥१ ॥

विनियोग:- केतुं कृण्वन्निति मंत्रस्य मधुऋषि:। गायत्री छंद:। केतुर्देवता। अपेशसे इति बीजम्। मर्य्या शक्ति:। केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास:-ॐ मधु ऋषये नम: शिरसि ॥१ ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नम: मुखे ॥२ ॥ ॐ केतुदेवतायै नम: हृदये ॥३ ॥ ॐ अपेशसे इति बीजाय नम: गुह्ये ॥४ ॥ मर्य्याशक्तये नम: पादयो: ॥५ ॥ विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ केतुंकृण्वन् इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नम: ॥१ ॥ ॐ अ केतवे इति तर्जनीभ्यां नम: ॥२ ॥ ॐ पेशोमर्य्या इति मध्यमाभ्यां नम: ॥३ ॥ ॐ अपेशसे अनामिकाभ्यां नम: ॥४ ॥ ॐ समुषद्भि: कनिष्ठिकाभ्यां नम: ॥५ ॥ ॐ अजायथा: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: ॥६ ॥ इति करन्यास:।

हृदयादिन्यास- ॐ केतुंकृण्वन्निति हृदयाय नम: ॥१ ॥ ॐ अकेतवे शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ पेशोमर्य्या शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ अपेशसे कवचाय हुं ॥४ ॥ ॐ समुषद्भिर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ अजायथा इत्यस्त्राय फट् ॥६ ॥ इति हृदयादिन्यास:।

मंत्रन्यास- ॐ केतुं शिरसि ॥१ ॥ ॐ कृण्वन् ललाटे ॥२ ॥ ॐ अकेतवे मुखे ॥३ ॥ ॐ पेशो हृदये ॥४ ॥ ॐ मर्य्या नाभौ ॥ ॥५ ॥ ॐ अपेशसे कट्याम् ॥६ ॥ ॐ समूर्वो: ॥७ ॥ ॐ उषद्भिर्जानुनो: ॥८ ॥ ॐ अजायथा:

पादयोः ॥१॥ इति मंत्रन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्–

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाभृद्गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
किरीटकेयूर विभूषितांबरः सदास्तु मे केतुगणः प्रशांतः ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

केतोः सप्त सहस्त्राणि ७००० जपसंख्या प्रकीर्तिता॥ ततो जपान्ते कुशसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः॥ अन्यत्सर्वं पूर्ववत्॥

अथ दानद्रव्याणि-

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलं चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोश्छागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥

॥ इति केतु मंत्र जप प्रयोगः ॥

॥ केतु तान्त्रिकमंत्राः॥

षडक्षर मंत्रः- कं केतवे नमः।

सप्ताक्षर मंत्रः- ॐ कें केतवे नमः।

दोनो मंत्रो के ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। षडक्षर के बीज एवं शक्ति कं है।

ध्यानम्–

वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्र विभूषणम् ।
वामोरू-न्यस्त-तद्धस्तं साभयेतर-पाणिकम् ॥

दशाक्षर मंत्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं कं केतवे स्वाहा।

अन्यच्च- ॐ स्त्रां स्त्रीं सौं सः केतवे नमः।

यंत्रार्चनम्- षट्कोण एवं भूपूर युक्त बनावें।

प्रथमावरणम् (षट्कोणे)- ॐ कां हृदयाय नमः। ॐ कीं शिरसे स्वाहा। ॐ कूं शिखायै वषट्। ॐ कैं कवचाय हुं। ॐ कौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कः अस्त्राय फट्।
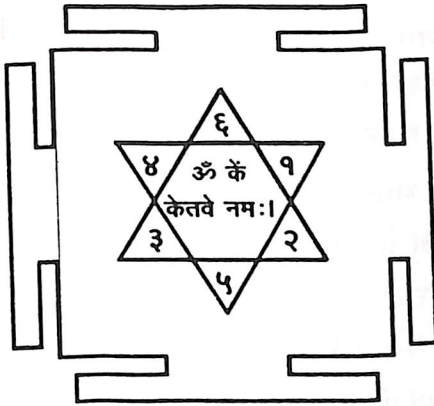
द्वितीयावरणम्- भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों एवं तृतीयावरणम् में उनके आयुधों का पूजन करें।

मंत्रो का पुरश्चरण करके कुशों से होम करें।

॥ श्री केतु विंशतिनाम स्तोत्रम्॥

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः ।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक्।
पलाशपुष्पसंकाशः चित्रयज्ञोपवीतधृक् ॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ।

॥ फलश्रुति ॥

एतद् विंशति नामानि केतोर्यः सततं पठेत् ।
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाः केतु-प्रसादतः ॥
धनधान्यपशूनां च भवेत् वृद्धिर्न संशयः ॥

(इति श्री स्कन्द पुराणे श्रीकेतोर्विंशति नाम स्तोत्रम् संपूर्णम्)

॥ श्री केतु कवचम्॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री केतु कवचस्य त्र्यम्बक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकेतुर्देवता, श्रीकेतु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- शिरसि त्र्यंबकऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीकेतुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीकेतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

...क शिखिने नमः।

ध्यानम्—

क्रूरं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम् ।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम् ॥
चित्रवर्णं शिरः पातु भालं धूम्र समद्युतिः ।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्त लोचनः ॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः ।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः ॥
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः ।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महाऽसुरः ॥
उरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽति कोपनः ।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गं नरपिङ्गलः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम् ।
शत्रु विनाशं भूतानां शमनं सर्व सिद्धिदम् ॥
बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ।
तत् सर्वं भवेत्तस्य कवचस्य च धारणात् ॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

(श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्रीकेतु कवचम्)

॥ केतुशान्ति प्रयोगः ॥

रोगलक्षण -

चर्मरोग, हड्डियों की पीड़ा विकार, वातव्याधि, श्वास, कृमिरोग, अनिद्रा, फोड़ा फुंसी, रक्तविकार, चेचक, गर्भपात्, शिशुदौर्बल्यता, आपरेशन योग, दांत की पीड़ा, शस्त्राघात्, दुर्घटना, शत्रुबाधा साधना के विघ्न केतु के कारण होते हैं।

उपचार -

१. केतुयंत्र को बुधवार के दिन या अश्विनी, मघा एवं मूलनक्षत्रों में पूजन कर धारण क

२. अश्वगंधा की जड़ को पूजन कर धारण करें।

३. सूअर के द्वारा खोदी गई मिट्टी, पर्वत की मिट्टी, बकरी का दूध ये सब एक लौह पात्र में भिगो देवें। शनिवार या बुधवार को शाम को स्नान करें।

देवदारु, सरसों तथा लोबान उबाल कर स्नान करने से अनिष्ट दूर होवे।

४. **दान** - कस्तूरी, तिल, छाग, कालावस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैडूर्य, लहसुनियां, फिरोजा, कालापुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा एवं शस्त्र का दान करना चाहिये।

५. **रत्न** - लहसुनिया, फिरोजा, वैडूर्य धारण करें।

॥ श्रीकेतु अष्टोत्तरशत नामावलि ॥

ॐ कें केतवे नमः।
ॐ कें स्थूलशिरसे नमः।
ॐ कें शिरोमात्राय नमः।
ॐ कें ध्वजाकृतये नमः।
ॐ कें नवग्रहयुताय नमः।
ॐ कें सिंहिकागर्भसम्भवाय नमः।
ॐ कें महाभीतिकराय नमः।
ॐ कें चित्रवर्णाय नमः।
ॐ कें पिङ्गलाय नमः।
ॐ कें फलधूम्रसङ्काशाय नमः।
ॐ कें तीक्ष्णदंष्ट्राय नमः।
ॐ कें महोरगाय नमः।
ॐ कें रक्तनेत्राय नमः।
ॐ कें चित्रकारिणे नमः।
ॐ कें महासुराय नमः।
ॐ कें तीव्रकोपाय नमः।
ॐ कें पापकण्टकाय नमः।
ॐ कें क्रोधनिधये नमः।
ॐ कें छायाग्रहविशेषकाय नमः।
ॐ कें अन्त्यग्रहाय नमः।
ॐ कें महाशीर्षाय नमः।
ॐ कें सूर्यारये नमः।
ॐ कें पुष्पवत्ग्रहिणे नमः।
ॐ कें वरहस्ताय नमः।
ॐ कें गदापाणये नमः।
ॐ कें चित्रशुभ्रधराय नमः।
ॐ कें चित्रध्वजपताकाय नमः।
ॐ कें घोराय नमः।
ॐ कें चित्ररथाय नमः।
ॐ कें शिखिने नमः।

ॐ कें कुलुत्थभक्षकाय नमः।
ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः।
ॐ कें उत्पातजनकाय नमः।
ॐ कें शुक्रमित्राय नमः।
ॐ कें मन्दसखाय नमः।
ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः।
ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः।
ॐ कें ईश्वराय नमः।
ॐ कें जैमिनिगोत्रजाय नमः।
ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः।
ॐ कें दक्षिण-मुखाय नमः।
ॐ कें मुकुन्दवरपात्राय नमः।
ॐ कें असुरकुलोद्भवाय नमः।
ॐ कें घनवर्णाय नमः।
ॐ कें लम्बदेहाय नमः।
ॐ कें मृत्युपुत्राय नमः।
ॐ कें उत्पातरूपधराय नमः।
ॐ कें अदृश्याय नमः।
ॐ कें कालाग्निसन्निभाय नमः।
ॐ कें नरपीठकाय नमः।
ॐ कें ग्रहकारिणे नमः।
ॐ कें सर्वोपद्रवकारकाय नमः।
ॐ कें चित्रप्रसूताय नमः।
ॐ कें अनलाय नमः।
ॐ कें सर्वव्याधिनाशनाय नमः।

ॐ कें अपसव्यप्रचारिणे नमः।
ॐ कें नवमे पापदाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे शोकदाय नमः।
ॐ कें उपराग-गोचराय नमः।
ॐ कें पुरुषकर्मणे नमः।
ॐ कें तुरीये सुखप्रदाय नमः।
ॐ कें तृतीये वैरदाय नमः।
ॐ कें पापग्रहाय नमः।
ॐ कें स्फोटकारकाय नमः।
ॐ कें प्राणनाथाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे श्रमकारकाय नमः।
ॐ कें द्वितीयेस्फुटवाक्दात्रे नमः।
ॐ कें विषाकुलितवक्त्रकाय नमः।
ॐ कें कामरूपिणे नमः।
ॐ कें सिंहदन्ताय नमः।
ॐ कें सत्येऽप्यनृतवते नमः।
ॐ कें चतुर्थेमातृनाशनाय नमः।
ॐ कें नवमे पितृनाशनाय नमः।
ॐ कें अन्ते वैरप्रदाय नमः।
ॐ कें सुतानन्दनबन्धकाय नमः।
ॐ कें सर्पाक्षिजाताय नमः।
ॐ कें अनङ्गाय नमः।
ॐ कें कर्मराश्युद्भवाय नमः।
ॐ कें उपान्ते कीर्तिदाय नमः।
ॐ कें सप्तमे कलहप्रियाय नमः।

ॐ कें अष्टमे व्याधिकर्त्रे नमः।
ॐ कें धने बहुसुखप्रदाय नमः।
ॐ कें जनने रोगदाय नमः।
ॐ कें ऊर्ध्वमूर्धजाय नमः।
ॐ कें ग्रहनायकाय नमः।
ॐ कें पापदृष्टये नमः।
ॐ कें खेचराय नमः।
ॐ कें शाम्भवाय नमः।
ॐ कें अशेषजनपूजिताय नमः।
ॐ कें शाश्वताय नमः।
ॐ कें नटाय नमः।
ॐ कें शुभाशुभफलप्रदाय नमः।
ॐ कें धूम्राय नमः।
ॐ कें सुधापायिने नमः।
ॐ कें अजिताय नमः।
ॐ कें भक्तवत्सलाय नमः।
ॐ कें सिंहासनाय नमः।
ॐ कें केतु मूर्तये नमः।
ॐ कें रवीन्दु द्युति नाशकाय नमः।
ॐ कें अमराय नमः।
ॐ कें पीडकाय नमः।
ॐ कें अमर्त्याय नमः।
ॐ कें विष्णु दृष्टाय नमः।
ॐ कें असुरेश्वराय नमः।
ॐ कें भक्तरक्षाय नमः।
ॐ कें वैचित्र्यकपोतस्यन्दनाय नमः।
ॐ कें विचित्रफलदायिने नमः।
ॐ कें भक्ताभीष्टफलप्रदाय नमः।

॥ इति श्रीकेतु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

॥ श्री नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्रम् ॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः ॥
रोहिणीशः सुधामूर्त्तिः सुधागात्रः सुधाशऽनः ।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्त्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः ॥
देवमंत्री विशालाक्षः सदालोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसम्पूर्णो पीडां हरतु मे गुरुः ॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः ॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्द चारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः ॥
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुश्चोर्ध्व-केशश्च, पीडां हरतु मे शिखिः ॥
अनेकरूप-वर्णैश्च, शतशोऽथ सहस्त्रशः ।
उत्पात-रूपो जगतां, पीडां हरतु मे केतुः ॥

(ब्रह्माण्ड पुराणे नवग्रह पीडाहर स्तोत्रम्)

॥ नवग्रह कवचम् ॥

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः ।
मुखमङ्गारकः पातु कण्ठं च शशिनन्दनः ॥१॥
बुद्धिं जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः ।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः ॥२॥

पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च ।
तिथयोऽष्टौ दिशः पातु न क्षत्राणि वपुः सदा ॥३॥
अंशौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च ।

॥ फलश्रुति ॥

सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत् ।
रोगात् प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्येत बन्धनात् ॥१॥
श्रियं च लभते नित्यमरिष्टिस्तस्य न जायते ।
यः करे धारयेन्नित्यं तस्य रिष्टिर्न जायते ॥२॥
पठनात् कवचस्यास्य सर्व पापात् प्रमुच्यते ।
मृतवत्सां च या नारी काकवन्ध्या च या भवेत् ॥३॥
जीववत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः ।
एतां रक्षां पठेद् यस्तु अङ्गं स्पृष्ट्वाऽपि वा पठेत् ॥४॥

॥ नवग्रह स्तोत्रम् ॥

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं ।
तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवं ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट-भूषणम् ॥
धरणीगर्भ-सम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभं ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियङ्गु कलिका श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधं ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन संन्निभं ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुं ।
सर्वशास्त्र-प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

नीलांज्जन-समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं ।
छायामार्त्तण्ड-सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनं ।
सिंहिका गर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्प-संकाशं तारकाग्रह मस्तकं ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
आदित्याय च सोमाय मङ्गलाय बुधाय च ।
गुरु शुक्र-शनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः ॥

॥ नवग्रह गायत्री मंत्रा:॥

सूर्य - ॐ आदित्याय विद्महे प्रभकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
चन्द्र -ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।
भौम-ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नः भौमः प्रचोदयात्।
बुध - ॐ सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।
गुरु - ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नौ जीवः प्रचोदयात्।
शुक्र - ॐ भृगुराज विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नौ शुक्रः प्रचोदयात्।
शनि - ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नौ शनिः प्रचोदयात्।
राहु - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौ राहुः प्रचोदयात्।
केतु - ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौ केतुः प्रचोदयात्।

॥ नवग्रह नमस्कार मंत्रा:॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां दहतु मे रवि ॥१॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां दहतु मे विधुः ॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा ।
वृष्टिकृद्-वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः ॥३॥
उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान पीडां दहतु मे बुधः ॥४॥
देवमंत्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः ।
अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः ॥५॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महाद्युति ।
प्रभुस्ताराग्रहणां च पीडां दहतु मे भृगुः ॥६॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः ॥७॥
महाशीर्षो महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशः ।
अनुश्चोर्ध्व-केशश्च पीडां दहतु मे तमः ॥८॥
अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः ।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखीः ॥९॥

॥ नवग्रह मातृका मंत्राः॥

सूर्यादि ग्रहों की पिङ्गलादि नौ माताएँ प्रसिद्ध है। जिनकी उपासना से ग्रहों का दुष्प्रभाव दूर हो जाता है। 'मेरु तंत्र' में उनके नाम निम्न श्लोकों में वर्णित किये गये है।

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा ।
उल्का सिद्धा सङ्कटा च विकटा गर्भपालिका ॥

१. त्रयोदशाक्षरा सूर्य जननी (पिङ्गला) मंत्रोद्धार- क्षें बीजं तु समुच्चार्य पिङ्गले वैरिवारणि, प्रसीद फडिति प्रोच्याणुस्त्रयोदश-वर्णकः ।

अथ मन्त्रः- क्षें पिङ्गले वैरिवारणि प्रसीद फट् ।

क्षां क्षीं इत्यादि से षडंगन्यास कर ध्यान करें-

ध्यानम्—

पिङ्गवर्णां पिङ्गकेशीं पिङ्गनेत्रां धनुः शरान् ।
हस्ताभ्यां दधतीं पद्मयुगलं तां भजाम्यहम् ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर उतना ही तर्पण करें।

२. एकादशाक्षरा चन्द्र माता (मङ्गला) मंत्रौद्धार-मायाद्यो वह्नि जायन्तो मङ्गले मङ्गलालये, एकादशाक्षरो मंत्रो मङ्गलायाः प्रकीर्तितः।

अथ मन्त्रः- ह्रीं मङ्गले मङ्गलालये स्वाहा।

ह्रा, ह्रीं इत्यादि से षडंगन्यास कर ध्यान करें-

ध्यानम्–

मंगलांसु - त्रिनयनामुद्यदादित्य - सन्निभां,
दरस्मेरमुखाम्भोजां सिन्दूर-सुन्दराधम् ।
पद्मद्वये धनुर्वाणान् दधतीं भुज पल्लवैः,
सुगुञ्जन्मंजु-मञ्जीरां कांचीगुण विराजिताम् ॥

३. षोडशाक्षरा भौम मातृका (भ्रामरी) मंत्रौद्धार-क्षीं भ्रामरी पदं चोक्त्वा सपत्नान् मे अधीश्वरि, भ्रामय क्लीं षड्दशार्णो।

अथ मन्त्रः- क्षीं भ्रामरी सपत्नान् मे अधीश्वरि भ्रामय क्लीं।

उपरोक्त मंत्र का विधान पिङ्गला के समान ही है।

४. त्रयोविंशत्यक्षरा बुध मातृका 'भद्रिका'- मंत्रौद्धार- व्लं बीजं तोय-भू-योगाज्जातमादौ समुच्चरेत्, भद्रिके मम भद्रं देहीत्येवं पदं वदेत्। पुनश्च परभद्राणि नाशय द्वितयं ततः, स्वाहान्तो जिन-वर्णोऽयं।

अथ मन्त्रः- व्लं भद्रिके मम भद्रं देहि परभद्राणि नाशय नाशय स्वाहा।

व्लां, व्लीं इत्यादि से षडंगन्यास करें एवं इस मंत्र का ध्यान मंगला के समान ही है तथा जपादि विधान पिङ्गला के समान है।

५. अष्टाक्षरा गुरु मातृका (धान्या)-मंत्रौद्धार-श्रीं धनदे समुच्चार्य धान्ये स्वाहाष्टवर्णकः।

अथ मन्त्रः- श्रीं धनदे धान्ये स्वाहा।

श्रां, श्रीं इत्यादि से षडंगन्यास करें। गुरु मातृका धान्या सर्वसम्पदा दात्री है। इसके तीन पुरश्चरण करने से सर्वधनधान्य की वृद्धि होती है

६. षोडशाक्षरा शुक्र मातृका (सिद्धा)- मंत्रौद्धार- ह्रीं सिद्धिदे सर्वं

मम समुक्त्वा साधयद्वयं हृदन्तोऽयं षोडशार्णः।

अथ मन्त्रः- ह्रीं सिद्धिदे सर्वं मम साधय साधय नमः।

७. अष्टाक्षरा शनि मातृका (उल्का)-मंत्रौद्धार- ऐं ह्रीमुल्का पदं पश्चाद्-देव्यै हृच्चाष्टवर्णकः।

अथ मन्त्रः- ऐं ह्रीं उल्कादेव्यै नमः।

ऐं ह्रीं हृदयाय नमः, ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा इत्यादि क्रम से अंगन्यास आदि करें। यह मंत्र धन एवं आरोग्य को देने वाला है।

८. षोडशाक्षर राहु मातृका (सङ्कटा)- मंत्रौद्धार- ह्रीं सङ्कटे च रोगं मे परमं नाशयद्वयं, षोडशार्णः।

अथ मंत्रः- ह्रीं सङ्कटे रोगं मे परमं नाशय नाशय।

जेल मे बन्दी होतो इस मंत्र का १० लाख जप करने से जेल से छुटकारा मिलता है। काशी में वीरेश्वर से पूर्व सङ्कटा देवी का सिद्ध स्थान है। वहाँ १६ लाख जप कर दूर्वा से होम करे, तो मंत्र सिद्ध होता है।

९. एकविंशत्यक्षरा केतु मातृका (विकटा)- मंत्रौद्धार-तारो नमो भगवति विकटे वीरपालिके, प्रसीद युगलं मन्त्रः प्रकृत्यर्णः।

अथ मन्त्रः- ॐ नमः भगवति विकटे वीरपालिके प्रसीद प्रसीद।

इस मंत्र के प्रभाव से साधक के हाथ के स्पर्श से ग्रह-पीड़ीत बालक, माता-पिता से त्यक्त पुत्र अपने कष्टों से छुट जाते है और चिरञ्जीवी होते है, वन्ध्या स्त्री का उदर छूने से वह पुत्रवती होती है।

॥ नवग्रहों के यंत्र ॥

॥ सूर्य यन्त्रम् ॥

रसेन्दुनागा नगवाणरामा युग्माङ्कवेदा नवकोष्ठमध्ये।
विलिख्यधार्यं गदनाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीन्द्राः ॥

६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ चन्द्र यंत्रम् ॥

नागद्विनन्दा गजषट् समुद्रा शिवाक्षिदिग्वाण विलिख्यकोष्ठे ।
चन्द्रकृतारिष्ट विनाशनाय धार्यं मनुष्यैः शशियन्त्रमीरितम् ॥

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

॥ मङ्गल यंत्रम् ॥

गजाग्निदिश्याथनवाद्रिवाणा पातालरुद्रारस संविलिख्य ।
भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः ॥

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

॥ बुध यंत्रम् ॥

नवाब्धिरुद्रा दिङ्नागषष्ठा वाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे ।
विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदन्ति यंत्र शशिजस्यधीराः ॥

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

॥ बृहस्पति यंत्रम् ॥

दिग्वाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षट्विश्वनागा क्रमतोङ्कोष्ठे ।
विलिख्य धार्यं गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदन्ति तद्बुधाः ॥

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

॥ शुक्र यंत्रम् ॥

रुद्राङ्गविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्चाङ्कक्रमाद्विलेख्या ।
भृगो: कृतारिष्टविनाशनाय धार्यं हि यन्त्रं मुनिना प्रकीर्तितम् ॥

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

॥ शनि यंत्रम् ॥

अर्काद्रिमन्वा स्मर रुद्र अङ्का नागाख्यतिथ्यादश मंद यंत्रम् ।
विलिख्य भूर्जोपरिधार्य मेतच्छने: कृतारिष्ट निवारणाय ॥

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

॥ राहु यंत्रम् ॥

विश्वाष्टतिथ्यामनुसूर्यदिश्या खगामहीन्द्रैकदशांश कोष्ठे ।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं राहोकृतारिष्ट निवारणाय ॥

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

॥ केतु यंत्रम् ॥

मनुखेचरभूप तिथिविश्व शिवादिग्सप्तादशसूर्यमिता ।
क्रमशो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्यं नरा दु:खनाशकरा: ॥

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

॥ नवग्रह शान्ति यंत्रम् ॥

जिस व्यक्ति को सूर्य अशुभ हो उसे इस यंत्र को १ से लिखना प्रारम्भ करना चाहिए। फिर २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ अंको को क्रमशः यन्त्र में जो अंक जिस खाने मे दर्शाया गया है तदनुसार लिखें।

चन्द्र नेष्ट होने पर २ से प्रारम्भ करें। इसी प्रकार मंगल नेष्ट होने पर ३ से, बुध के लिए ४, गुरु के लिए ५, शुक्र के लिए ६, शनि के लिए ७, राहु के लिए ८, केतु के लिए ९, अंक से लिखना शुरु करें। परन्तु जिस खाने में जो अंक दर्शाया गया है उसी खाने में वो अंक लिखे। यंत्र में १ अंक वाले कोष्टक में **ह्रीं रवये नमः** यह अवश्य लिखें। इस यंत्र को पीपल के ७ पत्तों पर अष्टगंध या रक्तचन्दन से लिखें। तत्पश्चात् यंत्रों की विधिवत् (जो ग्रह नेष्ट हो उस मंत्र) से पूजा करके धूप दीप करके पीपल की जड़ में रखे देवें। यही विधि लगातार २८ दिन करें, ग्रहशान्ति अनुभव करेंगे।

यंत्रम्

८	१ ह्रीं रवये नमः	६
३	५	७
४	९	२
६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ कालज्ञान मृत्यु सूचक चिन्ह ॥

पुष्पं यथापूर्व रूपं फलस्येह भविष्यतः ।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्व रूपमरिष्यतः ॥
नत्वरिष्टस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते ।
मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्टपुरः सरम् ॥

अर्थात् जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है और उसके पश्चात् फल। इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरणकाल, मृत्युकाल, का परिचय मिलता है। शास्त्रों मे वर्णित बहुशः मरण चिन्हों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया गया है।

(१) निजस्य प्रतिबिम्बस्य निश्चलेषूदकादिषु ।
उत्तमांगं न पश्येत् यः षण्मासेन विनश्यति ॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखें वह व्यक्ति छः माह में मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२) करावरुद्ध श्रवणः संश्रृणोति न च ध्वनिम् ।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते ॥

हाथों के द्वारा दोनों कानों को बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है। किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है। यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे सुनाई न देवें और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए तो एक महीने में वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होगा।

(३) विधाय कर्णनिर्घोषं न श्रृणोत्यात्मसम्भवम् ।
चक्षुषोर्नश्यति ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति ॥

ऊपर कहे गये नियमानुसार हाथों से कानो के बंद करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ता है पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है। यदि किसी को कान बंद करने पर अपने मुख से कहे शब्द भी सुनाई नहीं देते हो और नेत्रों की ज्योति अकस्मात् नष्ट हो जावें तो वह मनुष्य भी नहीं बचेगा।

(४) नासिका वक्रतामेति कर्णौयातोनतिंपुनः ।
नेत्रं वाष्पं क्षरेन्द्र यस्य सगच्छेद यममन्दिरम् ॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हो और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।

(५) सुस्नातस्यापियस्याशु हृदयं परिशुष्यति ।
चरणौच करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम् ॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सुख जायें वह तीन महीने जीवित रहता है ।

(६) भाद्रेऽन्हिवासरे सूर्येछाया सूर्यस्यनिर्मलाम् ।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यः षणमासेन समृत्युभाक् ॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावें तो वह मनुष्य छः महीने जीवित रहेगा।

(७) घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः ।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासादूर्ध्वं न जीवति ॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह मनुष्य एक महिने से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

(८) यस्य वीर्य मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरम् ।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्ययुरुच्यते ॥

जिस मनुष्य को वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लेना चाहिए कि उसकी आयु एक वर्ष शेष है।

(९) मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते ।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे भ्रियते ध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य को मल, मूत्र वायु (पाद) एक साथ चलते हो तो उसकी दस दिन में मृत्यु निश्चित होगी।

(१०) मैथुने संप्रवृते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति ।
निश्चितं पंचमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत् ॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत्त होकर बीच में और अंत में छीक आये तो वह पांचवे महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवे महीने में मृत्यु होना निश्चित समझना चाहिए

(११) यस्यावैस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति ।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम् ॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जल को पीले रंग का देखें, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा।

(१२) यस्य वक्तेशवगंधो गात्रे दसनायोरपि ।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम् ॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा। अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा।

(१३) यस्यवै भुक्तमात्रस्य हृदयं वाध्यते क्षुधा ।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशयः ॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझों।

(१४) अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः ।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्ण वत्सरत्रयं ॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी।

(१५) अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः ॥

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो रात-दिन लगातार श्वास चलता रहे उसको दो वर्ष तक जीवित समझना चाहियें।

(१६) त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः ।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः ॥

यदि किसी मनुष्य के किसी एक नासिका छिंद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियो ने बताई है।

(१७) एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम् ।
बहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः ॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित होतो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

(१८) सम्पूर्ण बहते सूर्यचन्द्रमानैव दृश्यते ।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहें और एक बार भी वाम नासिका से बहता न दीखे तो एक पक्ष या १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते है।

(१९) सम्पूर्ण बहते चन्द्रः सूर्य्यो नैव च दृश्यते ।
मासेन दृष्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहें और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महिने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते है।

(२०) रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो बहेत् यस्यनिरन्तरम् ।
विजानीयास्तस्य मृत्युः षणमासाभ्यन्तरेध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चित समझना चाहिए।

(२१) अरुन्धतीं ध्रवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिर्पदानि च ।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थ मातृमण्डलम् ॥

जिस मनुष्य की आयुहीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

सूचना– यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते है, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते है, जो नहीं जानते हो वे किसी जानकार से पूछकर जान सकते है। इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है। यथा–

(२२) अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते ।
भ्रुवोर्मध्ये विष्णुपदं तारके मातृमण्डलम् ॥

अर्थात् जीभ को अरुन्धती नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भोहों के बीच का भाग विष्णु पद, और आखों का तारा मातृमण्डल कहलाते है।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे गये पदार्थो में से आँख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नही देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरो को किसी भी अंगुली से किञ्चित् दबाओं तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरीत दिशा में आँखो के मध्यवर्ती तारा की आकृति का एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृकामण्डल कहते है। यद्पि यह सदैव ऐसा करने पर दिंखाई दिया करता है। पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे यह दिखाई नहीं देता है।

(२३) दन्ताश्चदषणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते ।
तृतीये मासिचावश्यं कालग्रासो भवेन्नर ॥

जिस मनुष्य के दाँत और अण्डकोश को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नहीं होती वह तीन महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२४) मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रंयातिरुजाम्बिना ।
षण्मासेतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति ॥

जिस मनुष्य के हाथ के बीच की तीन अंगुलियां तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढी हो जाये और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी ६ महीने में निश्चित मृत्यु होगी।

(२५) वाष्पं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत् ।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति ॥

जो मनुष्य जाग्रत या निद्रितावस्था या स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चाँदी के समान देखे वह १० महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२६) मर्त्येर्लक्षित लक्षणैर्हिंसलिले भानुर्यदादश्यते ।
क्षीणोदक्षिण पश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासेकतः ॥
मध्यं छिद्रामिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने ।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम् ॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते है कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की

ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटि दीखे तो तीन महीने में, उत्तर की ओर दीखे तो दो महीने में, और पूर्व की और कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुंए के रंग देखें तो उसी दिन मृत्यु होगी।

(२७) जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गंध को अनुभव नहीं करता और रात्रि में अग्नि देखकर भयभीत मानता है वह छः महिने से अधिक जीवित नहीं रहता है।

(२८) जिसके शरीर से अग्नि की गंध आती हो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

(२९) दक्षिण की मुट्ठी बंद करके नाक की सीध में और भौहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छः महिने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देती है।

(३०) जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पाँच महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा।

(३१) जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाये उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी।

॥ कालमृत्युज्ञान का अद्‌भुत उपाय ॥

भारतवर्ष के त्रिकालदर्शी महर्षियों ने मृत्युज्ञान के कई उपाय दोष लिखें है। जैसे मुमुर्षु पुरुष को मृत्यु से ६ माह पूर्व दीप निर्वाण की गंध आना बंद हो जाती है। नित्य सप्तर्षि और ध्रुव दर्शन करने वालो को ६ माह पूर्व ध्रुव तारा दिखाई देना बंद हो जाता है। दाहिने हाथ की मुठ्ठी बाँधकर मस्तक पर रखकर आकाश की ओर ऊपर मुख करके दोनों भ्रकुटी ऊपर चढा मणिबंध को एकटक देखने पर यदि मणिबंध कटा हुआ (मुठ्ठी से अलग) या बहुत मोटा दिखाई दे तो समझना चाहिए कि ६ माह के अन्दर मृत्यु होगी। यदि मणिबंध स्थान बिल्कुल पतला दिखाई देवें तो आयु अधिक समझना चाहिए। नित्य प्रात:काल उठते ही दर्पण देखने वाले अभ्यासी पुरुष को मृत्यु से १५ दिन पूर्व दर्पण में अपना मस्तक दिखाई नहीं देता है।

॥ अथ श्रीमृत्युलांगुल स्तोत्रम् ॥

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीमृत्युलांगूल मंत्रस्यानुष्टुप् छन्दः, कालाग्निरुद्रा देवताः, वसिष्ठऋषिर्यमो देवता मृत्यूपस्थाने विनियोगः।

अथातो योग जिह्वा मधुमति वाजिन्यामेवाहं कालपुरुषमूर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं विश्वरूपाय नमो नमः । वर वृषभाय फेनकपिलरूपाय नमो नमः । पशुपतये नमो नमः । ॐ क्रां क्रीं स्वः ॥ य इदं मृत्युलांगूलं त्रिसन्ध्यं कीर्तयति स ब्रह्महत्यां व्यपोहति। स्वर्णस्तेयोऽस्त्येयि भवति, गुरुदाराभि गम्योऽगमी भवति, सर्वेभ्यः पातकेभ्यः उपपातकेभ्यश्च सद्यो विमुक्तो भवति, सकृज्जपितेन मंत्रेणानेन गायत्र्यास्त्वष्टसहस्राणि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा ब्रह्मरुद्रलोकमवाप्नोति। यः कश्चिन्न ददाति स श्वेतकुष्ठी, कुनखी भवति। यः कश्चिद्दीयमानं न गृह्णाति सोऽन्धो वधिरो भवति। मृत्यावुपस्थिते षण्मासादर्वाक् मंत्रोऽयं विस्फुरति॥ अस्य मृत्युलांगूलाख्य महामंत्रस्य सकृज्जपेन भगवान् धर्मराजो मे प्रीयताम्।

मंत्र–

ॐ ऋतं सत्यं परंब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
उर्ध्वलिगं विरूपाक्षं विश्वरूपाय नमो नमः ॥
ऋतं नष्टं यदा काले षणमासेन मरिष्यति ।
सत्यं तु पञ्चमे मासे, परंब्रह्म चतुर्थके ॥
पुरुषं तु तृतीये वै द्वितीय कृष्णपिङ्गलम् ।
उर्ध्वलिङ्गन्तु मासेन, विरूपाक्षं तदर्धके ॥
विश्वरूपं तृतीयेऽह्नि सद्यश्चैव नमो नमः ।

॥ इति श्रीमृत्युलांगूल स्तोत्रम् ॥

॥ विधानम् ॥

जिज्ञासुजन इस मृत्युलांगूल स्तोत्र का पाठ दीपमाला, ग्रहण या महाशिवरात्री आदि पर्व के दिन से प्रारंभ करें। गुरुमुख से एक बार श्रवण कर लिया जाए तो उत्तम है। अन्यथा भगवान् श्रीसदाशिव को गुरु मानकर उनकी मूर्ति या चित्र के सामने प्रथमपर्व के दिन इस स्तोत्र के ११ पाठ करें और **ऋतंसत्यं मंत्र की ११**

माला जप लेवें। पर्व के प्रथम दिन इतना ही करना है। तदुरान्त प्रतिदिन नित्यकर्म के बाद एक बार स्तोत्र पाठ करना और रात्रि को सोते समय केवल तीन बार **ऋतंसत्यं परंब्रह्म** इस पूरे मंत्र का जप करके सो जाना चाहिये। प्रतिदिन एक स्तोत्र पाठ और रात्रि को सोते समय ३ बार मंत्र का जप नियमित रूप से होता रहेगा तो ६ मास पूर्व मृत्यु का ज्ञान हो जायेगा। वह इस प्रकार कि जिस दिन मंत्र का ऋतं शब्द भली-भांति उच्चारण नही हो या इस शब्द पर जिह्वा अटक जावें तो समझ लेना चाहिए कि मृत्युदेव या धर्मराज के घर का आमंत्रण आ गया है। ६ मास के भीतर जो भी सत्कार्य और परिवार का प्रबंध करना है वह कर देना चाहिए। जिस दिन सत्यं शब्द ठीक से उच्चारित न हो या इस शब्द पर जिह्वा अटक जाये तो समझ लो कि अब मृत्यु में पाँच मास शेष है। इसी प्रकार जिस दिन परंब्रह्म शब्द ठीक से उच्चारित न हो तो समझ लेना चाहिए की अब आयु के ४ मास शेष रहे है। पुरुषं शब्द से तीन मास, कृष्णपिङ्गलं शब्द से दो मास, उर्ध्वलिङ्गं शब्द से एक मास, विरूपाक्षं शब्द से १५ दिन, विश्वरूपं शब्द से ३ दिन और नमो नमः शब्द के ठीक उच्चारण न होने से उसी दिन तत्काल मृत्यु समझना चाहिये।

॥ विभिन्न शान्तिपाठ एवं सूक्ताध्याय: ॥

॥ शान्ति पाठ ॥

यह शांतिपाठ यज्ञादि में आचार्यादिवरण समय किया जाता है।

आयु आरोग्य पुत्रादि सुख श्री प्राप्तये मम ।
आपद् विघ्न विनाशाय शत्रु बुद्धि क्षयाय च ॥
विशेष काम्य होमेन सहितं समिधादिभिः ।
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे राहुकेतु पुरः सराः ॥
ग्रह देवाधि देवश्च नक्षत्राणां सु दैवतेः ।
इन्द्रादिभिश्च दिग्पालैर्ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरः ॥
वास्तु दुर्गा गणेशैश्च क्षेत्रपालादि संयुतै ।
भूम्यंतरिक्ष देवेश्च कुल देव्यैश्च मातृभिः ॥
चतुर्भिश्च वेदेश्च रुद्रेण सहितास्तथा ।
सागरादीप पातालान्यूर्ध्व लोकाः सुरै सह ॥
पर्वता ऋषयः सर्वे गंगाद्या सरितो ध्रुवम् ।
आदित्याद्या ग्रहैर्यज्ञैर्यूयं कर्तुं प्रसीदत ॥
मम क्षेमायुरारोग्यं परम श्री सुखाप्तये ।
स बंधुं सुत भार्यस्य वांछितार्थस्य सिद्धये ॥
आधिव्याधि जरामृत्यु भयशोकापत् हूतये ।
भूतभव्य भविष्येति त्रिविधोत्पातशान्तये ॥
सर्व सौभाग्य संपत्यनिष्पत्यै अस्य कर्मणः ॥

॥ दानशान्ति स्तोत्रम् ॥

ग्रहशान्ति, होमादि, अभिषेक लक्षहोम, कोट्यादिहोम समय पर विविध दानों का उल्लेख है। *दक्षिणादान, हिरण्यदान, रत्नदान, कपिलादान, भूमिदान,*

शय्यादान, तुलादान समय पर निम्न शान्ति स्तोत्र का पाठ करें-

कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासि रोहिणि ।
तीर्थदेवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥१॥
पुण्यस्त्वं शंख पुण्यानां मंगलानां च मंगलम् ।
विष्णुना विधृतो नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥२॥
धर्म त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः ।
अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥३॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥४॥
पीतवस्त्रयुगं यस्माद् वासुदेवस्य वल्लभम् ।
प्रदानात्तस्य वै विष्णुरतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥५॥
विष्णुस्त्वमश्वरूपेण यस्मादमृतसम्भवः ।
चन्द्रार्कवाहनो नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥६॥
यस्मात्त्वं पृथिवी सर्वा धेनुः केशवसन्निभा ।
सर्वपापहरा नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥७॥
यस्मादायसकर्मणि तवाधीनानी सर्वदा ।
लांगलाद्यायुधादीनि अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥८॥
यस्मात्त्वं सर्वयज्ञानामङ्गत्वेन व्यवस्थितः ।
योनिर्विभावसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥९॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥१०॥
यस्मादशून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च ।
शय्या ममाप्यशून्यास्तु दत्ता जन्मनि जन्मनि ॥११॥
यथा रत्नेषु सर्वेषु सर्वेः देवाः प्रतिष्ठिताः ।
तथा शान्तिं प्रयच्छतु रत्नदानेन मे सुराः ॥१२॥
यथा भूमिदानस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
दानान्यन्यानि मे शान्तिर्भूमिदानाद् भवत्विह ॥१३॥

॥ ध्रुव सूक्तम् ॥

ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वेध्रुवाः पतिकुलेस्त्रियः ॥१॥
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥२॥
ध्रुवंते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पति ।
ध्रुवंत इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं ॥३॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभि सोमं भृशामसि ।
अथो त इन्द्र केवलीर्विशो बलि हृतस्करत् ॥४॥

॥ इति ध्रुवसुक्तम् ॥

॥ कुष्माण्ड सूक्तम् ॥

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि ।
पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव ॥
हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि ।
पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव ॥
उपज्मन्नुपवेतसे वतरन दीष्वा ।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिता भिरा गहिसे
मन्नो यज्ञं पावक वर्ण ँ शिवङ्कृधि ॥
अपामिदन् न्ययन ँ समुद्रस्य निवेशनम् ॥
अन्यास्ते अस्मत्तप्पंतु हेतयः पावको
अस्मभ्य ँ शिवोभव ।
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव
जिह्वया आदेवान् वक्षियक्षिच ।
सनः पावक दी दिवोग्ने देवाँ२ ँ इहावह ।
उपयज्ञ ँ हविश्चनः पावकयायश्चित

-यन्त्या कृपाक्षा मन्नुरूचउषसो न भानुना
तुर्वन्नयामन्नेत शस्यनूरण आयो
धृणेनत तृषाणो अजरः ॥७॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे अन्यांस्ते
अस्मतपंतु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवोभव ॥८॥

प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः ।
अन्यास्न अस्मतपंतु हेतयः पावको
अस्मभ्य ॐ शिवोभव ॥

(इति श्रीकुष्माण्ड सूक्तम्)

॥ श्रीसूक्तम् ॥

ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषि अग्निदेवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप छंद शेषांसा प्रसार पंक्ति त्रिष्टुप अनुष्टुप पुनः प्रसार पंक्ति छंद हिरण्य वर्णां बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृध्धि ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्धर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजातम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषाहनम् ॥२॥

अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

कांसोस्मितां हिणरय प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो ऽस्मिन्राष्ट्रे ऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातुमे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा - मलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।
अभूतिं समृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१३॥
आर्द्रां यष्करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

(कहीं कहीं पुष्टिं, सुवर्णां तथा यष्टिंपिंगलां पद्ममालिनीम् है)

॥श्रीरस्तु॥

॥ पुरुष सूक्तम् ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुष सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
सभूमिं ठं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमा तो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शना नशनेऽअभि ॥४॥
तस्माद्विराड जायत विराजो अधिपूरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥५॥
यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञ मतन्वत ।
वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजंत साध्याऋषयश्चये ॥७॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यम् ।
पशून्तांश्चक्रे वायव्या-नारण्यान्ग्राम्याश्चये ॥८॥
तस्माद्य-ज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छंदासि ठ जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत ॥९॥
तस्मादश्वा ऽअजायंत येकेचोभयादतः ।
गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाता अजावयः ॥१०॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ (किं) बाहू का उरू पादा उच्येते ॥११॥
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ॥१२॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
मुखादिन्द्रश्च अग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत ॥१३॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं ठ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥१४॥
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशम ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञमय जंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥१६॥

॥इति पौरुषसूक्तम् ॥

॥ जातवेद सूक्तम् ॥

ॐ समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयोयानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहरोचने न विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्त्रः ॥१॥
सं चेध्यस्वाग्ने प्रचबोधयै नमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
माचरिष दुपसत्ताते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तुमान्येः ॥२॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः ।
सपत्नहा नो अभिमाति जिच्चस्वेगये जागृह्य प्रयुच्छन् ॥३॥
इहैवाग्ने अधिधारया रयिं मात्वा निक्रन्पूर्व चितोनि कारिण ठं क्षत्रमग्ने ।
सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतांते अनिष्टतः ॥४॥
क्षेत्रेणाग्ने स्वायुः स ठं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहव्योदीदिहीह ॥५॥
अतिनिहो अतिस्त्रधोत्य चित्तिमत्यराति मग्ने ।
विश्वाह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्य ठं सहवीरां ७ रयिंदाः ॥६॥
अनाधृष्यो जातवेदाः अनिष्टतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ।
विश्वाआशाः प्रमुञ्चं मानुषीभिर्यः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे ॥७॥
बृहस्पते सवितः बोधयैन ठं सठं शितं चित्संतरा ७ स ठं शिशाधि ।
बुर्धयैनं महते सौभगाय विश्व एन मनु मदन्तु देवाः ॥८॥
अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभि शं स्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहता - मश्विनामृत्यु - मस्माद्देवानामग्नेभिषजा शचीभिः ॥९॥
उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म - ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥

॥ रौद्रसूक्तम् ॥

ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शम स द्विपदे शं चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥१॥
मृडानो रुद्रोतनो मयस्कृधिक्षय द्वीराय न मसाविधेमते ।
यच्छं च योश्चमनु रायजे पितातदश्याम तवरुद्र प्रणीतिषु ॥२॥
अश्यामते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तवरुद्रमीढ्वः ।
सुम्नायं निद्विशोऽअस्माकमाचरारिष्टवीरा जुहवामतेहविः ॥३॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधवं कुंकवि मवसे निह्वयामहे ।
आरे अस्मद्दैव्यं हेडो अस्यसुमतिमिद्वय मस्या वृणीमहे ॥४॥
दिवो वराह मरुषं कपर्दिन त्वेषं रूपं नमसानि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद्भेष जावा र्याणि शर्म वर्मच्छर्दि-रस्मभ्यं यंसत् ॥५॥
इदं पित्रे मरुता मुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वाचनोऽमृतमर्त भोजनंत्मने तोकाय तनयायमृड ॥६॥
मानो महन्त मुतमानोऽर्भकंमानऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् ।
मानोवधीः पितरं मोतमातरंमानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥७॥
मानस्तोक तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्रभामितो वधीर्हविष्मंतः सदमित्त्वा हवामहे ॥८॥
उपतेस्तोमान्पशुपा इवाकरं रास्वापितरर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्राहिते सुमतिर्मृड यत्तमाथा वयम व इत्ते वृणीमहे ॥९॥
आरेते गोघ्न मुत पूरुषघ्नं क्षय द्वीराय सुम्नस्मेतेऽअस्तु ।
मृडाचनो अधि च ब्रूहि देवा धाचनः शर्मयच्छ-द्विबर्हाः ॥१०॥
अवो चायनमोऽअस्मा अवस्यवः शृणोतुनोहवं रुद्रोमरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहंता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उतद्यौः ॥११॥

॥ इन्द्रसूक्तम् ॥

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान् क्रतुनापर्य भूषत् ।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्नासजना स इंद्रः ॥१॥
यः पृथिवी व्यधमाना मदृंहद्यः पर्वतां प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
यो अंतरिक्षं विममेवरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जना स इंद्रः ॥२॥
यो हत्वाहिमरिणात्सुप्त सिंधून्योगा उदाजदष धावलस्य ।
यो अश्म नो रन्तरग्निं जजान सं वृक्समत्सु स जना स इंद्र ॥३॥
येने मा विश्वाच्यवना कृतानि योदा संवर्ण मधरङ्गुहाकः ।
श्वघ्नी वयोजिगीवाँ लक्षमाददुर्यः पुष्टानि स जना स इंद्रः ॥४॥
यस्मां पृच्छन्ति कुइसेति घोरयुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टिर्विज इवामिनाति श्रदस्मै धत्त स जना स इंद्रः ॥५॥
यो रंध्रस्य चोदितायः कृशस्य यो ब्रह्मणोना धवानस्य कीरेः ।
युक्त ग्राव्णोयोषिता सु शिप्रः सुतः सोमस्य स जना स इंद्रः ॥६॥
यस्या श्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामायस्य विश्वेरथा सः ।
यः सूर्य य उष सं जजानयो ऽपां नेता स जना स इंद्रः ॥७॥
यं क्रंदसी संयती विह्वये ते परेवर उभया अमित्राः ।
समानं चिद्रथ मातस्थिवां मानाना हवेते स जना स इंद्रः ॥८॥
यस्मान्ननऋते विजयन्ते जनासोयं युद्धयमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूवयो अच्युतच्युत् स जना स इंद्रः ॥९॥
यः शश्वतो मह्येनो दधाना न मन्यमानाञ्छर्वा जघान ।
य शर्धतेनानु ददाति शृध्यां यो दस्यो र्हता स जना स इंद्रः ॥१०॥
य शंबरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्व विदंत् ।
ओ जायमानं यो अहिं जघान दानुंशया न स जना स इंद्रः ॥११॥
यः सप्त रश्मिः वृषभस्तु विष्मान वा सृजत् सर्वते सप्त सिंधून् ।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहु र्द्यामारोहन्तं स जना स इंद्रः ॥१२॥
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।

यः सोमपा निचितो वज्र बाहुयो वज्र हस्तः स जना स इंद्रः ॥१३॥

यः सन्वन्तमवतियः पंचतंयः शं सन्तंयः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमो यस्येदंराधः स जना स इंद्रः ॥१४॥

यः सुन्वते पचते दुध्र आचिद्वाजं दर्दर्षि सकिलासि सत्यः ।
वयन्त इंद्र विश्वहा प्रियासः सुवीरा सो विदथ मा वदेम ॥१५॥

॥ सोमसूक्तम् ॥

ॐ त्वं सोम प्रचिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठ मनुनेषि पंथाम् ।
तव प्रणीती पितरो न इंदो देवेषु रत्नमभजन्तधीराः ॥१॥

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुः भूस्त्वं दक्षैः सदक्षो विश्ववेदाः ।
त्वं वृषा वृषत्वेभिः महित्वा द्युम्नेभिर्द्युंन्यभवो नृचक्षाः ॥२॥

राज्ञोनुते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरन्तव सोमधाम ।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षायो अर्यमेवासि सोम ॥३॥

याते धामानि दिविया पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्राजन्त्सोम प्रतिहव्या गृभाय ॥४॥

त्वं सोमासि सत्पति स्त्वंराजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असिक्रतुः ॥५॥

त्वं च सोम नो वशो जीवातुंनमरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ॥६॥

त्वं सोम महे भगं त्वं यू न ऋतायते । दक्षं दधासि जीवसे ॥७॥

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः । न रिष्येत्वावतः सखा ॥८॥

सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे । ताभिर्नोविताभव ॥९॥

इमं यज्ञ मिदं वचो जुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव ॥१०॥

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धया मो वचो विदः । सुमृडीको न अविश ॥११॥

गयस्फानो अमीवहा वसु वित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥१२॥

सोम रारंधि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्यइबस्व ओक्ये ॥१३॥

यः सोम सख्ये तव रारणद्देव मर्त्यः । तं दक्षः सचतेकविः ॥१४॥

ऊरुष्याणो अभिशस्तेः सोम निपाह्यं हसः । सखा सुशेव एधि नः ॥१५॥

आप्यायस्व स मतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् । भवा वजस्य संगथे ॥१६ ॥

आप्यायस्व मदिन्तम सोमविश्वेभिरंशुभिः । भवानः सुश्रव स्तमः सखावृधे ॥१७ ॥

सन्ते पयांसि समुयन्तु वाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व ॥१८ ॥

या ते धामानि हविषाय जान्तिताते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो वीरहा प्रचरा सोम दुर्यान् ॥१९ ॥

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमा वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ श्रवणं योददाश-दस्मै ॥२० ॥

अषाळ हं युत्सु पृतना सुपप्रिंस्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।
भरेषु जांसुक्षितिं सुश्रव सं जयन्तं त्वामनुमदेम सोम ॥२१ ॥

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वङ्गाः ।
त्वमात तन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषावि तमोववर्थ ॥२२ ॥

देवेन नो मनसा देव सोमरायो भागं सहसा वनभियुध्य ।
मा त्वात नदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्रचिकित्साग विष्टौ ॥२३ ॥

॥ रौद्रसूक्तम् ॥

(यजुर्वेदोक्त)

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षय द्वीराय प्रभरा महेमतीः ।
यथा शम सद्विपदेचतुष्पदे विश्वं पुष्टङ् ग्रामेअस्मिन्ननातुरम् ॥१ ॥

या ते रुद्र शिवातनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवारूतस्यभेषजी तयानो मृड जीवसे ॥२ ॥

परिणो रूदस्य हेति र्वृणक्तु परित्त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अवस्थिरा मघवभ्द्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥३ ॥

मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव । परमेवृक्ष
आयुधं निधाय कृतिंवसान आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥४ ॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्त सहस्त्र हेतयोन्यमस्मान्निव पन्तुताः ॥५ ॥

सहस्त्राणि सहस्त्र शो बाव्होस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखकृधि ॥६॥

॥ सौरसूक्तम् ॥

बिभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मद्धायुर्दधद्यज्ञ - पतावविंहुतम् ।
वातजूतोया अभिरक्षतिक्तमना प्रज्ञाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥१॥
उदुत्यञ्ञातवेद सं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥
येना पावक चक्षसा- भुरण्यन्तञ्जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥३॥
देव्या वध्वर्यू आगत ꣳ रथेन सूर्य त्वचा । मध्वा यज्ञँ समञ्जाथे ।
तं प्रत्कथायं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥४॥ आन इडाभि र्विदथे
सुशस्ति विश्वानरः सवितः देव एतु । अपियथा युवानो
मत्सथानो विश्वञ्जगदभि पित्वे मनीषा ॥५॥
यदद्यचकच्चात्रहवृन्नदगा अभिसूर्य । सर्वन्तदिन्द्रते वशे ॥६॥
तरणी र्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥७॥
तत्सूर्यस्य देवत्वन्तं महित्वं मद्धया कर्तो र्वितत सञ्जभार ।
यदेद युक्तहरितः सधस्था दाद्रात्री वासस्तनुतेसि मस्मै ॥८॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभि चक्षे सूर्योरूपङ्कृणुते द्यौरूपस्त्थे ।
अनन्त मन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरंति ॥९॥
बण्महाँ २ असि सूर्य बड़ादित्य महाँ २ असि ।
महस्ते सतोमहिमापनस्यतेद्धा देव महाँ २ असि ॥१०॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ २ असि सत्रादेव महाँ २ असि ।
मह्नादेवानाम सूर्यः पुरोहितो विभुज्योतिरदाभ्यम् ॥११॥
श्रायन्त ऽइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रतिभागन्नदीधिम ॥१२॥
अद्यादेवा उदिता सूर्यस्य निरꣳहसः पिपृतानिरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता-मादितिः सिन्धुः पृथिवीः उतद्योः ॥१३॥

आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशन्नमृतं मर्त्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१४॥

॥ रक्षोघ्नसूक्तम् ॥

ॐ कृणुष्वपाज: प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ २ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिंदूणानोऽस्तासि विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठै: ॥१॥
तव भ्रभास आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचान: ।
त पूंष्यग्ने जुह्वा पतगङ्गान संदितो विसृज विश्वगुल्का: ॥२॥
प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवापायुर्विशो अस्या अदब्ध: ।
यो नो दूरे अघशं सो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥
उदग्नेतिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्य मित्राँ ओषता त्तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तंधक्ष्यत संनशुष्कम् ॥४॥
उर्ध्वो भवप्रति विद्ध्याद्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥

॥इति रक्षोघसूक्तम् ॥

॥ भद्रसूक्तम् ॥

ॐ आनोभद्द्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिद:।
देवानोयथासद्मिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥
देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ॅं रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवानाॅं
सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयु: प्रतिरन्तुजीवसे ॥२॥
तान्नपूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्ष मस्रिधम् ।
अर्य्यमणंवरुण ठ सोममश्शिवना सरस्वतीन: सुभगामयस्करत् ॥३॥
तन्नोव्वातोमयोभुवातु भेषजन्तमातापृथिवी तत्पितादद्यौ: ।
तद्दग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्शिवना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥४॥
तमीशानञ्जगतस्तस्त्थुष स्प्पतिन्धिया—ञ्जिजन्वमवसे हूमहेव्वयम ।

पूषानो यथाव्वेदसा मसद्द्‌दव्वृधे रक्षिता पायुरदब्धय: स्वसतये ।।५।।
स्वति न इन्द्रोव्वृद्धश्रवा: स्वति न: पूषाव्विश्ववेदा: ।
स्वतिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमि: स्वति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु ।।१।।
पृषदश्श्वामरुत: पृश्निमातर: शुभं यावानो व्विदथेषु जग्गमय: ।
अग्निर्जिह्वामनव: सूरचक्षसो व्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ।।२।।
भद्द्रङ्कर्ण्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्द्रम्पश्ये—माक्षभिर्य्यजत्रा: ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवा ठं सस्तनू—र्भिर्व्व्यशेमहि देवहितँ य्यदायु: ।।३।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्च्चक्क्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्त्रासो यत्रपितरो भवन्ति मानो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तो: ।।४।।
अदितिद्द्यौरदितिरंतरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्र: ।
विश्वेदेवाऽअदिति: पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्जनित्त्वम्।।५।।
द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ठं शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरौषधय: शान्ति:।
व्वनस्प्पतय: शान्तिर्व्विश्वेदेवा: शान्तिब्ब्रह्मशान्ति: सर्व्व ठं शान्ति:
शान्तिरेवशान्ति: सा मा शान्तिरेधि ।।६।। यतोयत: समीहसे
ततोनोऽअभयंकुरु। शन्न:कुरुप्प्रजाब्भ्यो ऽभयन्न: पशुभ्य: ।।७।।
सुशान्तिर्भवतु।।

॥ पितरादि बाह्यशान्ति स्तोत्रम् ॥

(पितर शान्ति, देवदोष शमन, इष्टसिद्धि हेतु)

इस सूक्त का पाठ करने से मनोवांछित कार्यो में सफलता प्राप्त होती है। घर-परिवार में सुख शान्ति रहती है। मनोकामना पूर्ण होती है। पितर प्रसन्न होते है उन्हें शान्ति मिलती है। यह दुर्लभ स्तोत्र है। इससे अन्य देवदोष भी शान्त होकर इष्ट सिद्धि होती है।

सूक्त पाठ करने की विधि:—

(१) उक्त सूक्त के २४ श्लोकों में से २२ वें, २३ वें, २४ वें श्लोक का पाठ दो बार करें। अर्थात् पहले १ से २४ श्लोक तक पाठ कर लेवें तदुपरान्त २२-२३-२४

श्लोकों का पाठ दो बार करें। इस प्रकार २२-२३-२४ श्लोकों का पाठ तीन बार होगा। तब इस पितृ सूक्त का पाठ पूर्ण होगा। (२) श्लोक २२-२३-२४ के पाठ में अधिक ध्यान देवें। (३) काले तिल व शुद्ध घी से हवन करें। हवन में भी २२-२३-२४ श्लोक से तीन-तीन आहुतियाँ दी जावेगी। (४) १, १२, २३, २४ श्लोक में स्वाहा की जगह होम समय स्वधा कहें। (५) दक्षिण दिशा की और मुख करके ही पाठ एवं हवन करें। (६) केवल एक आवृति पाठ और एक ही आवृति से हवन करें। (७) नित्य पाठ एवं हवन आवश्यक है।

नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योन तस्मै।
नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः ॥१॥
नमोऽस्तु ते निर्ऋत्तु, तिग्मतेजोऽयस्यमयान विचृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति। तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥२॥
नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देवजनेभ्यः ॥३॥
नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने ॥४॥
नमस्ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः।
सु-मत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः ॥५॥
नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं मम ॥६॥
नमो देववद्येभ्यो, नमो राज-वद्येभ्यः।
अथो ये विश्वानां वद्यास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ॥७॥
नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा।
कसमासां भीमतमा याम दत्वा पराभवेत् ॥८॥
नमस्तेऽस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्तेऽस्तु वश्मने येना दूड़ाशे अस्यसि ॥९॥
नमस्तेऽस्त्वायते नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥१०॥
नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते रुद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥११॥

नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः।
वालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नमः ॥१२॥
नमस्ते प्राणक्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते प्राणविद्युते नमस्ते प्राणवर्षते ॥१३॥
नमस्ते प्राण-प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते।
परा चीनाय ते नमः, प्रतीचीनाय ते नमः, सर्वस्मै न इदं नमः ॥१४॥
नमस्ते राजन्! वरुणास्तु मन्यवे विश्व ह्यग्र निचिकेषि दुग्धम्।
सहस्त्रमन्यान् प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरदस्तवायं ॥१५॥
नमस्ते रुद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्यमानायै, नमो निपतितायै ॥१६॥
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नमः ईषायुगेभ्यः।
वीरुत् क्षेत्रिय-नाशन्यप क्षैत्रियमुच्छतु ॥१७॥
नमो गंधर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः।
विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि ॥१८॥
नमो यमाय, नमोऽस्तु मृत्यवे, नमः पितृभ्य उतये नयन्ति।
उत्पारणस्य यो वेद, तमग्नि पुरो दद्येऽस्याः अरिष्टतातये ॥१९॥
नमो रुद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरुणायं त्विणीमते।
नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः ओषधीभ्यः ॥२०॥
नमो रुराय च्यवनाय रोदनाय, घृष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने ॥२१॥
नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय ॥२२॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धवे ॥२३॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्रूरं तस्मै ॥२४॥

श्रीविद्या उपासना रहस्य मूल्य ५००/-

प्रस्तुत पुस्तक में बाला एवं ललितात्रिपुरसुन्दरी की क्रमबद्ध उपासना पद्धति, त्रिपुरसुन्दरी के सैंकडों मन्त्र, यन्त्रार्चन, कई प्रकार के स्तोत्र, सहस्रनाम पाठ सरल व सुबोध तरीके से इस पुस्तक में दिये गये हैं, जो प्रचलित उच्चकोटी की पुस्तकों में नहीं है।

बिना तोड फोड के वास्तुदोष का निवारण

"भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल"

लाल किताब के सिद्धान्तों के आधार पर वास्तु दोष का शमन

(1) नूतन मकान कुण्डली सिद्धान्त । (2) वास्तु के समस्त नियमों की उत्पत्ति ज्योतिष से (3) **50 प्रतिशत भाग्य एवं 50 प्रतिशत वास्तुफल होता है।** (4) मकान के पर्दे, कांच का रंग व चित्र, खिलौनों से दोष का निवारण। (5) नींव रखने की पंचशिला व नवशिला स्थापन विधि (6) **पिरामिड़ के निर्माण, फेंगशुई सिद्धान्त की जानकारियाँ मूल्य 200/-**

सांगोपांग वैवाहिक पद्धति मूल्य ७०/-

गुण मेलापक एवं कुण्डली मिलान विधि. विभिन्न समाजों की प्रथायें, रीति रिवाज. विवाहकर्म पद्धति, वैधव्य योग परिहार हेतु – कुंभविवाह, विष्णुविवाह, पिप्पल विवाह. विदुर योग निवारण हेतु – अर्कविवाह. गृहप्रवेशनीय होम (चतुर्थी कर्म). तुलसीविवाह, पीपलविवाह पद्धति. अशौच निवारण व रजोदोष शान्ति. ★ शीघ्र विवाह के उपाय ★ पुनर्विवाह – वर का दूसरा, वर का प्रथम व वधू का पुनर्विवाह वर वधू दोनों का पुनर्विवाह.

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी मूल्य १००/-

सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ (मृत्युञ्जय प्रयोग सहितम्)

रंगीन मुद्रण में तथा सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ की पुस्तक

(1) सस्वर पाठ के चित्र छापकर क्रिया को सरल किया गया है। (2) स्वर दीर्घ, ह्रस्व, दक्षिण वाम होगा, उच्चारण काल लघु या दीर्घ होगा इसे विभिन्न रंगों में छापा गया है। (3) रंग भेद से स्वर का विभाग समझाया गया है। (4) सभी मंत्रों के ऋषिछंद व देवता भी अलग से दिये गये है।

कालसर्प एवं शाप दोष शांति

राहु केतु, शांति स्तोत्र, कवच, १०८ नामावलि,। नाग अष्टोत्तर नामावली– नागमण्डल पूजा। कालसर्पनाशाक तंत्रोक्त त्वरिता देवी, मनसादेवी, गरुड मंत्र प्रयोग। पितर सूक्त–स्तोत्र, कालसर्प यंत्र पूजा एवं विसर्जन प्रयोग विधि सहित। मूल्य २२०/-

बगलामुखी उपासना रहस्य

शत्रुस्तंभन एवं बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी बगलामुखी की साधना शक्ति उपासकों में प्रचलित है। बगलामुखी की क्रमबद्ध उपासना पद्धति, सैंकडों मन्त्र, यन्त्रार्चन, कई प्रकार के स्तोत्र, सहस्त्राम पाठ सरल व सुबोध तरीके से इस पुस्तक में दिये गये हैं। प्रचलित ग्रंथों से सर्वाधिक संकलन व सरल रूप में दिये गये हैं।

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (१) 'पूजा-प्रतिष्ठा'

(1) समस्त भद्रमंडल रंगीन, आवाहित स्थानसहित। (2) सर्वदेवपूजा एवं मूर्तिप्रतिष्ठा का स्पष्टीकरण। (3) दशविधस्नान, पापघटदान, हेमाद्रिस्नानादि संकल्प विधि।(4) नामावलि, तथा वेदोक्तमंत्रों से पूजाविधान (5) तीनवेदी स्नान की प्रतिष्ठाविधि। (6) मण्डपविधान, कुण्डनिर्माण विधि सरल क्रिया में है। (7) पंचकुण्डी, नवकुण्डी संपूर्ण यज्ञविधि दी गई है। (9) चल, अचल मूर्ति प्रतिष्ठा एवं जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाविधि पूर्ण रूपेण। **मूल्य २७०/-**

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (२) 'देवखण्ड'

'तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य'

देवखण्ड में गणेश, हनुमान, विष्णु, शिव, भैरव, रुद्रादि देवों के विविधप्रयोग दिये हैं। मृत्युञ्जय प्रयोग, शरभ शालुव पक्षिराज, आशुगरुड़ प्रयोग, गंधर्वराज, कार्त्तवीर्यअर्जुन, परशुरामादि के विविध प्रयोग है। वांछाकल्पलता प्रयोग एवं अन्य कई प्रयोगों का वर्णन किया गया है। **मूल्य २८०/-**

सर्वकर्म-अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३) 'देवीखण्ड पूर्वार्द्ध'

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय पद्धति द्वारा नवरात्र विधान। नवदुर्गाओं के प्रयोग। गायत्री पुरश्चरण, काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, मातंगी, धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्त्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन। **मूल्य ५५०/-**

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४) 'देवीखण्ड उत्तरार्ध

उपमहाविद्या रहस्य - प्रथम भाग

सभी देवियों की मातृकायें,त्रिपुरसुन्दरी 'की १५ नित्याओं का अर्चन, नवदुर्गा, ब्राह्मयादि अष्टमातृका, कौशिकी, अंबिका, शिवदूति गायत्रीब्रह्मास्त्र, श्यामा, बगला, प्रत्यङ्गिरा, गुह्यकाली प्रयोग, वाराही आदि देवियों के प्रयोग दिये गये हैं। **मूल्य ५००/-**

सर्वं० अनु० प्रकाशः भाग (६) सिद्धविद्या रहस्य

कालिक्रम की १५ नित्याओं के प्रयोग, कामकला काली, महामाया वैष्णवी, भद्रा, स्वाहा, स्वधा, षष्ठीदेवी, मंगलचण्डी विधान, पार्श्वनाथ, पद्मावति, पञ्चांगुलि, ज्वाला मालिनि गंगादि देवियों प्रयोग, ज्वालादेवी, सारिका महाराज्ञि यन्त्रार्चन, कवच, सहस्त्रनाम, शब्दकोष, व अनेकानेक प्रयोग दिये गये हैं। **मूल्य ५००/-**

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (५)' तन्त्र सिद्धि रहस्य '

कर्णपिशाचिनि, यक्षिणि, किन्नरी, पञ्चांगुली, घण्टाकर्ण आदि के प्रयोग। सरल बांग्ला-हिन्दी भाषी उग्र शाबर मन्त्र प्रयोग। हिन्दी भाषी विविध शाबर मन्त्र प्रयोग। जैन धर्मोक्त विधान व वस्तु एवं वनस्पति तन्त्र विज्ञान युक्त। **मूल्य ३२०/-**

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (७) ' लघुविद्या रहस्य '

महाविद्या की अंगविद्याओं का वर्णन, गणेश, विष्णु, सुदर्शन, हनुमान, भैरवादि, पार्श्वनाथ, पद्मावती के विभिन्न प्रयोग, श्रीविद्या व बगलामुखी, गायत्री कवच तथा मन्त्रवर्णात्मक सहस्त्रनामादि।

ब्रह्मकर्म सपर्या **मूल्य ३००/-**

नित्य संध्या प्रयोग, तर्पण प्रयोग, भूत शुद्धि मातृकादि प्रयोग, सरल रुद्राभिषेक प्रयोग। नवरात्र विधान व चण्डी प्रयोग। सर्वतोभद्र, लिङ्गतोभद्रादि पूजन। ग्रह शांति, गृह प्रवेश विधि, षोडश संस्कार, विवाह पद्धति, मूलादिगण्ड शांति एवं कुंभविवाह, अर्कविवाह पद्धति, महालय चटश्राद्धादि सभी कर्म सविधि बताये गये है।

गायत्री उपासना रहस्य

गायत्री के आवश्यक न्यास प्रयोग, मुद्रायें, त्रिकालसंध्या पूंजन विधान, तर्पण प्रयोग, राजोपचार पूजा (८४ उपचार)। विविध स्तोत्र, कवच तथा मन्त्रवर्णात्मक सहस्त्रनामादि सहित कई प्रयोग एवं विद्याओं का वर्णन।

साधक का सत्य

पुस्तक में लेखक की 40 वर्ष की साधना के नीजि अनुभव द्वारा कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ। षट्चक्रों का वर्णन। मन्त्र साधना द्वारा षट्चक्र भेदने की विधियाँ। मन्त्र साधना द्वारा ध्यान, धारणा, समाधि, नादसाधना। ध्यान लगाते समय होने वाली समस्याओं का आनुभविक निराकरण। **मूल्य १५०/-**

वैदिक पूजन के मन्त्र (दण्डक)

दैनिक पूजन के वैदिक मन्त्रों की कुञ्जिका जिससे कर्मकाण्डी विद्वान सभी कार्य सुगमता से करा सकते हैं। **मूल्य - २५/-**

लेखक :

पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

विशेषज्ञ :

ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड

(डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)